लेखक की अन्य कृतियाँ

कर्तव्य

हर्ष

प्रकाश

सिद्धान्त स्वातन्त्र्य

स्पर्द्धा

नाट्य कला मीमासा

सप्त-रश्मि

[सात एकांकी नाटकों का एक संग्रह]

लेखक

गोविन्ददास

किताबिस्तान
इलाहाबाद

प्राक्कथन

प्राचीन काल में एकांकी

पूर्व में जहाँ सबने पहले नाटक का विकास हुआ उस भारतीय साहित्य और रंगमंच के लिये एकांकी नाटक कोई नई चीज़ नहीं है। संस्कृत के साहित्यज्ञों ने रूपक के दो भेद किये थे—एक रूपक और दूसरा उपरूपक। रूपक के दस और उपरूपक के अठारह भेद किये गये थे। रूपक के दस भेदों में निम्नलिखित तीन भेद एकांकी नाटक के थे—

(१) व्यायोग, (२) अंक, (३) वीथी।

व्यायोग में वीररस की प्रधानता रहती थी। उसमें स्त्री पात्र या तो बिलकुल नहीं रहते थे या बहुत कम। इस नाटक का एक अंक होता था। एक विचार (आइडिया) पर सारा कार्य चलता था और नाटक की सारी घटना का समय भी एक ही दिन होता था।

अंक में करुणरस प्रधान होता था। इसमें प्रायः स्त्रियों के शोक का वर्णन रहता था। इसमें भी एक ही अंक होता था, एक ही विचार पर नाटक की सृष्टि होती थी और घटना का समय भी एक ही दिन रहता था।

वीथी शृंगार रस प्रधान रहता था। यह भी एकाकी होता था और एक ही विचार का विकास होकर नाटक की सारी घटनाएँ एक ही दिन में समाप्त हो जाती थी।

उपरूपको के अठारह भेदो में से निम्नलिखित दस भेद एकाकी नाटक के थे—

(१) गोष्ठी, (२) नाट्य रासक, (३) उल्लाप्य, (४) काव्य, (५) रासक, (६) प्रेंखण, (७) श्री गादित, (८) विलासिका या विनायका, (९) हल्लीश और (१०) भाणिका।

प्राचीन सस्कृत साहित्य में एकाकी यथेष्ट सख्या मे मिलते है। कुछ प्रसिद्ध नाम यहाँ दिये जाते है—'सौगन्धिका हरण' (व्यायोग), 'सर्मिष्ठा ययाति' (अक), 'रैवत मदनिका' (गोष्ठी), 'विलासवती' (नाट्य रासक), 'देवी महादेव' (उल्लाप्य), 'मेनिकाहित' (रासक), 'वालिवध' (प्रेंखण), 'क्रीडा रसातल' (श्री गादित), 'विन्दुमती' (विलासिका), 'केलिरैवतक' (हल्लीश), 'कामदत्ता' (भाणिका)।

पश्चिम में नाटक का सबसे पहले यूनान में विकास हुआ था। यूनान में नाटको का विश्लेषण उस वारीकी से नही किया गया था जैसा भारतीय साहित्य में। अरस्तू ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ—'पोइटिक्स' में नाटक के दो भेद किये थे—'ट्रेजिडी' और 'कामेडी' अर्थात् वियोगान्त और सयोगान्त नाटक। यूनान के सर्व प्रथम प्रधान नाटककार

एसचीलस के नाटको को हम देखें तो जान पडता है कि उसके सभी नाटक एकाकी है। एसचीलस के वाद सोफो क्लीज़ के नाटक भी एकाकी ही कहे जा सकते है। वात यह है कि यूनान के नाटको की रचना 'सकलनत्रय' या 'समक' (यूनिटीज़) की चहारदीवारी के अन्दर होती थी अर्थात् वहाँ के साहित्यज्ञो ने यह नियम वनाया था कि आरभ से अन्त तक सारे नाटक की रचना इस प्रकार होना चाहिए जिससे यह जान पडे कि वह नाटक किसी एक ही स्थान पर हो रहा है, उसकी अवधि भी एक ही दिन की घटना तक परिमित है और वह एक ही कृत्य के सबध मे है। इसे साहित्यज्ञो ने 'सकलनत्रय' या 'समक' (यूनिटीज़) नाम दिया था। फिर वहाँ के नाटको में भारतीय नाटको के सदृश्य अक तथा विष्कभक, प्रवेशक आदि विभाजन भी न थे। अत अको मे विभाजित न किये हुए तथा सकलनत्रय से वँधे हुए नाटक को, चाहे वह वडा हो या छोटा, एकाकी नाटक ही कहा जा सकता है।

एकांकियों का अर्वाचीन विकास

अर्वाचीन एकाकी नाटको का विकास पश्चिम में आरभ हुआ। पहले इन्हें 'कर्टन राइज़र' कहते थे। पूरे नाटक के आरभ मे एक छोटा सा एकाकी नाटक खेला जाता था। प्राय यह हास्यरस का होता था। इसका मिलान हमारे

यहाँ की पारसी कपनियाँ अपने पूरे नाटक के अन्त में जो 'नकल' नाम से हास्यरस के छोटे छोटे नाटक खेलती थी, उनसे किया जा सकता है। पश्चिम में एकाकी नाटक का सच्चा विकास गत योरपीय महायुद्ध के बाद सन् १९१८ से हुआ। ग्रेट ब्रिटेन में इस विकास का सच्चा आरभ सन् १९२४ में मि० जे० एस० मैरियट ने किया। उसने अमैच्योर नाट्य जगत के विकास के लिये जो कुछ किया वह वहाँ के आधुनिक एकाकी नाटको के विकास और प्रचार की नीव थी। फिर तो धीरे धीरे वहाँ एकाकी नाटको की रचना और प्रचार की बाढ सी आ गई। वर्तमान युद्ध के कुछ समय पहले मैने पढा था कि ब्रिटिश ड्रामा लीग ने नाटको की एक होड (कापिटीशन) कराई थी। इस एक होड में वहाँ की ६०० मडलियो ने भाग लिया था और इनमें से अधिकाश ने एकाकी नाटक खेले थे। पश्चिम में एकाकी नाटको पर छोटे छोटे सिनेमा-फिल्म भी बनाये जाने लगे है, जो पूरे फिल्म के पहले दिखाये जाते है।

वहाँ के एकाकी नाटको के तीन भेद किये गये है— 'वन ऐक्ट प्ले', 'स्कैच' और 'रेडियो ड्रामा'। तीनो में बहुत थोडा अन्तर है और तीनो की लेखनशैली (टैकनीक) प्राय एक ही सी है।

पराधीनता के कारण हम तो हर बात में पश्चिम के पीछे चलते है। पश्चिम का अनुकरण कर हमारे देश में भी

एकाकी नाटको की रचना हो रही है। बगाली, मराठी, गुजराती और हिन्दी सभी भाषाओ में इस समय एकाकी नाटक लिखे जा रहे हैं।

इस विकास के कारण

इस समय ससार मे सभी जगह एकाकी नाटकों की इस भरमार के दो प्रधान कारण है—(१) जनता को अन्य कामो के कारण मनोरजन के लिये बहुत कम अवकाश है। इसीसे अमेरिका में एकाकी नाटक बहुत प्रिय हैं। (२) रेडियो का प्रचार बहुत बढ गया है और बढ रहा है। रेडियो के लिये एकाकी नाटक बहुत उपयोगी सिद्ध हुए है।

एकांकी की लेखन पद्धति (टैकनीक)

उपन्यास और कहानी की लेखन पद्धति (टैकनीक) में जो अन्तर है वही फर्क पूरे नाटक और एकाकी की लेखन पद्धति में है।

पूरे नाटक के लिये 'सकलनत्रय', जो नाटयकला के विकास की दृष्टि से बडा भारी अवरोध है, वही 'सकलनत्रय' कुछ फेर फार के साथ एकाकी नाटक के लिये जरूरी चीज़ है। 'सकलनत्रय' मे 'सकलनद्वय' अर्थात् नाटक एक ही समय की घटना तक परिमित रहना तथा एक ही कृत्य के सबध में होना तो एकाकी नाटक के लिये अनिवार्य है। जो यह

समझते है कि पूरे नाटक और एकाकी नाटक का भेद केवल उसकी बडाई छुटाई है, मेरी दृष्टि से वे भूल करते है। एकाकी नाटक छोटे ही हो, यह जरूरी नही है, वे बडे भी हो सकते हैं। वडे एकाकी का चाहे रेडियो मे या उसी प्रकार के थोडे समय के दूसरे आयोजनो मे उपयोग न हो सके, किन्तु बडे होने पर भी वह एकाकी हो सकता है। एकाकी नाटक मे एक से अधिक दृश्य भी हो सकते है, पर यह नही हो सकता कि एक दृश्य आज की घटना का हो, दूसरा पन्द्रह दिनो के वाद की घटना का, तीसरा कुछ महीनो के पश्चात् का और चौथा कुछ वर्षों के अनन्तर। यदि किसी एकाकी मे एक से अधिक दृश्य होते है तो वे उसी समय की लगातार होने वाली घटनाओ के सवन्ध मे हो सकते है। 'स्थल सकलन' जरूरी नही है, पर 'काल सकलन' होना ही चाहिए। किसी किसी एकाकी नाटक के लिये भी 'काल सकलन' अवरोध हो सकता है। ऐसी अवस्था मे 'उपक्रम' या 'उपसहार' की योजना होनी चाहिए। इस सग्रह में सग्रहीत नाटको में से कुछ मे मैंने 'उपक्रम' और 'उपसहार' दोनो का, तथा किसी में एक का उपयोग किया है। 'उपक्रम' और 'उपसहार' का उपयोग सिर्फ 'काल सकलन' के अवरोध से वचने के लिये ही नही है। कभी कभी 'काल सकलन' रहते हुए भी इनका उपयोग हो सकता है जैसा मैंने 'अधिकार लिप्सा' में किया है। मेरे मत से इस प्रकार के उपयोग से भी नाटक का

सौंदर्य बढ जाता है, पर इस प्रकार का उपयोग अनिवार्य नही। 'काल सकलन' को तोडकर यदि अधिक दृश्य रखना आवश्यक हो तो मेरा मत है कि 'उपक्रम' और 'उपसहार' अनिवार्य है। 'उपक्रम' और 'उपसहार' का उपयोग नाटक के आरभ या अन्त में ही हो सकता है, अत बीच के दृश्यो में तो मेरे मतानुसार एकाकी में 'काल सकलन' रहना ही चाहिए। जो एकाकी रगमच पर खेले जावे उनमें दर्शको को 'उपक्रम' या 'उपसहार' की जानकारी हो जाय इसलिये यवनिका उठते ही एक दूसरे पर्दे पर 'उपक्रम' या 'उपसहार' का लिख देना आवश्यक है और यवनिका के उठने के बाद यह परदा भी उठा दिया जाय। रेडियो में 'उपक्रम' या 'उपसहार' की सूचना शब्दो में दी जा सकती है। आरभ में यह प्रथा कुछ विलक्षण सी जान पडेगी, परन्तु धीरे धीरे आँखें और कान इसके लिये अभ्यस्त हो जायेंगे। जिस प्रकार यवनिका गिरते समय हम यह जान जाते हैं कि नाटक का अक समाप्त हो रहा है और दूसरे अक में सभव है हम कुछ महीनों या कुछ वर्षों के बाद की घटना देखें उसी प्रकार 'उपक्रम' या 'उपसहार' पढते या सुनते ही हमे मालूम हो जायगा कि नाटक की मुख्य घटना और उसके बीच शायद कुछ काल, चाहे वह दिन, महीने या वर्ष हो, बीतने वाला है या बीत गया है। जिन एकाकी नाटको के सिनेमा-फिल्म बनें उनमें तो 'उपक्रम' और 'उपसहार' सहज

में लिखा जा सकता है, क्योकि फिल्मो में तो अक्षरो में लिखी हुई चीज़ को पढने के लिये हमारी आँखें अभ्यस्त हो गई है। मैंने अब तक 'उपक्रम' और 'उपसहार' का इस प्रकार का उपयोग पश्चिमी या भारतीय नाटको में नही देखा। किसी नाटक को पढते समय 'उपक्रम' और 'उपसहार' खटक भी नही सकते। खेलने के समय इनका उपयोग एक विवाद ग्रस्त प्रश्न हो सकता है, परन्तु मेरे मत से खेलते समय भी उपर्युक्त पद्धति से इनका उपयोग किया जा सकता है। मैं जानता हूँ कि यह विषय विवाद ग्रस्त है, परन्तु बहुत कुछ सोचने विचारने के बाद मैंने इसे विद्वानो के सम्मुख रखने का साहस किया है। 'काल सकलन' को एकाकी के लिए अनिवार्य मानने के कारण तथा वह एकाकी कला के विकास के लिए अवरोध भी न हो, इसलिए मै इस उपाय को विद्वानो के सम्मुख रख रहा हूँ। अपने एक पूरे नाटक 'प्रकाश' में भी मैंने 'उपक्रम' और 'उपसहार' का उपयोग किया था। उस उपयोग पर अनेक साहित्यज्ञो से मुझे बधाइयाँ मिली थी, परन्तु वह उपयोग 'सामजस्य' या 'सादृश्य' (सिबालिज़्म) के लिए किया गया था। उस उपयोग में और इस सग्रह के एकाकी नाटको में 'उपक्रम' और 'उपसहार' का जो उपयोग हुआ है, उसमें बहुत अन्तर है। मै 'उपक्रम' और 'उपसहार' का उपयोग अपने एकाकियो में सफलता पूर्वक कर सका हूँ या नही इसपर कुछ भी कहने का मुझे कोई अधिकार नही है।

इस प्रकार के 'सकलनद्वय' की चहारदीवारी से घिरे हुए एकाकी नाटक मे कुछ अन्य बातो पर भी ध्यान रखने की आवश्यकता है।

एक ही 'विचार' (आइडिया) पर एकाकी नाटक की रचना हो सकती है। विचार के विकास के लिये जो 'सघर्ष' (कॉनफ्लिक्ट) अनिवार्य है, उस सघर्ष के पूरे नाटक में कई पहलू दिखाये जा सकते है, पर एकाकी मे सिर्फ एक पहलू। इस विचार और सघर्ष की सवद्धता और मनोरजकता के लिए जिस 'कथा' की सृष्टि होती है उस कथा के भी पूरे नाटक में अनेक पहलू प्रदर्शित किये जा सकते है, यहाँ तक कि उप-कथाओ के द्वारा, जिन्हे नाट्य शास्त्र में 'पताका' और 'प्रकरी' कहते है, मुख्य कथा को सहायता दी जा सकती है, परन्तु एकाकी में कथा के एक ही पहलू को लिया जा सकता है, उपकथाओ 'पताका' और 'प्रकरी' का एकाकी में उपयोग नही किया जा सकता। कथा विना पात्रो के नही हो सकती अत पात्रो का प्रादुर्भाव और उनका चरित्र चित्रण होता है। पूरे नाटक मे भी जितने कम चरित्र होगे उतना ही स्पष्ट और विशद चरित्र चित्रण होगा। हाँ, पूरे नाटक में कुछ गौण पात्र मुख्य पात्रो के चरित्र चित्रण में सहायक अवश्य हो सकते है। एकाकी मे तो मुख्य और गौण दोनो ही पात्रो की सख्या वहुत ही परिमित रहनी चाहिए। चूँकि नाटक की कथा लेखक के द्वारा नही कही जा सकती इसलिये पात्रो की

कृति और कथोपकथन ही उस कथा के कथन के साधन है। कथोपकथन को जितना महत्त्व पूरे नाटक मे है उतना ही एकाकी मे भी।

जिस एकाकी मे जितना वडा विचार होगा, उस विचार के विकास के लिये जितना स्पष्ट और तीव्र सघर्ष होगा, इस विचार और सघर्ष के लिये जितनी स्पष्ट और मनोरजक कथा होगी, जितने कम चरित्र और उन चरित्रो का जितना स्पष्ट और विशद चरित्र चित्रण होगा तथा जितनी स्वाभाविक कृति एव कथोपकथन होगे वह उतना ही सफल होगा।

रेडियो ड्रामा लिखते समय एक वात पर और ध्यान रखना आवश्यक है। रेडियो ड्रामा सिर्फ कान के लिए है, कम से कम तव तक जव तक टैलीविजन का व्यापक उपयोग नही हो जाता। इसलिए खयाल रखना चाहिए कि सुनने का जो प्रभाव हृदय पर पडता है वही उसमें मुख्य चीज है।

एकाकी नाटक के लिए जिन अन्य वातो पर ध्यान रखना जरूरी है वे सव प्राय वे ही है जिन पर पूरे नाटक लिखते समय ध्यान रखना आवश्यक है। इनका कुछ विवेचन मैंने अपने 'तीन नाटक' के प्राक्कथन मे किया था। यह प्राक्कथन 'नाटचकला मीमासा' के नाम से पृथक् पुस्तिका के रूप में भी छपा है। इन वातो में सवसे प्रधान वात है—

स्वाभाविकता। नाटक के प्रदर्शन के कारण उसमें थोडी सी अस्वाभाविकता भी अक्षम्य है। 'अश्राव्य' (सॉलीलॉकी) और 'नियतश्राव्य' (एसाइड) दोनो प्रकार के स्वगत कथनो को एकाकी में कोई स्थान नही मिल सकता। पद्य, कविता और नृत्य की भरमार भी एकाकी में नही की जा सकती। इसका यह मतलब नही है कि पद्य, कविता या नृत्य का एकाकी में स्थान ही नही है। पूरे नाटक के सदृश एकाकी में भी ये कही स्वाभाविक रीति से आ सकते हो तो रखे जा सकते है, यद्यपि इस सग्रह के एक भी नाटक में पद्य, कविता या नृत्य को स्थान नही मिल सका है। एकाकी को सर्वथा स्वाभाविक बनाने का हरेक प्रयत्न होना आवश्यक है।

श्रेष्ठ एकांकी किसे कह सकते हैं ?

कौन कलाजन्य वस्तु श्रेष्ठ कही जा सकती है, इस सबन्ध में मैंने अपने 'तीन नाटक' के प्राक्कथन मे कुछ विवेचन किया था। इस विषय में उस समय मेरा जैसा मत था, वैसा ही आज भी है। जो कसौटी अन्य कलाजन्य वस्तु की हो सकती है वही एकाकी नाटक की भी। इस कसौटी का दिग्दर्शन मैंने इग्लैण्ड के एक प्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता जॉन रास्किन के एक कथन को उद्धृत कर किया था। चूंकि इस सबन्ध मे उस दिन के और आज के मेरे मत में कोई परिवर्तन नही

हुआ है, इसलिए उसी कथन को मैं आज यहाँ भी उद्धृत करता हूँ। मेरा मत है कि जो एकाकी नाटक इस परिभाषा की कसौटी पर कसने से खरा उतरता है वही श्रेष्ठ एकाकी है। जॉन रास्किन लिखते है —

"अब मैं उत्तम कलाजन्य वस्तु की व्याख्या इतने व्यापक रूप से करना चाहता हूँ कि उसके अन्तर्गत उसके समस्त विभाग और उद्देश आ जावें। इसीलिए मैं यह नही कहता कि वही कलाजन्य वस्तु सर्वोत्तम है जो सबसे अधिक आनन्द देवे, क्योकि किसी वस्तु का उद्देश कदाचित् शिक्षा देना हो और आनन्द देना न हो। मै यह भी नही कहता कि कलाजन्य वही वस्तु सर्वश्रेष्ठ है जो सबसे अधिक शिक्षा देवे, क्योकि किसी वस्तु का उद्देश कदाचित् आनन्द देना ही हो और शिक्षा देना न हो। मै यह भी नहीं कहना चाहता कि कलाजन्य वही वस्तु सबसे अच्छी है जिसमें सबसे अधिक अनुकरण किया गया हो, क्योकि कदाचित् कोई वस्तु ऐसी हो जिसका उद्देश नवीनता का निर्माण करना हो और अनुकरण करना न हो। और मै यह भी न कहूँगा कि कलाजन्य वही वस्तु सर्वोत्कृष्ट है जिसमें सबसे अधिक नवीनता हो, क्योकि कदाचित् कोई वस्तु ऐसी हो जिसका उद्देश अनुकरण करना हो और नवीनता का निर्माण नही। मै तो उस वस्तु को कला की सबसे महान् वस्तु मानता हूँ जो किसी

भी मार्ग-द्वारा हृदय में सबसे अधिक और सबसे महान् विचारों को उत्पन्न कर सके।"

जबलपुर
तिलक-जयन्ती
१ अगस्त, १९४०

गोविन्ददास

सूची

धोखेबाज़

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र—

(१) दानमल—एक व्यापारी
(२) रूपचन्द—दानमल का मुनीम
(३) कैलाशचन्द्र—एक खान वाला
(४) नीलरतन—एक राइस मिल वाला
(५) मुमताजुद्दीन—एक मकान वाला
(६) लखमीदास } दानमल के मित्र
(७) कालीचरण }

स्थान—कलकत्ता

धोखेबाज़

पहला दृश्य

स्थान—दानमल का आफिस

समय—प्रात काल

[तीनों तरफ लकडी के पार्टीशन की दीवालें हैं जिनमें ऊपर की तरफ कांच लगे हैं। पीछे की दीवाल में कोई दरवाजा नहीं है। आसपास की दीवालो के सिरो पर एक एक छोटा सा एक पल्ले का दरवाजा है जो वन्द है। इन दरवाजों में भी ऊपर की तरफ कांच लगे हैं। कमरे के बीच में एक उसी तरह की पार्टीशन की दीवाल और है जिससे एक कमरे के यथार्थ में दो कमरे हो गये हैं। दोनो कमरो के बीच की पार्टीशन की दीवाल के बीच में भी एक दरवाजा है। यह भी वन्द है। दोनो कमरो के बीचो बीच एक एक बडी आफिस टेबिल रखी है। इन आफिस टेबिलों के ऊपरी भाग कांच के तख्ते से पटे हैं। उन पर लिखने पढने का वेशकीमती सामान और स्टेशनरी सजे हैं। एक एक टाइमपीस घडी और एक एक घटी भी रखी है। दाहिनी तरफ़ के कमरे की

आफिस टेबिल पर छै टेलीफोन एक लाइन में रखे हैं और बाईं ओर के कमरे की आफिस टेबिल पर सिर्फ एक टेली-फोन है। हरेक आफिस टेबिल के पीछे की तरफ गद्दीदार आफिस चेअर है,—जिसका मुँह सामने की तरफ है। हरेक आफिस टेबिल के सामने की ओर चार चार गद्दीदार साधा-रण कुर्सियाँ रखी हैं, इनके मुँह आफिस चेअर की तरफ है। बाईं ओर का कमरा खाली है दाहिने तरफ के कमरे में आफिस चेअर पर रूपचद बैठा हुआ है। रूपचद की उम्र करीब ४० साल की है। वह साँवले रग और साधारण शरीर का व्यक्ति है। बाल कुछ कुछ सफेद हो चले हैं। सिर पर मारवाडी पगडी बाँधे और शरीर पर सफेद कुरता और धोती पहने है। रूपचन्द चश्मा लगाये हुए कुछ लिख रहा है। पीछे की पार्टीशन की दीवाल के पीछे से टाइप राइटरों की खट-खटाहट की धीमी आवाज आ रही है। दाहनी तरफ के दरवाजे को खोल चपरासी का प्रवेश। चपरासी के आते ही दरवाजा आप से आप बन्द हो जाता है। चपरासी सफेद रग की वरदी पहने है। कमर में कमरपेटी है जिसपर अग्रेजी में लिखा है—दानमल कपनी। चपरासी हाथ में चाँदी की तश्तरी लिये हुए है जिसमें एक विजिटिंग कार्ड रखा है।]

रूपचन्द—(तश्तरी का कार्ड उठाकर उसे देख) भेज दो।

[चपरासी का उसी दरवाजे से प्रस्थान। उसी दरवाजे को खोल कैलाशचन्द्र का प्रवेश। कैलाशचन्द्र गोरे रग का ऊँचा पूरा, मोटा ताजा आदमी है। उम्र है क़रीब पचास वर्ष। बाल आधे सफेद हो गये हैं। काले रग की शेरवानी और चूडीदार पाजामा पहने है। सिर पर फैल्ट कैप लगाये है। कैलाशचन्द्र को देखकर रूपचन्द खडे हो उससे हाथ मिलाता है। रूपचन्द अपनी कुर्सी पर और कैलाशचन्द्र सामने की एक कुरसी पर बैठता है।]

रूपचन्द—(टाइमपीस घडी देखते हुए मुस्करा कर) आप ठीक टाइम पर आये।

कैलाशचन्द्र—कलकत्ते मे टाइम कितनी वहुमूल्य वस्तु है इसे मैं जानता हूँ, मुनीम जी।

रूपचन्द—मैंने सेठ साहब से वातें कर ली है।

कैलाशचन्द्र—वहुत अच्छा।

रूपचन्द—उन्होने आपकी माइन्स लेना स्वीकार कर लिया है।

कैलाशचन्द्र—(अत्यन्त प्रसन्नता से) यह आपकी कृपा के कारण।

रूपचन्द—नही, कैलाशचन्द्र जी, एक तो वे यो ही उदार हृदय के मनुष्य है, दूसरे लडाई की इस तेजी में उन्होने इतना रुपया कमाया है कि उनकी समझ में नहीं आता कि उसे कहाँ लगावें।

कैलाशचन्द्र—मैंने आपसे एक प्रार्थना और की थी कि मुझे इस समय रुपये की अत्यधिक आवश्यकता है।

रूपचन्द—हाँ, उसके सबन्ध में भी मैंने उनसे निवेदन कर दिया है। आप माइन्स उनके नाम ट्रान्सफर करने की उचित काररवाई कीजिए आपको पन्द्रह दिनो का एक लाख रुपये का पोस्टडेटेड चैक आज दे दिया जायगा।

कैलाशचन्द्र—(अत्यन्त प्रसन्न होकर) मैं किन शब्दो में आपको धन्यवाद दूं, यह मेरी समझ में नही आता, मुनीम जी। (जेब से हज़ार रुपये के पाँच नोट निकाल कर टेबिल पर रखता है।)

रूपचन्द—इसकी इस समय आवश्यकता नही है।

कैलाशचन्द्र—आप मुझे एक लाख रुपये का पोस्ट-डेटेड चैक दिलावें और मैं यह छोटी सी सेवा भी न करूँ। दस हज़ार चैक सिकरने पर भेंट करूँगा।

रूपचन्द—(नोट उठाकर जेब में रखते हुए) इच्छा आपकी। (कुछ रुककर) क्यो, कैलाशचन्द्र जी, माइन्स के ओर में जितना परसैन्ट ताँबा, चाँदी और सोना रिपोर्ट्स में लिखा है, वह तो बराबर है न ?

कैलाशचन्द्र—एक्सपर्ट्स की सारी रिपोर्ट्स आप देख चुके है। हिन्दुस्थान के ही नहीं विलायत तक के एक्सपर्ट्स की रिपोर्टे है।

रूपचन्द—(मुस्कराकर) एक्सपर्ट्स की रिपोर्टे।

कैलाशचन्द्र जी, ये रिपोर्टें कैसे मिल जाती हैं, यह तो आप और मैं दोनो अच्छी तरह जानते हैं।

[रूपचन्द जोर से हँसता है। कैलाशचन्द्र भी हँसने में साथ देता है। चपरासी का तश्तरी में दूसरा विजिटिंग कार्ड लिये हुए प्रवेश।]

रूपचन्द—(कार्ड को देखकर) विजिटर्स रूम में बैठाओ। मैं अभी मिलूँगा।

[चपरासी का प्रस्थान।]

रूपचन्द—अच्छा, आप विजिटर्स रूम में ठहरिये। सेठ साहब मार्केट खुलने के कुछ पहले अवश्य आ जाते हैं। उनके आते ही मैं आपका चैक दिला दूंगा।

कैलाशचन्द्र—(खड़े होते हुए) बहुत अच्छा। अनेक धन्यवाद। (प्रस्थान।)

[रूपचन्द घंटी बजाता है। चपरासी का प्रवेश।]

रूपचन्द—नीलरतन बाबू को भेज दो।

[चपरासी का प्रस्थान। नीलरतन का प्रवेश। नीलरतन करीब ६० वर्ष का काले रंग का बहुत ठिंगना पर अत्यन्त मोटा और कुरूप बंगाली है। सिर और मूँछों के बाल सफेद हो गये हैं। वह कुरता और धोती पहने है तथा कुरते पर एक शाल ओढ़े है। रूपचन्द खड़े होकर नीलरतन से हाथ मिलाता है। रूपचन्द अपनी कुर्सी पर और नीलरतन उसके सामने की कुरसी पर बैठता है।]

रूपचन्द—बाबू, हॅमने आॅपका मॉमला में सेठ से बॉत किया। ऊनको आॅपका रॉइस मिल लेना मजूर है।

नीलरतन—(अत्यन्त प्रसन्नता से) धॅन्यवॉद, मुनीम, बॅहोत बॅहोत धॅन्यवॉद। मूल्य ठो ठीक कॅर लिया ?

रूपचन्द—हाँ, सॉठ सॅहस्र टॉका, बाबू।

नीलरतन—(और भी प्रसन्नता से) बॅहोत ठीक, बॅहोत ठीक।

रूपचन्द—आॅप सेलडीड का प्रॉबन्ध कॅरिये। पन्द्रा दीन में सॅब हो जाय। आॅज आॅपका पॅन्द्रा दीन का पोस्टडेटेड चैक मील जॉयगा।

नीलरतन—पोस्टडेटेड चैक! बॅहोत, बॅहोत धॅन्यवॉद, मुनीम, बॅहोत बॅहोत धॅन्यवॉद।

रूपचन्द—(धीरे से) अॅब हॅमारा हॅक्क ?

नीलरतन—(दो हजार के नोट टेबिल पर रखते हुए) हॅम घॅर से लेकर चॅला था। पाँच शॅहस्र चैक का रुपिया मिलने पॅर देगा।

रूपचन्द—(नोट उठाकर जेब में रखते हुए) धॅन्यवॉद बाबू। (कुछ रुककर) आॅपका कारखाना चॉलीस बॅरस से जॉदा पूराना तो नईं न ?

नीलरतन—चॉलीस बॅरष से एक ठो मॅहीना वी जॉदा हो तो टॉका वापीश।

रूपचन्द—और मॅशीन सॅब वर्किंग आर्डर में है न ?

नीलरतन—वीलकूल ठो वर्किंग ऑर्डर में।

[चपरासी का फिर तश्तरी में एक विज़िटिंग कार्ड लेकर प्रवेश। रूपचन्द कार्ड देखता है।]

रूपचन्द—विज़िटर्स रूम में बैठाओ। मैं अभी मिलूंगा।

[चपरासी का प्रस्थान।]

रूपचन्द—आँछा, आॅप अँवी विज़िटर्स रूम में बैठिये। सेठ मॉर्केट खूलने का पेले आँ जाता है। ऊमका आँता ही आॅपको चैक मील जॉयगा।

नीलरतन—बॅहोत अँच्छा, मुनीम, बॅहोत अँच्छा। (प्रस्थान)

[रूपचन्द घंटी बजाता है। चपरासी का प्रवेश।]

रूपचन्द—मुमताजुद्दीन साहब को भेज दो।

[चपरासी का प्रस्थान। मुमताजुद्दीन का प्रवेश। मुमताजुद्दीन करीब ३५ वर्ष का गेहुएँ रंग का मनुष्य है। वह बहुत ऊँचा है, पर बहुत दुबला है। सिर और दाढ़ी-मूछों के बाल काले हैं। वह शेरवानी और ढीला पाजामा पहने हैं। सिर पर लाल तुर्की टोपी लगाये हैं। रूपचन्द खडे होकर उससे हाथ मिलाता है। रूपचन्द अपनी कुरसी पर और मुमताजुद्दीन उसके सामने की कुरसी पर बैठता है।]

रूपचन्द—आपके मकान का सौदा पट जायगा, जनाब।

मुमताजुद्दीन—नवाज़िश है, हुज़ूर की। सेठ साहब से गुफ्तगू हो गई?

रूपचन्द—जी हाँ, सारा मामला तय हो गया। कीमत अस्सी हज़ार आपको मजूर है न?

मुमताजुद्दीन—हालाँ कि जायदाद इससे कही ज्यादा की है, लेकिन

रूपचन्द—(बीच ही में त्योरी बदल कर) क्या कहा, जायदाद ज्यादा

मुमताजुद्दीन—(एकदम नरमी से) गुस्ताखी मुआफ फरमाइए। मुझे अस्सी हज़ार मजूर है।

रूपचन्द—मकान तो वही चीतपुर रोड के कोने वाला ही है न?

मुमताजुद्दीन—जी हाँ, आपने तो शायद देखा भी है?

रूपचन्द—हाँ, देखा है, शायद, ईस्ट इडिया कपनी के वक्त का बना हुआ है।

मुमताजुद्दीन—क्या फर्मा रहे हैं, सरकार, अभी पचास साल पुराना भी न होगा।

रूपचन्द—खैर। बयाने का दस हज़ार का चैक आपको आज दे दिया जायगा।

मुमताजुद्दीन—(प्रसन्नता से) मै अज़हद शुक्रगुज़ार हूँ।

रूपचन्द—(कुछ विचारते हुए) पन्द्रह रोज़ में तो मकान का नक्शा वगैरह बनकर बयनामा लिखा जा सकता है न?

मुमताजुद्दीन—बडी खुशी से।

रूपचन्द—तो देखिये, बाकी रुपये का पन्द्रह दिन का पोस्टडेटेड चैंक भी आपको आज ही दिया जा सकता है, बशर्ते

(चुप हो जाता है।)

मुमताजुद्दीन—बशर्ते हुज़ूर ?

रूपचन्द—(त्योरी बदल कर) आप तो अजीबो ग़रीब आदमी मालूम होते है। बिज़नेस किस चिडिया का नाम है यह भी शायद नही जानते।

मुमताजुद्दीन—(सिटपिटाकर) हुज़ूर हुज़ूर

रूपचन्द—अजी हुज़ूर, हुज़ूर क्या ? दो सौ साल पुराना मकान, बीस हज़ार का भी न होगा, बिक रहा है, अस्सी हज़ार मे। दस हज़ार बयाने में मिल रहे है और बाकी रकम का पोस्टडेटेड चैंक। और फिर भी आप कुछ नही समझने।

मुमताजुद्दीन—ओ ! मैं सरकार की हर तरह से खिदमत करने को

रूपचन्द—ज़रा धीरे बोलिये, जनाब।

मुमताजुद्दीन—(डरते डरते) खता मुआफ।

रूपचन्द—(धीरे धीरे) देखिये, ये दस हज़ार रुपये जो बयाने में मिल रहे हैं कुल के कुल आपको मुझे देने होगे।

मुमताजुद्दीन—(घबडाकर) हुज़ूर

रूपचन्द—आप तो ऐसे घबडा गये, जैसे मैं ज़बर्दस्ती आपको लूट रहा होऊँ। आपको मजूर न हो तो यह मामला तय नही पा सकता।

मुमताजुद्दीन—(और भी घबडाकर) नही, नही, सरकार, जो भी हुजूर हुक्म देगे, बन्दा सर आँखो से उसकी तामील करेगा।

रूपचन्द—अच्छी बात है। दस हजार का चैक आपको आज की तारीख का मिलेगा और सत्तर हजार का पन्द्रह दिनो का पोस्टडेटेड। आज चैक का रुपया मिलते ही रात को मेरे घर पर यह रुपया पहुँच जाय। आज यह रुपया न पहुँचा तो पन्द्रह दिनो के बाद के चैक का पेमेन्ट न होगा। और चैक का पेमेन्ट होने के बाद बीस हजार रुपया उसमें से आपको देना होगा।

मुमताजुद्दीन—जो हुक्म। (कुछ रुक कर डरते डरते) एक अर्ज करूँ?

रूपचन्द—(एकदम रुखाई से) फर्माइए।

मुमताजुद्दीन—(डरते हुए धीरे धीरे) आज के रुपये में से अगर आधा

रूपचन्द—(क्रोध से खडे होते हुए) आपका सौदा नही हो सकता। आदाब अर्ज।

मुमताजुद्दीन—(मिन्नत से) मुआफ कीजिए, मुआफ कीजिए।

रूपचन्द—जनाब, आप तो कुँजडो की भटा भाजी का सा सौदा कर रहे हैं।

मुमताजुद्दीन—मुआफी, हुजूर, मुआफी दीजिए। मुझे सब मजूर है।

रूपचन्द—(बैठते हुए) अच्छी बात है। आप विजिटर्स रूम में तशरीफ़ रखिये। सेठ साहब के आने पर आपको चैक मिल जायेंगे।

मुमताजुद्दीन—(खड़े होते हुए) बहुत खूब।

[चपरासी का तश्तरी में एक काग़ज़ लिये हुए प्रवेश। रूपचन्द काग़ज़ देखता है।]

रूपचन्द—(मुंह बिगाड़कर) इन चन्दे माँगने वालो के मारे तो नाको दम है। (चपरासी से) अच्छा, भेज दो, उन लोगो को।

[मुमताजुद्दीन और चपरासी का प्रस्थान। रूपचन्द टेबिल की दराज से चैक बुक निकालकर चैक लिखना शुरू करता है। तीन गुजरातियो का प्रवेश। एक वृद्ध है, एक अधेड और एक युवक। वृद्ध गुजराती ढग की पगडी लगाये है और सफेद कोट तथा धोती पहने है। अधेड काली टोपी लगाये है और कोट तथा धोती पहने है। युवक अग्रेजी ढग के कपडो में है। तीनो गेहुँए रग के है। वृद्ध कुछ मोटा तथा ठिगना है, शेष साधारण क़द और शरीर के है। तीनो व्यक्ति रूपचन्द का अभिवादन करते है, पर रूपचन्द अभिवादन का उत्तर भी नहीं देता, चैक लिखता रहता है। तीनो आदमी सामने की कुर्सियो पर बैठ जाते है और

रूपचन्द की तरफ देखते रहते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती हैं।]

वृद्ध गुजराती—हम कल साँझ कूँ भी आया होता, पर आपका मुलाकात नहीं हुआ।

[रूपचन्द कोई उत्तर न देकर लिखने में सलग्न रहता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती हैं।]

वृद्ध गुजराती—आज रात कूँ मेल से हम मवई कूँ जाना चाता।

रूपचन्द—(विना सिर उठाये हुए लिखते लिखते वडे रूखे स्वर में) आप रात कूँ मेल से मवई कूँ जा सकता हे।

वृद्ध—पण, मुनीम जी, हमारा जाना तो आपका शेठ पर निर्भर न? उनकूँ मिलने का वास्ते हम मवई से आया।

रूपचन्द—(उसी प्रकार) आपसे मिलने का वास्ते हम शेठ कूँ पूछा, पण उनकूँ इस वखत वीलकुल टाइम नई।

अधेड—मुनीम जी, मुनीम जी!

रूपचन्द—(लिखना रोककर सिर उठा) देखो, शेठ, आप सरखा चन्दा माँगने वाला का रोज वरात आता हे, वरात! समजा? इस तरा सव कूँ चन्दा दिया जाय तो भुगतान में देने कूँ रुप्या नई वचे। समजा?

युवक—क्या केते हो, मुनीम जी। इस लडाई में कलकत्ता ने रुप्या कमाया हे, कलकत्ता ने। मवई से

मिलियन्स कलकत्ता आया हे। आपका शेठ ने कीतना कमाया हे ? उनके लिये फाइव टैन थाउज़न्ड क्या है ?

रूपचन्द—(फिर से उसी तरह लिखते हुए) कलकत्ता ने रुप्या कमाया हे इसलिये मवई वाला कलकत्ता वाला पर वलता हे, क्यूं ?

वृद्ध—नई, नई।

रूपचन्द—(लिखना रोककर सिर उठा ज़ोर से) कलकत्ता वाला मे अक्कल होती, समजा, अक्कल होती, ईसलिए कमाया। कलकत्ता वाला मे वल होता, समजा, वल होता, ईसलिए मवई से कलकत्ता कूं रुप्या आया हे। मवई वाला ने कलकत्ता वाला पर कोई भला कीधा हे।

वृद्ध—नई, नई।

[वाई तरफ के कमरे में, वाईं तरफ की दीवाल का दरवाज़ा खोलकर दानमल का प्रवेश। दानमल की अवस्था करीब ३० वर्ष की है। वह गौर वर्ण का सुन्दर युवक है। मुख पर अत्यधिक प्रसन्नता और प्राफुल्य दृष्टिगोचर होता है। क़द में वह लवा है। शरीर न बहुत दुबला है, न बहुत मोटा। छोटी छोटी मूँछें हैं। खादी का कुरता और धोती पहने है। सिर पर गान्धी टोपी है।]

रूपचन्द—(फिर से लिखते हुए) सुनो, शेठ, आप फोकट अपना टाइम गमाते हो, और मेरा वी। आ वखत आपकूं चन्दा नई मिल सकता।

दानमल—(बाईं ओर के कमरे से जरा जोर से) कौन है, रूपचन्द ?

रूपचन्द—(अपने कमरे में से ही कुछ जोर से) यो ही कुछ फालतू लोग बबई से चन्दा माँगने आ गये है।

[दानमल दोनो कमरो के बीच का दरवाजा खोल रूपचन्द के कमरे में आता है। उसे देखकर रूपचन्द खडा हो अपनी कुरसी से हटता है। तीनो गुजराती भी खडे हो जाते है। दानमल रूपचन्द की कुरसी पर बैठता है। तीनो गुजराती दानमल का अभिवादन कर अपनी अपनी कुर्सियो पर बैठते है। दानमल नम्रता-पूर्वक अभिवादन का उत्तर देता है। रूपचन्द सामने की चौथी कुरसी पर बैठ जाता है।]

दानमल—(गुजरातियों से) आप लोग बबई से आये हैं ?

वृद्ध—जी, शेठ, मबई की ह्यूमैनटेरियन लीग ने हमारा डेपुटेशन आपका पास भेजा है।

दानमल—इतनी दूर से पधारने का आपने कष्ट उठाया ?

वृद्ध—कष्ट की तो कोई बात ई नई, शेठ !

दानमल—कब आप लोगो का आना हुआ ?

वृद्ध—चार दिवस हो गया, शेठ !

दानमल—चार दिन !

वृद्ध—जी, शेठ !

दानमल—यहाँ और किसी ने कुछ दिया ?

वृद्ध—एक आदमी से हजार रुप्या मिला, शेठ, बाकी

सब केता हे आप कूँ मिले। आपके देने पीछे बाकी लोग देगा।

दानमल—अच्छा, मेरे लिये आपका काम रुका है?

वृद्ध—जी, शेठ!

दानमल—मुझसे आप कितना चाहते हैं?

वृद्ध—(नम्रता से मुस्कराकर) हम लोग तो बोत उम्मेद से आया हे, शेठ, आपका जितना रजा हो।

दानमल—फिर भी, अपनी इच्छा तो बताइए।

[वृद्ध अपने साथियों की ओर देखता है।]

अधेड़—कमसे कम दस हजार तो दो, शेठ!

दानमल—(मुस्कराकर) कमसे कम दस हजार!

युवक—(मुस्कराकर) जी, शेठ।

दानमल—(रूपचन्द से) मुनीम जी, इनको ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह का चैक लिख दीजिये।

वृद्ध—(प्रसन्न होकर) धन्यवाद शेठ, धन्यवाद।

अधेड़—(प्रसन्नता से) बोत बोत, धन्यवाद।

युवक—(प्रसन्नता से) मैनी मैनी थैंक्स।

दानमल—(खड़े होते हुए) और कोई आज्ञा?

[सब लोग खड़े हो जाते हैं।]

वृद्ध—आपने सब कुछ कर दिया, शेठ।

[दानमल अपने कमरे में जाकर अपनी आफिस चेअर पर बैठता है। रूपचन्द अपने कमरे में अपनी कुरसी पर

बैठता है। तीनों गुजराती अपनी अपनी कुरसियों पर बैठ जाते हैं।]

रूपचन्द—(रुखाई से) आप लोग विजिटर्स रूम में ठेरिए। थोडा देर में चेक आप कूँ पोच जायगा।

वृद्ध—बोत अच्छा।

[तीनो खडे होते है और अभिवादन कर दाहिनी तरफ के दरवाजे से बाहर जाते हैं। इस बार रूपचन्द इनके अभिवादन का उत्तर देता है। रूपचन्द चैक बुक में एक चैक और लिखकर दानमल के कमरे में जाता है और दानमल के सामने की एक कुरसी पर बैठता है।]

दानमल—क्या भाव बन्द हुआ, पाट ?

रूपचन्द—साढे बानवे।

दानमल—और हैसियन ?

रूपचन्द—पोने अठारह।

दानमल—सवेरे कुछ सौदा किया ?

रूपचन्द—हाँ, दस हजार गाँठ पाट की ली और पाँच लाख हैसियन।

दानमल—क्यो, कोई खबर मिली क्या ?

रूपचन्द—पक्की खबर।

दानमल—क्या खबर मिली ?

रूपचन्द—नीचे के भाव इस सप्ताह मे अवश्य बँध जायँगे।

दानमल—यह खबर तो बहुत दिन से उड रही है।

रूपचन्द—आज तो मै खुद उनसे मिलकर आया हूँ।

दानमल—खुद से ?

रूपचन्द—हाँ, हाँ, खुद से।

दानमल—क्या भाव बँधेंगे ?

रूपचन्द—पाट का पञ्चानवे और हैसियन का अठारह।

दानमल—पक्का ?

रूपचन्द—बिलकुल। आज उस पार्टी ने बहुत गाँठें पोते की है, हैसियन भी बहुत लिया है।

दानमल—अब अपने यहाँ कितनी गाँठे पाट और कितना हैसियन पोते है ?

रूपचन्द—(विचारते हुए) कोई पचास हजार गाँठ पाट और तीन करोड हैसियन होगा। लडाई में तो तेजी को ही रुजगार कहना चाहिये। लडाई—मतलब तेजी। पिछली लडाई में एकदम से इतनी तेजी नही आई थी जितनी इस लडाई में आई। आज जिससे मै मिलने गया था, वह कहता था कि पाट का भाव डेढ सौ हो जायगा और हैसियन का चालीस।

दानमल—हाँ, सवा सौ पाट और पच्चीस हैसियन तो हो ही गया था। बात यह है कि जूट की हिन्दुस्थान को मनापली है। हवाई लडाई में वार बेग के बिना काम नही चल सकता। जब तक लडाई चलेगी तब तक सरकार को वार

वेग लेना ही पडेगा। बीच बीच में रीएक्शन बहुत से आयेंगे, पर अन्त में तेजी ही रहेगी।

[कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

दानमल—चन्दा का चैक लिख लिया ?

रूपचन्द—हाँ, पर आपने चन्दा बहुत दिया। जो भी माँगने आता है हरेक को आप यो ही देते है।

दानमल—भगवान ने धन और किस लिये दिया है, रूपचन्द ?

रूपचन्द—यह तो ठीक है, पर देखकर चलना चाहिये।

दानमल—जो देखकर चलता है उसके पास यह धन क्या सदा रहता है ? रूपचन्द, मै तो लडाई के कारण इस धन्धे में पडा। दो महीने में ही इतना कमाया कि समझ में नही आता कि कहाँ लगाऊँ और इतनी कमाई क्यो हो रही है जानते हो ?

रूपचन्द—क्यो ?

दानमल—मै स्वय के लिये नही कमाना चाहता। मै चाहता हूँ कि इस कमाई से देश की सेवा करूँ। आपस वालो की, गरीबो की भलाई करूँ। इसलिये जो सस्था भी माँगती है, जी खोल कर उसीको देता हूँ। आपस वालो की भलाई करने की भी सोच रहा हूँ। रोज़ गरीबो को भी जो हो सकता है, बाँटता हूँ। (कुछ रुककर) रूप-चन्द, मै साध्य को प्रधान चीज़ मानता हूँ, साधन को

गौण वस्तु। मेरा साध्य देश सेवा और गरीबो का उपकार है। लडाई के कारण मैंने फाटके को सावन बनाया है। और फिर, रूपचन्द, आज कलकत्ता और बवई मे जो वडे वडे दानी है, दानवीर कहे जाते है, सव फाटके ही से तो वने है।

रूपचन्द—सव फाटके से, और गई लडाई में ही अधिकाश वने।

दानमल—रूपचन्द, आज तो तुम्हें तीन चैंक और लिखना पडेंगे।

रूपचन्द—किसके लिये ?

दानमल—लखमीदास, कमलाचरण और तुम्हारे लिये।

रूपचन्द—मेरे लिये भी ?

दानमल—हाँ तुम्हारे लिये भी। तुम्हारे लिये चार हज़ार का। एक नई मोटर खरीदो। लखमीदास और कमलाचरण मेरे स्कूल और कॉलेज के सहपाठी है। मै दो महीने में इतना वडा आदमी हो गया पर वे विचारे जैसे थे वैसे ही हैं। मैंने लखमीदास को एक वाडी देने कहा था और कमलाचरण को एक वगीचा।

रूपचन्द—सेठ जी !

दानमल—वोलो मत। मित्रो के ग़रीब रहते मुझे धन से आनन्द ही नही आता। लखमीदास ने पचपन हज़ार में वाडी का सौदा किया है और कमलाचरण ने पैंतालीस हज़ार में वगीचे का।

रूपचन्द—पर इतने रुपये अभी वैंक मे नही हैं।

दानमल—दोनो प्रापर्टी के सौदे में पाँच पाँच हज़ार एडवान्स मनी के देना है। एडवान्स मनी के चेक आज के दे दो और वाकी के रुपये के पोस्टडेटेड।

रूपचन्द—पर आज और भी कुछ चैक देने है।

दानमल—किनको ?

रूपचन्द—ताँवे की माइन्स का सौदा हो गया। राइस मिल का सौदा भी पट गया। और चीतपुर रोड का मकान भी ले लिया।

दानमल—किसी तरह से प्रवन्ध करो। (मुस्कराकर) मै जानता हूँ, तुम सब कर लोगे।

रूपचन्द—(विचार करते हुए) करना ही पडेगा।

दानमल—(प्रसन्नता से) हिअर स्पीक्स रूपचन्द एजेन्ट आफ दानमल कपनी।

[रूपचन्द खडे होकर टेबिल पर चैक वुक रख चार चैक और लिखता है। और फिर चैक वुक दानमल के सामने दस्तख़त के लिये रखता है।]

दानमल—(एक चैक पर दस्तख़त कर) यह ताँवे की माइन्स का ?

रूपचन्द—जी। पन्द्रह दिनो का पोस्टडेटेड। इतने दिनो में कैलाशचन्द्र माइन ट्रान्सफ़र करने की सारी व्यवस्था कर लेगा।

दानमल—(दूसरे चैक पर दस्तख़त कर) यह राइस मिल का ?

रूपचन्द—यह भी पन्द्रह दिनो का पोस्टडेटेड है। इतने दिनो मे लिखापढी इत्यादि सब हो जायगी।

दानमल—(तीसरे चैक पर दस्तख़त कर) यह चीतपुर रोड के मकान का ?

रूपचन्द—जी, मकान के एडवान्स मनी का, दूसरा सत्तर हज़ार का चैक और है।

दानमल—(चौथे चैक पर दस्तख़त कर) यह ?

रूपचन्द—जी, यह भी पन्द्रह दिनो का पोस्टडेटेड है। इस म्याद के भीतर नक़्शा वग़ैरह बनकर सेल डीड लिख जायगा। (कुछ रुककर) पोस्टडेटेड चैक इसलिये दिये जाते है कि बेचने वाले मानते नही और चीजे सब आवे दामों से भी कम मूल्य मे मिली है। ईश्वर की दया से पन्द्रह दिनो में अपने यहाँ बहुत रुपया आ जायगा।

दानमल—ठीक, (पांचवें चैक पर दस्तख़त करते हुए) यह चन्दे का ?

रूपचन्द—जी।

दानमल—(चार चैकों पर और दस्तख़त करके) ये लखमीदास और कमलाचरण के !

रूपचन्द—जी।

दानमल—और तुम्हारा ?

रूपचन्द—उसकी अभी आवश्यकता नही। (चैक बुक उठाता है।)

दानमल—लाओ, चैक बुक मुझे दो।

[रूपचन्द चैक बुक नहीं देता। दानमल मुस्कराते हुए खडा होता है और चैक बुक रूपचन्द के हाथ से छीन फिर अपनी कुरसी पर बैठ चार हजार का चैक रूपचन्द के नाम लिखता है। रूपचद के कमरे में टेलीफोन की घटी वजती है।]

रूपचन्द—(दानमल की टेविल की घडी देखते हुए) ग्यारह वजे। वाजार खुल गया। (जल्दी से अपने कमरा में जाता है।)

रूपचन्द—(अपनी कुरसी पर बैठ कर टेलीफोन का रिसीवर दाहने हाथ में उठा दाहने कान में लगा कर) पाट खुल गयो? के भाव खुल्यो? के इक्कानवे। (दूसरे फोन की घटी वजती है। उसका रिसीवर बायें हाथ से उठाकर बायें कान में लगाकर) हैसियन खुल गयो? के भाव सत्तरा चौदा आना। (तीसरे फोन की घटी वजती है। बायें कान में लगे हुए रिसीवर को गर्दन टेढ़ी कर चेहरे और कन्धे के बीच में इस तरह रख लेता है जिससे रिसीवर गिरता नहीं तथा रिसीवर में सुनने की जगह कान के नजदीक और बोलने की जगह मुंह के नजदीक आ

जाती है पर हाथ खाली हो जाता है। उस हाथ में तीसरा रिसीवर उठाकर बायें कान में लगा) कौन ? कौन ?

रुक्मणी रमण जी, हजार गाँठ बेच दूं।

अच्छा। भाव इक्यानवे है। इक्यानवे में ही बेच दूं बजार भाव बेच दूं। (दाहने कान में लगे हुए रिसीवर में) बेच रुक्मणी रमण जी री हजार गाँठां बेच कसने बेच। (बायें कान में लगे हुए रिसीवर में) कह दिया बेचने को। (दाहने कान में लगे हुए रिसीवर में) बेची ? साढे नव्वे में ? इतरी नीची ! (बायें कान में लगे हुए रिसीवर में) साढे नव्वे मे हजार गाँठ बेची। (उस रिसीवर को रख देता है। गर्दन में दबे हुए रिसीवर को बायें हाथ से बायें कान में लगाकर) के भाव के भाव साढे सत्तरा। कुण बेचू चले है ? खुदरा खुदरा । (उस रिसीवर को रख देता है। दाहने कान में लगे हुए रिसीवर में) के भाव नव्वे। के बात है ? कुण बेचे है ? पजाब पचानन ? सगमरमर सदन ? सगमूसा महल ? के भाव ? के भाव ? . साढे नुवासी। (रिसीवर रख देता है।)

[कुछ देर निस्तब्धता रहती है। फिर घटी बजती है।]

रूपचन्द—(दाहने हाथ से रिसीवर उठाकर दाहने कान में लगाकर) के भाव के भाव (आश्चर्य से)

अठासी के हुयो ? वार वैंग कैंसिल हो गयो। (दूसरे फोन की घन्टी बजती है। उसका रिसीवर बांयें हाथ से उठाकर बांयें कान में लगाते हुए) के भाव के भाव (आश्चर्य से) साढी सोला !

[दानमल घबडाकर अपने कमरे से रूपचन्द के कमरे में आता है।]

रूपचन्द—के हुयो ? वार वैंग कैंसिल हो गयो ? कैसे हो सके है ? हुयो है ? कुण वेचू कुण वेचू ? सगला वेचू ? (दाहने कान के रिसीवर में) के भाव ? छियासी ! कोई लेऊई नई चाले ? .. भूकप हो गयो। हुयो के ? वार वैंग कैंसिल हो गयो ?

दानमल—(एकदम घवडाकर) क्या हुआ, रूपचन्द ?

रूपचन्द—वार वैंग कैंसिल हो गया ! सव वाजार वेचू ! कोई लेऊ नही।

दानमल—(वहुत ज्यादा घबराहट से) मैं पाट के वाडे में जाता हूँ। (शीघ्रता से दाहनी ओर के दरवाजे से प्रस्थान।)

[तीसरे फोन की घन्टी वजती है। रूपचन्द फिर तीनो रिसीवर उसी तरह ले लेता है जैसे पहले लिये थे।]

रूपचन्द—कौन कौन माधोप्रसादजी पाँच हजार गाँठ वेचूं ? (दाहने कान वाले रिसीवर में)

बेच, पाँच हजार गाँठाँ माधोपरसाद री कस ने बेच।

(चौथे फोन की घन्टी बजती है। तीसरे फोन का रिसीवर रखकर चौथे फोन का रिसीवर उठा) कौन कौन अवाप्रसाद जी, बीस लाख हैसियन बेचूँ? (बांयें तरफ के रिसीवर में) बेच अवापरसाद री बीस लाख हैसियन (पाँचवें फोन की घन्टी बजती है। चौथे फोन का रिसीवर रखकर पाँचवें फोन का रिसीवर उठाकर) कौन कौन मोतीलाल जी दो हजार गाँठ बेचूँ? (दाहनी तरफ के रिसीवर में) बेच, मोतीलाल री दो हजार गाँठाँ? (दाहने रिसीवर में) के? के? कोई लेऊ नईं (बांयें रिसीवर में) के कोई लेऊ नईं? भाव के भाव साढे पन्द्रा (दाहने रिसीवर में) के भाव? पोनी चोरासी .

यवनिका-पतन

दूसरा दृश्य

स्थान—पाट का वाडा

समय—दोपहर

[सारा स्थान गन्दा है। बडा सा हॉल है। पीछे और दाहनी तरफ क़तार में छोटी छोटी कोठरियाँ दिखती हैं

जिनमें से कुछ में छोटे छोटे तख़्त बिछे हैं और कुछ में भद्दी सी कुर्सियाँ और टेबिलें रखी हैं। तख़्तों पर मैली सी बिछावन है। कई कोठरियों में तख़्तों और टेबिलों पर टेलीफोन भी रखे हैं। कई कमरों के तख़्तों और कुर्सियों पर कुछ आदमी बैठे हैं। कोई कोई फोन का रिसीवर उठाकर कान में लगाये हैं। कोई सुन रहा है। कोई बोल रहा है। इन दोनों क़तारों के सामने चौडा सा रास्ता छोडकर लकडी का कटहरा लगा है। कटहरे के भीतर हॉल में काफी जगह है। कटहरे के भीतर बाई तरफ कई बेंचें हैं। इन बेंचों पर बहुत से आदमी खडे हुए हैं और बेंचों के नीचे कटहरे के भीतर की खाली जमीन पर भी बहुत भीड है। कोठरियों में बैठे हुए और हॉल में खडे हुए आदमियों में ९९ फी सदी मारवाडी हैं। कोई मारवाडी पगडी लगाये है, कोई टोपी और कोई नगे सिर भी है। शरीर पर अधिकाश व्यक्ति कुरता और धोती पहने हैं। कोई कोई कोट भी पहने है और कोई कोई सिर्फ बनयान ही। किसी व्यक्ति की पगड़ी के पेच खुल गये हैं। किसी की टोपी अस्त व्यस्त है। जो नगे सिर है उनमें से कई के बाल फैले हुए हैं। कोठरियों में बैठने वाले व्यक्तियों में कई हॉल में आते हैं और हॉल में खडे हुए लोगों में से कई कोठरियों में जाते हैं। यह आवागमन बराबर जारी है। बाडे के भीतर का एक भी मनुष्य पूरे होश में नहीं जान पडता। सभी नशेलचियों के सदृश दीख पडते है। किसी भी व्यक्ति

में धैर्य का लवलेश नहीं है। सबके हर व्यवहार में, चाहे वह बोलना हो, चिल्लाना हो, या आना जाना हो, अत्यधिक शीघ्रता और महान उद्विग्नता दृष्टिगोचर होती है। सारे बाडे में ज़ोर का ही हल्ला मचा हुआ है। बोलते और चिल्लाते सब है, पर सुनने वाले बहुत कम दिखते है। बेंचो पर खडे हुए व्यक्ति, जो पाट के बाडे में 'रगबाज़' के विशेष नाम से पुकारे जाते है, विचित्र जीव दीख पडते है। उनकी बोली, उनकी चिल्लाहट, उनकी हलचल, उनके सारे व्यवहार से वे मनुष्य तो नहीं कहे जा सकते। उनमें जो पगडी बाँधे है, उनमें से अधिकाश की पगडियाँ अत्यधिक मैली है तथा खुल-सी गई है और उनके पेच उनके कन्धों पर इधर उधर फैले हुए है। उनमें जो टोपी लगाये है, उनमें से अधिकाश की टोपियाँ दाँयें, बाँयें, आगे, पीछे इस तरह सरक गई है कि उनके गिरने में थोडी ही कसर है। जो नगे सिर है उनमें से अधिकाश के बाल बेतरह फैले हैं। कई के बालो ने तो फैलकर उनकी आँखें ही ढक ली है। चिल्लाने के सिवा देखने की शायद इन्हें जरूरत ही नहीं है। शरीर पर के कपडे सभी के मैले है और पूरे बटन तो किसी के कोट या कुरते में नहीं है। किसी किसी के कोट में तो एक ही बटन बचा है, जिससे किसी तरह कोट शरीर पर अटका सा है। कुरतो में तो किसी किसी के एक भी बटन नहीं रहा है। रगबाज़ बेंचो पर लगूरों के सदृश उछल उछल कर उन्हीं के सदृश किटकिटा कर

चिल्ला रहे हैं। उनके दाहने हाथ हर उछाल में सबसे अधिक उछलते हैं और अँगूठे को छोड चारो उँगलियो में से कभी चार, कभी तीन, कभी दो और कभी एक के द्वारा पाट के भाव का विचित्र सकेत होता है। रगबाज़ पसीने से लतपत हैं और दाहने हाथ के फँसे रहने के कारण बाँयें हाथ से बिना रुमाल के ही बीच बीच में अपना पसीना इस बुरी तरह से पोंछते हैं कि आसपास खडे हुए व्यक्तियो के मुख और आँखों पर उसके छींटे पडे बिना नहीं रहते।]

एक रगबाज़—(दाहने हाथ की चारों उँगलियों को सामने की तरफ हिलाते हुए चिल्ला कर) तिरासी, तिरासी, तिरासी, तिरासी, तिरासी !

दूसरा रगबाज़—(दाहने हाथ की तीनो उँगलियो को स्वय अपनी तरफ हिलाते हुए चिल्लाकर) पोनी तिरासी, पोनी तिरासी, पोनी तिरासी, पोनी तिरासी, पोनी तिरासी।

नीचे खड़ा हुए एक व्यक्ति—बेची। ढाई सै। बेची ढाई सै।

दूसरा व्यक्ति—पाँच सै बेची। पाँच सै बेची।

तीसरा व्यक्ति—ली ढाई सै, ली पाँच सै, पोनी तिरासी में।

तीसरा
चौथा
पाँचवाँ
छठवाँ } (एक साथ चिल्लाकर) हज़ार बेची। दो हज़ार बेची। साढी ब्यासी में।

सातवां }
आठवां } (एक साथ) ली तीन हज़ार साढी ब्यासी में।

एक रंगबाज़ }
दूसरा रंगबाज़ }
तीसरा रंगबाज़ }
चौथा रंगबाज़ } (एक साथ दाहने हाथ की दो उंग-लियों को सामने की तरफ हिलाते हुए चिल्लाकर) साढी ब्यासी, साढी ब्यासी, साढ़ी, साढी ब्यासी, साढी ब्यासी, साढी ब्यासी।

पांचवां रंगबाज़—(दाहने हाथ की एक उंगली को सामने की तरफ हिलाते हुए चिल्लाकर) सवा ब्यासी, सवा ब्यासी, सवा ब्यासी, सवा ब्यासी, सवा ब्यासी, सवा ब्यासी।

नीचे खड़ा हुआ एक व्यक्ति—(चिल्लाकर) बेची ब्यासी में, हज़ार गांठें। (और चिल्लाकर) बेची इक्यासी में दो हज़ार गांठें। (और चिल्लाकर) बेची अस्सी में चार हज़ार गांठें।

दूसरा व्यक्ति—ली, ली, ली, बाज़ार भाव छै हज़ार गांठें।

अगणित आदमी—(एक साथ चिल्लाकर) अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू!

[दानमल का शीघ्रता से प्रवेश। वह दाहनी तरफ की कोठरियों की कतार में से सबसे पहली कोठरी में जाता है। अन्य कोठरियो की अपेक्षा यह कोठरी अधिक साफ सुथरी है। इसकी टेबिल कुर्सियां आदि भी दूसरी कोठरियों से

अच्छी है। एक कुरसी पर एक अधेड अवस्था का काला सा व्यक्ति, जो टोपी लगाये और कुरता तथा धोती पहने है, बैठा हुआ फोन में बात कर रहा है। दानमल को देखकर वह खडा हो जाता है और फोन में "अस्सी का बेचू, अस्सी का बेचू!" कहकर फोन का रिसीवर रख देता है। दानमल और वह दोनो बैठ जाते है और दोनो में बात चीत होना शुरू होती है। बाडे में वैसा ही हल्ला रहता है, परन्तु दानमल की कोठरी बहुत नजदीक होने के कारण इस हल्ले में भी इन लोगो की बातचीत सुन पडती है।]

दानमल—(घबडाहट से) रामलाल, यह क्या हुआ?

रामलाल—वार बैग जो अप्रेल, मई, जून में डिलेवरी होने वाला था, उसकी डिलेवरी सितवर तक बढ गई, सरकार।

दानमल—इतनी सी बात पर यह भूकप! वार बैग कैंसिल तो नही हुआ?

रामलाल—कैंसिल तो नही हुआ, सरकार, पर लोग तो नये वार बैग के आर्डर की उम्मीद में थे और इसीका डिलेवरी लेना बढ गया।

दानमल—फिर भी, रामलाल, इतनी सी वात पर ऐसा कुलैप्स तो नही होना चाहिए था?

रामलाल—यह तो फाटका है, सरकार। साइकलॉजी का वजार है।

दानमल—और घटेगा ?

रामलाल—फाटका बिगडने के बाद भाव का सवाल ही नही रहता। तेजी में कितना भी बढ़ सकता है, मद्दी मे कितना भी घट।

दानमल—(और भी घबडाकर) फिर अपना माल ?

रामलाल—मेरी समझ में तो सब वेच देना चाहिए। नुकसान में सौदा रखना ठीक नही, काट देना चाहिए।

ज़ोर की आवाज़ें—इठत्तर का वेचू! इठत्तर का वेचू! इठत्तर का वेचू! इठत्तर का वेचू!

दानमल—(एकदम घवडाकर) रामलाल!

रामलाल—(ज़ोर से) वेचिए, सरकार! वेचिए।

दानमल—इस भाव में ?

रामलाल—(घवडाकर जल्दी से) फाटका मे भाव नही देखा जाता, सरकार।

ज़ोर की आवाज़ें—छियत्तर का वेचू। छियत्तर का वेचू। छियत्तर का वेचू। छियत्तर का वेचू।

दानमल—(पागलो के सदृश) रामलाल! रामलाल!

रामलाल—वेचिए, सरकार, वेचिए।

दानमल—(उसी प्रकार के स्वर में) कर! जो तुझे दिखे सो कर।

[रामलाल दौडते हुए कटहरे के भीतर पहुँचता है। दानमल कुरसी पर लेट सा जाता है।]

एक रगबाज़—(दाहने हाथ की चारो उँगली सामने की तरफ हिलाते हुए) छियत्तर, छियत्तर, छियत्तर, छियत्तर।

रामलाल—वेची छियत्तर में पाँच हज़ार।

एक व्यक्ति—ली पाँच हज़ार छियत्तर में।

दूसरा रगबाज़, तीसरा रगबाज़, चौथा रगबाज़, पाँचवाँ रगबाज़—(दाहने हाथ की एक साथ चारों उँगली सामने की तरफ हिलाते हुए) पिचत्तर, पिचत्तर, पिचत्तर, पिचत्तर, पिचत्तर।

रामलाल—वेची दस हज़ार गाँठ पिचत्तर में।

एक व्यक्ति—ली दस हज़ार पिचत्तर में।

बहुत से रगबाज़—(एक साथ दाहने हाथ की चारो उँगली सामने की तरफ हिलाते हुए) चोत्तर, चोत्तर, चोत्तर, चोत्तर, चोत्तर।

रामलाल—वेची दस हज़ार चोत्तर में।

बहुत से रगबाज़—(एक साथ दाहने हाथ की चारों उँगली सामने की तरफ हिलाते हुए) तेत्तर, तेत्तर। बात्तर, बात्तर।

अगणित आदमी—(एक साथ ज़ोर से) बात्तर का वेचू। बात्तर का वेचू।

कुछ आदमी—(एक साथ) दानमल वेचू। दानमल वेचू।

[बड़ा कोलाहल होता है। कुछ समझ में नहीं आता।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—कलकत्ते की फौजदारी कोर्ट

समय—दोपहर

[कोर्ट के कमरे की तीन तरफ की दीवालें दिखती हैं, जिनमें कई दरवाज़े और खिड़कियां हैं। पीछे की दीवाल पर बादशाह की एक बड़ी सी तस्वीर लगी है। तस्वीर के नीचे एक घड़ी है। पीछे की दीवाल से लगा हुआ एक ऊँचा प्लेटफार्म है। उस पर दरी और दरी पर क़ालीन। उस पर मजिस्ट्रेट की ऊँची कुरसी है। कुरसी के सामने राइटिंग टेबिल है, जिसपर लिखने पढ़ने का सामान, स्टेशनरी और कई फाइल रखे हैं। ऊँचे प्लेटफार्म के नीचे एक और प्लेटफार्म है, उस पर मेज़ें लगी हैं। मेज़ों के एक तरफ सिरिश्तेदार और दूसरी ओर अदालत के और अहलकारों की कुर्सियां हैं। कुर्सियों के सामने टेबिलें हैं और इन टेबिलों पर भी लिखने पढ़ने का सामान, स्टेशनरी और कई फाइलें रखी हैं। सिरिश्तेदार के प्लेटफार्म के सामने लकड़ी का कटहरा है। इस कटहरे के बांई तरफ मुलज़िम के खड़े होने की जगह है। यह चारों ओर से लकड़ी के कटहरे से घिरी हुई है। इस कटहरे के सामने कुर्सियों की क़तारें और कुर्सियों के पीछे फिर कटहरा है। कटहरे के पीछे बेंचों की कई क़तारें हैं। इन कुर्सियों और

बेंचो के मुंह मजिस्ट्रेट की बैठक की ओर है। परदा खुलते समय कुछ चपरासियो को छोडकर कमरे में और कोई नहीं है। ये चपरासी फाइल इत्यादि ठीक कर रहे है। रूपचन्द, कैलाशचन्द्र, नीलरतन, मुमताजुद्दीन, लखमीदास और कमलाचरण का प्रवेश। लखमीदास और कमलाचरण दोनो की उम्र क़रीब ३० साल की है। लखमीदास सांवले और कमलाचरण गेहुएं रग का है। दोनो साधारण ऊँचाई और शरीर के मनुष्य है। दोनो के छोटी छोटी मूँछें है। दोनो काली टोपी, कोट और धोती पहने हुए है। सब लोग आपस में बात करते हुए आ रहे है।]

रूपचन्द—बिलकुल नियत विगाड ली, बिलकुल।

[सब लोग बेंचो पर बैठ जाते है।]

रूपचन्द—दानमल इस तरह नियत न विगाडता तो मैं आप लोगो को फौजदारी मे नालिश करने की कभी सलाह न देता।

लखमीदास—दस बारह लाख के लिये दानमल अपनी सात पीढियो का नाम इस प्रकार डुवो देगा, यह मै सोच ही नही सकता था।

कमलाचरण—फिर जब रुपया आया था, उस समय कैसी जल्दी जल्दी बैंक में रख लिया, जब गया तो उसी तरह निकालना भी था।

कैलाशचन्द्र—और यहाँ नही बचा था, तो देश से मँगाता।

नीलरतन—हाँ, हॅमने शुना इन दो माॅस में ऊशने वोत ठो रुपिया देश भेजा।

मुमताजुद्दीन—मै ग़रीव तो वेमौत मर गया। रूपचन्द साहब के कहने से मैंने अपना मकान सत्तर हजार में रहन कर पेमेन्ट के लिये उसे रुपया दिया। उसका पोस्टडेटेड चैक! कभी कोई ख्वाब में भी सोच सकता था कि दानमल कपनी का चैक डिसआनर होगा।

लखमीदास—अरे, भाई, आपही का क्या, सबका यही हाल है। मैंने कानपुर में अपना मकान रहन कर उसे पेतालीस हजार रुप्या भुगतान के लिये दिया था। मैंने भी यही सोचा था कि उसका पोस्टडेटेड चैंक न सिकरे यह असमव वात है।

कमलाचरण—इसी पोस्टडेटेड चैक के भरोसे पर तो मैंने भी अपना वनारस का वगीचा रहन कर उसे चालीस हजार दिया था।

कैलाशचन्द्र—और, भाई, मैंने तो इस पोस्टडेटेड चैक के इत्मीनान पर एक लाख रुपये में अपनी पत्नी के जेवर रहन रखे थे।

नीलरतन—(रूमाल से अपनी आँखों के आँसू पोछते हुए) और हॅम! हॅम तो मॅर गया हूँ, वीलकूल मॅर गॅया हूँ। मील, धाॅन, चाॅवल शव पर शाॅठ शहस्र टाॅका ऋन लेकर दाॅनमॅल शेट को पोस्टडेटेड चैक पर दीया है।

रूपचन्द—ठीक, भाई, आप क्या सब मेरे भरोसे पर मरे हैं। सबने दानमल की इज़्ज़त बचाने के लिये, ठीक टाइम पर उसका भुगतान हो जाय, इस उद्देश से, उसे एक सच्चा, ईमानदार, आदमी समझकर रुपया दिया। उसे तो मै दो ही महीने से जानता हूँ, पर उसका कुटुम्ब प्रसिद्ध कुटुम्ब था। वह भी अच्छा आदमी दिखता था। क्यों लखमीदास जी, कमलाचरण जी, आप लोग तो उसे बहुत दिनो से जानते है ?

लखमीदास—(बे परवाही से) बहुत थोडा। जोधपुर के स्कूल में कुछ दिन साथ रहा था।

कमलाचरण—और मेरा जयपुर के कॉलेज में।

रूपचन्द—यहाँ भी उसने आरभ में अच्छा काम किया।

कैलाशचन्द्र—कमाया था, इसलिए।

लखमीदास—और क्या ?

कमलाचरण—इसमें क्या सन्देह है ?

रूपचन्द—भुगतान न करता तो न करता, दिवालिया हो जाता, पर जिन गरीबो से उनकी जायदादें रहन कराकर क़र्ज़ लिया उन्हें तो पटा देता।

[नीलरतन फूट फूट कर रोने लगता है। मुमताजुद्दीन रूमाल से आँखें पोछता है।]

रूपचन्द—ओ ! यह आप लोग क्या करते है ! मुझे देखिये, मेरी तरफ देखिये। मुझे देखकर तो हिम्मत रखिये।

आप लोगो का तो रुपया ही गया है। मेरी तो इज़्ज़त चली गई। मै बाज़ार में किसी को मुंह दिखाने योग्य भी नही रहा। ज़िन्दगी में मैंने बडी बडी जगह काम किया है, बडे बडे कन्सर्न्स को कन्ट्रोल किया है, पर मेरी साख कभी नही गई। 'जाय लाख रहे साख', पर इस दानमल ने तो मेरी साख भी खाक में मिला दी। क्या करूँ? दो ही रास्ते थे—या तो आत्महत्या कर लेता, या आप लोगो की सहायता कर इस परोपकारी काम से कुछ शान्ति लाभ करता। आत्महत्या करना तो बुज़दिली होती, इसलिये इस परोपकार पर कमर कसी। (कुछ ठहरकर) और देखिये, मुझे विश्वास है कि वह फौजदारी में कभी जेल जाना स्वीकार न करेगा। इन सब पोस्टडेटेड चैक्स के पेमेन्ट के लिये वह देश से रुपया मँगायेगा, अवश्य

[एक नवयुवक बैरिस्टर का प्रवेश। उसकी उम्र क़रीब ३० वर्ष की है। वह सांवले रग का ऊँचा पूरा इकहरे शरीर का बगाली है। अग्रेजी लिवास में है।]

रूपचन्द—(उसे देखकर) ओ! अपने बैरिस्टर साहब आ गये।

[सब लोग उठकर उसके नजदीक जाते है और फिर सब आकर उसी बेंच पर बैठते है।]

बैरिस्टर—यू आर श्योर टु विन। यू आर श्योर टु विन।

[सिरिश्तेदार और अहलकारों का प्रवेश। सिरिश्तेदार

की उम्र क़रीब ५० वर्ष की है। वह सांवले वर्ण का ठिगना और दुबला बंगाली मुसलमान है। खिचडी बाल और मूछें दाढी है। काले रंग की शेरवानी और ढीला पाजामा पहने है। सिर पर तुर्की टोपी लगाये है।]

सिरिश्तेदार—(रूपचन्दकी तरफ आते हुए) ओ! आप लोग आ गये?

[बैरिस्टर, रूपचन्द और उसके सब साथी खडे हो जाते और सिरिश्तेदार को झुक झुक कर सलामें करते है। सिरिश्तेदार सलामो का उत्तर देता है।]

रूपचन्द—आज पहले नम्बर पर किसका मुकदमा है, सिरिश्तेदार साहब?

[धीरे धीरे कोर्ट रूम में आदमी आने लगते है। और एक पुलिस सार्जेन्ट भी तमचा लगाये कभी कमरे के अन्दर आता है और कभी बाहर जाता है।]

सिरिश्तेदार—आप ही लोगो का।

मुमताजुद्दीन—आज क्या क्या होगा, सिरिश्तेदार साहब?

सिरिश्तेदार—अब तो बहुत थोडा काम बाकी है। प्रासीक्यूशन की तरफ का स्टेटमेन्ट हो ही गया। (रूपचन्द की ओर इशारा कर) इनकी गवाही भी हो गई। आज पहले एक्यूज़्ड का स्टेटमेन्ट होगा और उसने अगर अपने डिफेन्स में कुछ कहा तो फिर बहस के लिये पेशी मुकर्रर होगी, क्यो बैरिस्टर साहब?

बैरिस्टर—ऑफ कोर्स।

सिरिश्तेदार—लेकिन वह तो कुछ कह ही नही रहा है। उसने कोई कौन्सिल भी एन्गेज नही किया।

रूपचन्द—कहेगा वह क्या? चैक्स पर उसके दस्तखत है, इससे क्या वह इकार कर सकता है? फिर (सबकी तरफ इशारा कर) इन सब ने मेरे सामने उसे कैश रुपया दिया है।

सिरिश्तेदार—हाँ, यह तो आपने अपनी गवाही में कहा ही है।

रूपचन्द—मुझे तो यकीन है, सिरिश्तेदार साहब, कि वह फौजदारी में कभी जेल जाना मजूर न करेगा और इन सब चैक्स का पेमेन्ट अपने मुल्क से रुपया मँगाकर करेगा।

सिरिश्तेदार—पर पेमेन्ट करने से क्या होता है, जनाब, चैक्स के पेमेन्ट करने पर भी उसे जेल तो जाना ही पडेगा।

लखमीदास—यह क्यो?

सिरिश्तेदार—जनाब, मुकदमा है चीटिंग का। ताजीरात हिन्द की दफा ४२० के मुताबिक। उसने आप सबसे रुपया लेकर यह जानते हुए भी कि उसके चैक्स का पेमेन्ट न होगा, आप लोगो को धोखा देकर आपको झूठे पोस्टडेटेड चैक दिये है। क्यो बैरिस्टर साहब?

बैरिस्टर—ऑफ कोर्स। ऑफ कोर्स।

[नेपथ्य में 'शान्ति शान्ति' आवाज आती है। सिरिश्तेदार और अहलकार जल्दी से अपनी अपनी कुरसी के निकट जाकर खडे हो जाते है। बैरिस्टर, रूपचन्द और उसके साथी अपनी बेंच के सामने अदब से खडे हो जाते हैं। कोर्ट में अब बहुत से आदमी आ चुके है, इनमें कई बैरिस्टर और वकील भी है। सर्वसाधारण अन्य बेंचो के सामने तथा बैरिस्टर वकील लोग कुर्सियो के सामने खडे हो जाते है। पुलिस सार्जेन्ट कमरे के अन्दर आकर रोब से खडा हो जाता है। मजिस्ट्रेट का प्रवेश। मजिस्ट्रेट की अवस्था क़रीब ४० वर्ष की है। वह गोरे रग का ठिगना और मोटा बगाली है। मूँछें नहीं है। सिर के बाल कुछ कुछ सफेद हो गये है। वह काले रग का बाला बरदार अँगरखा, उस पर काला ही चोगा और पतलून पहने हुए है। सिर पर गोल बगाली पगडी है। मजिस्ट्रेट अपनी कुरसी पर बैठता है, सिरिश्तेदार और अहलकार भी अपनी अपनी कुर्सियो पर। रूपचन्द और उसके साथी बेंचो पर बैठते है। रूपचन्द का बैरिस्टर आगे बढकर अन्य बैरिस्टरो और वकीलो के साथ की कुर्सियो पर बैठता है। बाक़ी के लोगो में कुछ तो बेंचो पर बैठते है और कुछ खडे रहते है। कोर्ट में निस्तब्धता छा जाती है। सिरिश्तेदार एक फाइल लेकर मजिस्ट्रेट के सामने रखता है।]

मजिस्ट्रेट—(फाइल देखते हुए) दानमल मुलज़िम को हाज़िर करो !

[चपरासी बाहर जाता है ।]

नेपथ्य में—(ज़ोर से) दानमल मुलज़िम हाज़िर है ?

[मजिस्ट्रेट फाइल देखता रहता है। कुछ ही देर में दो पुलिस कान्सटेबलों के साथ दानमल का प्रवेश। कान्सटेबलों की वर्दी बगाल पुलिस के समान है। दानमल का सारा रूप एकदम बदल गया है। उसका सौन्दर्य, प्रसन्नता और प्रफुल्लता न जाने कहाँ चली गई है। वह नगे सिर है और रूखे बाल फैले हुए है। चेहरे पर हजामत बढ़ गई है। खादी का कुरता और धोती काफी मैले हो गये है। पैरो के जूतों में बहुत कीचड लगा हुआ है। उसके एक हाथ में हथकडी है, जिसकी चेन एक कान्सटेबल के हाथ में है। दानमल आकर मुलज़िम के कटहरे में खड़ा हो अपने अत्यधिक उदास और उतरे हुए मुख को नीचे की तरफ झुका लेता है। दोनों कान्सटेबल उसके इधर उधर कटहरे के बाहर खडे हो जाते है। जनसमुदाय एक टक उसकी ओर देखने लगता है।]

मजिस्ट्रेट—(दानमल की ओर देखकर) तुम जो कुछ केना चाता उसे इस आनरेबिल कोर्ट का सामने के सकता।

[दानमल कुछ देर उसी तरह सिर झुकाये खडा रहता है, कुछ नहीं कहता, फिर धीरे धीरे बोलना शुरू करता है।]

दानमल—(उसी प्रकार सिर झुकाये हुए मानो अपने आपसे कह रहा है) मुझ पर मुकदमा चला है दफा ४२० के अनुसार। (कुछ रुककर) अर्थात् मैंने चीटिंग किया है, धोखा दिया है, मैं चीट हूँ, मैं धोखेबाज हूँ। (फिर कुछ ठहरकर एकाएक सिर उठाकर बडे ऊँचे स्वर में) मैंने धोखा दिया है! मैं धोखेबाज हूँ! किसे धोखा दिया? (सिर घुमाकर कैलाशचन्द्र इत्यादि की तरफ देखते हुए और जोर से) कैलाशचन्द्र को? नीलरतन को? लखमीदास को? कमलाचरण को? (एकदम आवाज गिर जाती है जैसे थक गया हो) इनके गवाह है रूपचन्द जी! (रुककर लबी सांस लेता है। लबी साँस लेते लेते ही उसका सिर फिर झुक जाता है। धीरे धीरे) मैंने धोखा देने का यह रास्ता क्यो पकडा? लडाई के कारण? हाँ, लडाई के कारण। पिछली लडाई में लोगो ने बहुत धन कमाया था। (फिर एकाएक सिर उठाकर जोर से) इसी कलकत्ते में न जाने कितने बने थे। (फिर कुछ रुककर एकाएक सिर झुकाकर) सट्टा? फाटका? हाँ, सट्टा फाटका। कितने बने इस सट्टे फाटके में? इस समय के सभी दानवीर तो। (कुछ रुककर) सट्टा, फाटका? सट्टा, फाटका, याने जुआ। और ये सब जुआडी। पर पर (एकाएक सिर उठाकर जोर से) सफल जुआडी। (जोर से हँसकर) धनी जुआडी! (कुछ रुककर) कौन इन जुआडियो का मान नही करता? कौन

इन धनवानो की इज़्ज़त नही करता ? बड़े बड़े धर्माचार्य, बड़े बड़े समाज-सेवक, बड़े बड़े राजनैतिक नेता . अरे सभी तो, सभी तो, इनके चारो ओर घूमते है। इनकी पद-वन्दना करते है। (फिर एकाएक सिर झुक जाता है। कुछ रुककर धीरे धीरे) कोई धनवान बनना चाहता है स्वय सुख भोगने, कोई धन कमाने की इच्छा करता है नाम बढाने और कोई धन के सग्रह मे प्रयत्नशील होता है दूसरो की सेवा करने। (फिर कुछ रुककर) पहला निकृष्ट, दूसरा मध्यम और तीसरा उत्तम उद्देश्य है। (फिर कुछ रुककर) मेरा उद्देश्य तीसरा था। शायद दूसरा भी अन्त करण में छिपा हो, पर पहला कदापि नही। साधन था जुआ। सफल होता तो तो पहले सफलता मिली भी तब तब मेरी पद वन्दना करने वाले भी काफी काफी से ज्यादा लोग हो गये थे। मेरा मस्तिष्क भी सफलता के नशे से भर गया था। पर नही अन्त में असफल हुआ। (एकदम रुककर चेहरा एकदम नीचे झुका लेता है। कुछ देर बाद एकाएक सिर उठाकर ज़ोर से) इन जुआडी—धनवानों ने, इन जुआडी श्रीमानो के पूजक धर्माचारियो, समाज-सेवको, राजनैतिक नेताओ ने मेरे मन में भी, (रुककर एकदम धीरे से) इस छोटे से हृदय में भी महत्त्वाकाक्षा को, महत्त्वाकाक्षा को उत्पन्न किया। 'महाजनो येनगत स पन्था' के अनुसार मैं भी उसी पथ का

पथिक होने चला, जिस पर इतने बडे बडे जन चले थे। (**कुछ रुककर**) पर पर शायद साध्य से साधन को कम महत्त्व नही है। और सफलता ? सफलता को तो सबसे अधिक। मै बुरे साधन द्वारा भी यदि सफल हो जाता ? पर पर मैं असफल असफल हुआ वह बुरे साधन का उपयोग कर। (**एकदम जोर से मजिस्ट्रेट की ओर देखकर**) मजिस्ट्रेट साहब, मजिस्ट्रेट साहब, आई प्लीड गिल्टी। मै दोष स्वीकार करता हूँ। मै गुनाह मजूर करता हूँ। मैंने चीटिंग किया है। मैंने धोखा दिया है। मैं चीट हूँ। मैं धोखेबाज हूँ। (**कैलाशचन्द्र वगैरह की ओर देखकर**) मैंने कैलाशचन्द्र से एक लाख रुपया लिया है। मैंने नीलरतन से साठ सहस्र टाका पाया है। मुमताजुद्दीन ने मुझे सत्तर हजार रुपया दिया है। लखमीदास का, मेरे स्कूल के सहपाठी लखमी दास का मुझ पर पैंतालीस हजार रुपया पावना है। कमलाचरण, मेरे कालेज के साथी कमलाचरण ने भी मुझे चालीस हजार रुपये देने की कृपा की है। और (**मजिस्ट्रेट की तरफ देख**) और मजिस्ट्रेट साहब, यह सब रुपया, जैसा मेरे मुनीम रूपचन्द ने अपनी गवाही में कहा, उनके सामने (**थकावट के कारण एकदम धीरे धीरे**) उनके सामने, मुझे कैश मिला है, भुगतान में देने के लिये। (**और धीरे**) इन सब को धोखा देने के लिये मैंने इन्हे, यह जानते हुए भी

कि ये चैक न सिकरेंगे, झूठे पोस्टडेटेड चैक दिये हैं। (एकदम ज़ोर से मजिस्ट्रेट की तरफ देखकर) दीजिए, मजिस्ट्रेट साहब, दीजिए, मुझे ऐसी सख्त ऐसी सख्त सज़ा दीजिए कि चाहे सारा समाज, धर्माचार्य, समाज-सेवक, और दरिद्रनारायन के झूठे, पर लक्ष्मी नारायण के सच्चे पूजक ये राजनैतिक नेता, रुपये का पूजन करें, श्रीमानो का चरण चुबन करें, पर मेरे मन में, मेरे छोटे से हृदय में, इसकी प्राप्ति की अभिलाषा के अवशेष का अवशेष भी शेष न रहे। मजिस्ट्रेट साहब मजिस्ट्रेट साह

[दानमल एकाएक कटहरे में गिर पडता है। कान्सटेबल दौडकर दानमल को कटहरे से उठाते हैं। कोर्ट में कुछ हल्ला मचता है।]

चपरासी—शान्ति ! शान्ति !

मजिस्ट्रेट—(ज़ोर से) कोई डाक्टर ?

[जनसमुदाय में से एक बगाली युवक डाक्टर, जो अग्रेज़ी वस्त्रो में है, दानमल की तरफ बढ़ता है। दानमल का शरीर दोनों कान्सटेबलो के हाथो में है। डाक्टर पहले उसकी नब्ज़ देखता है। फिर तेठासकोप से उसका हार्ट।]

डाक्टर—(ज़ोर से) ओ ! मूर्छा नेई ! हार्ट फेल हो गिया।

[रूपचन्द और उसके साथी एक दूसरे की तरफ

देखते है। कोर्ट में एकदम हल्ला मचता है।]

जनसमुदाय में का एक वृद्ध—रुपये की चोट थी।

दूसरा वृद्ध—रुपये की चोट ऐसी ही होती है।

एक युवक—(दोनो वृद्धो की तरफ घृणा से देखते हुए) बेवक़ूफ !

[वह युवक शीघ्रता से दानमल की लाश के पास पहुँचता है। मजिस्ट्रेट का प्रस्थान। कान्सटेबल दानमल की लाश को धीरे धीरे कोर्ट के बाहर ले जाने लगते है। भीड उसके पीछे पीछे जाने लगती है।]

यवनिका-पतन

समाप्त

कंगाल नहीं

पात्र, स्थान

पात्र

राजमाता—सिलापरी गाँव की मालगुजारिन, राजगोंड वंश की राजमाता

बड़े राजा
मँझले राजा } राजमाता के तीन पुत्र
छोटे राजा

बड़ी रानी—बड़े राजा की पत्नी

मँझली रानी—मँझले राजा की पत्नी

राजकुमारी—राजमाता की पुत्री

स्थान—सिलापरी गाँव (जिला सागर, मध्यप्रान्त)

नोट—इस नाटक की कथा को मध्य प्रान्त के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता रायबहादुर हीरालाल ने लेखक को बताई थी। कथा एक सत्य घटना है।

कंगाल नहीं

स्थान—सिलापरी गाँव मे राजमाता का घर

समय—सन्ध्या

[एक तरफ को राजमाता के घर की खपरैल परछी दिखाई देती है, जिसके कई खपरे टूट गये है। परछी में एक ओर घर के भीतर जाने का दरवाजा दिखता है, जिसके किवाडो की लकडी भी टूट गई है। यह दरवाजा खुला हुआ है और इसके अन्दर घर के छोटे से मैले कुचैले कोठे का एक हिस्सा दिखाई देता है। परछी के सामने मैदान है। मैदान के एक तरफ दूर पर गाँव के कुछ झोपडे दिखते है और दूसरी तरफ खेत का एक हिस्सा, जिसमें छोटी छोटी विरल सूखी सी फसल खडी है। परछी में एक फटे से बोरे पर राजमाता बैठी है। उनकी उम्र क़रीब ५० साल की है। रग साँवला है। मुख और शरीर पर कुछ झुरियाँ पड गई है। बाल आधे से अधिक सफेद हो गये है। शरीर बहुत दुबला पतला है। शरीर पर वे एक मैली सी लाल बुदेलखडी सूती साडी पहने है, जो कई जगह से फटी हुई है और जिसमें कई जगह थिगडे लगे है। राजमाता के पास बडी रानी और मॅझली रानी जमीन पर ही बैठी हुई है। दोनों साँवले रग

की है। बडी रानी की उम्र क़रीब पच्चीस वर्ष और मॅझली रानी की क़रीब बीस वर्ष की है। दोनो युवतियाँ होते हुए भी कृश है और उनकी आँखो के चारो तरफ के गढ़ों और सूखे ओठो से जान पडता है कि उन्हें पेट भर खाने को नहीं मिलता। दोनो राजमाता के समान ही लाल रग की साडियाँ पहने है, जो कई जगह से फटी हुई और थिगडैल भी हैं। दोनो के हाथो में मोटी मोटी लाख की एक एक चूडी है। तीनो में बातचीत हो रही है। राजमाता की आँखों में आँसू भरे है।]

बडी रानी—कहाँ तक रज करोगी, माँ, और रज करने से फायदा ही क्या होगा ?

राजमाता—जानती हूँ, बेटी, पर जानने से क्या होता है, जो बात रज की है, उसपर रज आये बिना नही रहता।

मॅझली रानी—पर, माँ, जो बात बस की नही, उसपर रज करना फजूल है।

राजमाता—बिना बस की बात ही तो ज्यादा रज पहुँचाती है।

[घर के भीतर से छोटे राजा और राजकुमारी हाथ में एक एक तस्वीर लिये हुए आते है। छोटे राजा की उम्र क़रीब बारह वर्ष की है। वह साँवले रग और ठिगने क़द का दुबला पतला लडका है। एक मैली और फटी सी धोती

पहने है, जो घुटने के ऊपर तक चढ़ी है। ऊपर का वदन नगा है। राजकुमारी क़रीव ८ साल की सांवले रग की दुबली पतली लडकी है। एक मैली सी लाल रग की फटी हुई साडी पहने है। साडी इतनी फट गई है कि उसके शरीर का अधिकाश हिस्सा साडी में से दिखता है।]

छोटे राजा—माँ, (राजकुमारी की ओर इशारा कर) यह कहती है दुर्गावती ने वावन गढ जीते थे, मैं कहता हूँ सग्रामशाह ने। फैसला तुम करो, मै सच्चा हूँ या ये ?

राजकुमारी—हाँ, तुम फैसला कर दो, माँ।

राजमाता—वेटी, सग्रामशाह ने वावन गढ जीते थे, दुर्गावती ने नही।

छोटे राजा—देखा, मैंने पहले ही कहा था, यह वीरता आदमी कर सकता है, औरत नही।

[राजकुमारी उदास हो जाती है।]

राजमाता—(राजकुमारी को उदास देखकर) उदास हो गई, वेटी, पर हमारे कुल में तो औरतें आदमियो से कम वीर नही हुई। मग्रामशाह ने वावन गढ जीते तो क्या हुआ, दुर्गावती उनसे कम वीर नही थी।

वडी रानी—हाँ, सग्रामशाह ने वावनगढ जीतकर वीरता दिखाई तो दुर्गावती ने अपने प्रान देकर।

मँझली रानी—हाँ, जीत में वीरता दिखाना उतना कठन नही, जितना हार में।

[राजमाता रो पडती हैं ।]

बडी रानी—माँ, फिर वही, फिर वही ।

छोटे राजा—(राजमाता के पास जाकर उनके निकट बैठ कर) माँ, तुम रोती क्यो हो ? मैं सग्रामशाह से भी बडा वीर बनूँगा। उनने बावन गढ जीते थे, मै बावन शहर जीतूँगा ।

राजकुमारी—(राजमाता के पास जाकर) और, माँ, मै दुर्गावती से भी बडी बीर बनूँगी ।

छोटे राजा—(सग्रामशाह की तस्वीर दिखाते हुए) देखो, माँ, सग्रामशाह से मैं कितना मिलता जुलता हूँ। अगर तुम मेरी इस फटी धोती की जगह जैसे कपडे ये पहने है, वैसे पहना दो, मुझे तलवार मँगवा दो, और ऐसा ही घोडा खरीद दो, तो मैं अकेला बावन शहर जीत लाऊँ।

राजकुमारी—और, माँ, देखो, मै दुर्गावती से कितनी मिलती हूँ । अगर तुम मुझे भी दुर्गावती जैसे कपडे पहना दो, हथियार मँगवा दो, और जैसे हाथी पर ये बैठी हैं, वैसा हाथी मँगवा दो, तो मै भी दुर्गावती से बडी वीर बन जाऊँ।

[राजमाता के और अधिक आँसू गिरने लगते हैं।]

बडी रानी—(छोटे राजा और राजकुमारी को हाथ पकड कर उठाते हुए) अच्छा, राजा जी, और, बाई जी, मेरे साथ चलो, मै तुम दोनो की सब चीजें मँगा दूँगी ।

[दोनो को लेकर वडी रानी घर के भीतर जाती है। मँझली रानी राजमाता के निकट सरककर अपनी फटी साडी से राजमाता के आँसू पोछती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

मँझली रानी—माँ, थोडा तो धीरज रखो।

राजमाता—वहुत जतन करती हूँ, वेटी, धीरज रखने के वहुत जतन करती हूँ, पर जव इन बच्चो की ऐसी वातें सुनती हूँ, तव तो हिरदे मे ऐसा सूल उठता है जैसा भूखे पेट और नगे तन रहने पर भी नही। (कुछ ठहर कर) और, वेटी, एक वात जानती है ?

मँझली रानी—क्या, माँ ?

राजमाता—ये वच्चे ही इन तस्वीरो को लिये घूमते हैं और ऐसा सोचते और कहते है, यह नही, तेरे मालक और वडी वहू के मालक भी जव छोटे थे तव वे भी इसी तरह इन तस्वीरो को लिये घूमते और यही सव कहते फिरते थे। और वे ही नही, मेरे मालक, उनके वाप, और उनके वाप, और उनके वाप, सव यही सोचते और कहते थे।

मँझली रानी—आह !

[राजमाता लवी साँस लेती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

राजमाता—वेटी, सग्रामशाह और दुर्गावती को पीढियाँ वीत गईं। गिरती में सव ने वढ़ती की सोची। वीती को

सोचा, भवस के लम्बे लम्बे विचार किये, पर वरतमान किसी ने न देखा और आज (कुछ रुककर) आज, बेटी, बावनगढ के विजेता सग्रामशाह के कुल को बावन छदाम भी नसीब नही।

[मँझले राजा का खेत की तरफ से प्रवेश। मँझले राजा की उम्र २२, २३ वर्ष की है। रग सांवला और शरीर दुबला पतला तथा ठिगना है। एक मैली और फटी सी धोती को छोडकर और कोई वस्त्र शरीर पर नहीं है। हाथ में थोडे से गेहूँ के दाने है, जो बहुत पतले पड गये हैं। उन्हें देखकर मँझली रानी घर के भीतर चली जाती है।]

मँझले राजा—(गेहूँ के दानो को राजमाता के सामने पटक कर भर्राये हुए स्वर में) माँ, सब हार में झिरी पड गई। बीज निकलना भी कठन है।

राजमाता—(लम्बी साँस लेकर) तब तब तो वसूली भी न होगी।

मँझले राजा—वसूली वसूली . माँ, लगान तो इस साल सरकार ने मुल्तवी कर दिया।

राजमाता—(एकदम घबड़ाकर खडे होते हुए) मुल्तवी हो गई ?

मँझले राजा—हाँ, माँ, आज ही हुकम आया है।

राजमाता—तो सिलापरी गाँव से जो एक सौ बीस रुपया बचते थे, वे भी न आयेंगे ?

मँझले राजा—इस वरस तो नही, माँ।

राजमाता—फिर हम लोग क्या खायँगे, पियेंगे ?

मँझले राजा—पिनसन के सरकार एक सौ बीस रुपया साल देती है न ?

राजमाता—सात जीव एक सौ बीस रुपया साल में गुजर करेंगे ? महीने में दस रुपये, एक जीव के लिये तीन पैसे रोज ?

मँझले राजा—वडे भाई ने एक उपाय और किया है, माँ।

राजमाता—(उत्सुकता से) क्या, वेटा ?

मँझले राजा—तुम धीरज रखकर वैठो तो बताऊँ।

राजमाता—(वैठते हुए) जल्दी वता, बेटा, मेरा कलेजा मुँह को आ रहा है।

मँझले राजा—माँ, अकाल के कारन सरकार ने काम खोला है न ?

राजमाता—हाँ, जहाँ कगाल काम करते हैं।

मँझले राजा—पर जानती हो, माँ, उन्हें क्या मिलता है ?

राजमाता—क्या ?

मँझले राजा—हमसे बहुत जादा। चार रुपया महीना, एक एक को दो आने रोज।

राजमाता—अच्छा ?

मँझले राजा—हम सात हैं। वडे भाई ने अरजी दी है

कि हम सब को अकाल के काम में जगह दी जाय। माँ, वह अरजी मजूर हो गई तो हम में से एक एक को दो दो आने रोज, सुना, दो दो आने रोज, सब को मिलाकर अट्ठाईस रुपया महीना, तीन सौ छत्तीस रुपया साल, सुना, तीन सौ छत्तीस रुपया साल मिलेगा।

[बड़े राजा का खेत की ओर से प्रवेश। वे अपने भाई से मिलते जुलते है। क़रीब २८ वर्ष की उम्र है। वेष-भूषा उन्हीं के सदृश है। वे अत्यन्त उदास है। आकर राजमाता के पास बैठ जाते है।]

राजमाता—बेटा, मँझला कहता था कि तूने सरकार को एक अरजी दी है?

बड़े राजा—**(लबी साँस लेकर)** हाँ दी थी, माँ।

राजमाता—**(उत्सुकता से)** फिर क्या हुआ, बेटा, मजूर हो गई?

बड़े राजा—नही।

मँझले राजा—नही हुई, तो हम कगालो से भी बदतर है?

बड़े राजा—इसीलिए तो नही हुई कि हम कगालो से कहीं बढकर है।

राजमाता—बेटा, तेरी बात समझ में नही आती।

बड़े राजा—माँ, हमे पिनसन मिलती है, हम महाराजाधिराज राजराजेश्वर सग्रामशाह और महारानी दुर्गावती के

कुल के है, हमारी बडी इज्जत है, हमारा बडा मान है, हमारी आमदनी चाहे तीन पैसा रोज ही हो, पर हमें कगालो की रोजनदारी, दो आना रोज, कैसे मिल सकती है? हमारी भरती कगालो में कैसे की जा सकती है?

[बडे राजा ठठाकर हँसते है और लगातार हँसते रहते है। राजमाता के आँसू बहते है और मँझले राजा उद्विग्नता से बड़े राजा की ओर देखते है।]

यवनिका-पतन

समाप्त

वह मरा क्यों ?

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र—

हरदत्त—कन्टूनमेन्ट बोर्ड का वाइस प्रेसीडेन्ट

कर्नल सिमसन—मिलिटरी का बड़ा डाक्टर

कैप्टिन तारासिंह—मिलिटरी का छोटा डाक्टर

स्थान—एक कन्टूनमेन्ट

वह मरा क्यों ?

पहला दृश्य

स्थान—कन्टूनमेन्ट कचहरी का एक कमरा

समय—प्रात काल

[कमरा आधुनिक आफिस के ढग पर सजा हुआ है। राइटिंग टेविल की आफिस चेअर पर हरदत्त बैठा हुआ है, उसके सामने की दो कुर्सियो पर कर्नल सिमसन और केप्टिन तारासिह। तीनो अग्रेजी पोशाक पहने है। उम्र के सब अधेड हैं। हरदत्त हिन्दू, सिमसन अग्रेज और तारासिह सिख है।]

सिमसन—वो मरा क्यो ?

तारासिह—हाँ, वह मरा क्यो ?

हरदत्त—सचमुच वह मरा क्यो ?

तारासिह—गजब हो गया, सर !

हरदत्त—सितम हो गया, हुजूर !

सिमसन—थर्टी फाइव ईयर्स का एज में गोरा सोलजर का मरना बेशक एक टाजुब का बाट !

तारासिह—पोस्ट मारटम में भी कोई पता नहीं लगा, सर। बैरेक्स में कोई एपेडेमिक नही और सेनीटेशन के

इन्तजाम की आपने जाँच कराली।

सिमसन—कल राट टक वो बेशक आचा ठा।

तारासिंह—हाँ, सर, शाम को वैजीटेविल मारकेट गया, स्वीटमीट शाप्स पर वैठा, और सिनेमा देखा।

सिमसन—इन सव जगा का जाँच करना होगा।

हरदत्त—तव अभी चलिए, हजूर, जिससे दोपहर के पहले जाँच खत्म हो जाय।

सिमसन—बेशक और एकडम जाना चाये। जिस टरा कमसरियट का ठेकेदार को हम लोग ने एकडम हवालाट में वन्ड कर डिया उसी टरा इन सव जगा का जाँच वी एकडम होना चाये।

तारासिंह—विना खवर दिये, सर, जिससे अगर कहीं कुछ गडवड हो तो वहाँ के लोग उसको ठीक न कर सकें।

सिमसन—बेशक ठीक।

[तीनो खड़े होते हैं। दृश्य बदलता है।]

दूसरा दृश्य

स्थान—कन्टूनमेन्ट का वैजीटेविल मारकेट

समय—प्रात काल

[मारकेट का कुछ हिस्सा दिखाई देता है जहाँ फल, साग भाजी इत्यादि की दूकानें लगी हैं। कुछ कूंजडे और

कूंजड़िन दूकानों पर बैठे हुए हैं। कुछ ख़रीददार इधर उधर आ जा रहे हैं और कुछ खड़े होकर साग भाजी, फल इत्यादि ख़रीदते हैं। दूर पर हरदत्त, सिमसन और तारासिंह प्रवेश करते हुए दिखाई पड़ते हैं। ये लोग एक एक दूकान को ग़ौर से देखते हुए धीरे धीरे नज़दीक आ रहे हैं। इन्हें देखकर दूकानदार खड़े हो होकर झुक झुक कर सलाम करते हैं और कई ख़रीददार भी। कुछ ख़रीददार इनका रास्ता छोड़कर अलग खड़े हो जाते हैं। सिमसन निकट की कूंजड़े की एक छोटी सी दूकान पर रुक जाता है। यह कूंजड़ा छोटे छोटे हरे रंग के कुम्हड़े बेच रहा है, जो आधे आधे कटे हुए उल्टे रखे हैं।]

सिमसन—(तारासिंह को एक तरफ़ लेकर उन कुम्हड़ों को दिखाकर धीरे से) वो क्या है?

तारासिंह—(उसी तरफ़ ग़ौर से देखते हुए) वो, सर?

सिमसन—हाँ।

तारासिंह—(कुछ सोचते हुए) कुछ ठीक समझ में नहीं आता, सर।

सिमसन—टारटाइज़ हो सकटा।

तारासिंह—टारटाइज़?

सिमसन—बेशक कच्चा टारटाइज़।

[वह कूंजड़ा इन लोगों को इस तरह ग़ौर से अपनी

तरफ देखते और वातें करते हुए देखकर जल्दी जल्दी अपने कुन्हडे बाँध कर वहाँ से उठता है।]

सिमसन—ओ ! वो भागटा !

तारासिंह—(जोर से उस कुंजड़े से) ठैरो, तुम्हारे सामान की जाँच करना है।

[कुंजडा भागता है। तारासिंह उसके पीछे दौडता है। मार्केट में खलवली मच जाती है।]

सिमसन—टारटाइज, वह वेशक टारटाइज है।

हरदत्त—टारटाइज क्या होता है, हुजूर।

सिमसन—वो जो पानी में रेटा है।

हरदत्त—पानी में (रुक जाता है।)

सिमसन—आप समजा नेई। (हाथ की उँगुलियाँ फैला फिर उन्हें सिकोड़ और फिर फैला कर) जो इस टरा अपना नेक् और फीट को वार निकालटा और अन्डर डालटा और फिर वार निकालटा।

हरदत्त—कोई जानवर ?

सिमसन—वेशक जानवर। आप अवी वी नेई समजा। टारटाइज, मिस्टर हरडट्ट, टारटाइज। और ये डोकानडार वेशक कच्चा टारटाइज वेचटा ठा।

हरदत्त—(आश्चर्य से) कच्चा टारटाइज, हुजूर ?

सिमसन—वेशक कच्चा टारटाइज, इसीलिए टो वो भागा और इसी को खाकर वो गोरा मरा।

हरवत्त—इसी को खाकर वह गोरा मरा ?

सिमसन—वेशक इसी को खाकर।

[तारासिह कुंजडे को पकडकर लाता है। कुम्हड़े कुंजडे के कपडे में बंधे है।]

सिमसन—टुम टारटाइज्ञ वेचटा ?

कुंजडा—(घवडाकर डरते हुए)टार टार . टार!

सिमसन—(चिल्लाकर)टार टार क्या ? वेशक कच्चा टारटाइज्ञ वेचटा। टोमने गोरा सोल्जर का खून किया।

कुंजडा—(और भी घवडाकर) खून!

सिमसन—वेशक खून।

कुंजडा—(एकदम घवडाकर कांपते हुए) टार टार खून।

तारासिह—टारटाइज्ञ माने कछुआ, समझा, कच्चा कछुआ।

कुंजडा—(हिम्मत से) कछुआ नही, हुजूर, मैं तो कुम्हडा वेचता हूँ।

सिमसन—टारटाइज्ञ को हिन्डोस्टानी में कुम्हडा केटा ?

कुंजडा—(अपनी गठरी खोलकर कुम्हडो को दिखाते हुए) हुजूर ये कछुए नही, कुम्हडे है।

[सिमसन एक कुम्हडे को हाथ में लेकर आश्चर्य से उसे इधर उधर घुमाकर देखता है। कुंजडा आंख मिचकाते हुए अपने एक साथी की तरफ, तारासिह मुंह फाडकर सिमसन

की ओर और हरदत्त मुस्कराते हुए मुंह फेर कर एक दूसरे दूकानदार की तरफ देखता है। बाजार के कई लोग मुंह फेर फेर कर हँसते है।]

सिमसन—(गभीरता से सोचते हुए) तब वो मरा क्यो ?

[दृश्य बदलता है।]

तीसरा दृश्य

स्थान—बाजार

समय—प्रात काल

[सड़क के एक तरफ दूकानें दिखाई देती है। ज्यादा-तर दूकानें हलवाइयो की है। अपनी अपनी दूकानो पर दूकानदार बैठे है। अनेक मनुष्य आ जा रहे है। कुछ लोग दूकानों पर खडे होकर सौदा ख़रीद रहे है। दूर पर हरदत्त सिमसन और तारासिह आते हुए दिखाई देते है। ये लोग गौर से हलवाइयो की दूकानें देखते देखते नजदीक आ रहे है। इन्हें देखकर कई दूकानदार खड़े हो होकर इन्हें सलामें करते है। कई आने जाने वाले भी खड़े हो जाते है और इनमें से भी कई इन्हें सलाम करते है। कुछ निकट आकर तीनों खड़े हो जाते है।]

सिमसन—(जोर से) कल शाम को हमारा रेजीमेन्ट

का एक गोरा सोल्जर ने किसका डोकान का मिटाई खाया ?

[दूकानदार चकपका कर एक दूसरे की तरफ देखते है। सिमसन की बात का कोई उत्तर नहीं देता।]

सिमसन—(जोर से) टुम लोग अगर नेई वटलायगा टो टुम सवका डोकान वन्ड करा डिया जायगा।

[दूकानदार फिर सव एक दूसरे की तरफ देखते है। एक समझदार सा हलवाई अपनी दूकान छोडकर इन तीनो के पास आता है और सलाम करता है।]

सिमसन—टोमारा डोकान का खाया ?

हलवाई—किस सोल्जर ने हुजूर ?

सिमसन—जो राट को मर गिया ?

हलवाई—यह मै, या हम लोगो मे से कोई भी, कैसे कह सकते है कि उन सोल्जर साहब ने मिठाई खाई या नही और खाई तो किसकी दूकान से ?

सिमसन—क्यूँ ?

हलवाई—हुजूर, हम लोग खरीददारो के नाम तो लिखते नही हैं ?

सिमसन—(आश्चर्य से) नाम नेई लिखटा, टो विल कैसा वनाटा ?

हलवाई—विल !

सिमसन—वेशक विल। चूआ का विल नेई, खाना का विल।

तारासिंह—हाँ, भाई, रुक्के पर हिसाब लिख खरीददारो को उसे देकर ही तो रुपया वसूल करते होगे ?

हलवाई—हम लोग कोई बिल नही बनाते, हुजूर।

सिमसन—खाने का बिल नेई बनाटा ?

हलवाई—जी, नही।

सिमसन—टो रुप्या कैसा लेटा ?

हलवाई—सौदा देते है, हुजूर, और हाथ के हाथ रुपया ले लेते हैं।

सिमसन—ओ ! टुम वेशक जानटा कि उस सोल्जर ने किसका डोकान से मिटाई खाया।

हलवाई—हुजूर, मैं बिलकुल नही जानता।

सिमसन—टोमारा डोकान का कल किसी सोल्जर ने मिटाई खाया ?

हलवाई—कई ने हुजूर।

सिमसन—टो जो मर गिया उसने बी वेशक टोमारा डोकान का मिटाई खाया। टोमने उसका खून किया।

हलवाई—(घबडाकर) खून !

सिमसन—वेशक खून।

हलवाई—(और भी घबडाकर) हुजूर।

सिमसन—हम टोमारा डोकान का जाँच करेगा।

[सिमसन आगे बढ़कर उस हलवाई की दूकान की

मिठाइयाँ देखता है। तारासिह भी उसकी मदद करता है। हरदत्त खडा रहता है। बहुत से आदमी इधर उधर खडे हो जाते है। वहुत से घबडा कर इनकी तरफ देखते है।]

सिमसन—(पिश्ते की हरी बरफियों को देखकर) ये सडा मिटाई वेचटा ?

हलवाई—सडी मिठाई !

सिमसन—वेशक सडा मिटाई। इसी को खाने के सवव वो गोरा मर गिया।

तारासिह—(सिमसन को एक तरफ लेकर धीरे से) सर, वह सडी मिठाई नही है, वह तो वडी बढ़िया हिन्दुस्थानी मिठाई है।

सिमसन—वरिया हिन्डोस्टानी मिटाई ?

तारासिह—हाँ, सर, पिश्ते की वरफी।

सिमसन—(गभीरता से सोचते हुए) तव वो मरा क्यो ?

[हरदत्त इनके निकट आता है। अधिकाश मनुष्य इनकी तरफ देखते है। दृश्य ववलता है।]

चौथा दृश्य

स्थान—सिनेमा हाल

समय—प्रात काल

[सिनेमा हाल का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। एक तरफ के दरवाज़े, उनपर 'वेन्टीलेटर', सीलिंग से लटकते हुए बिजली के कुछ पखे और बैठने को बेंचो की कुछ क़तारें दिखती है। हरदत्त, सिमसन और तारासिंह एक दरवाज़े से प्रवेश करते है। उनके साथ सिनेमा का मैनेजर है। वह नौजवान आदमी है और अंग्रेजी ढग की पोशाक पहने है।]

सिमसन—(आगे आकर सिनेमा के मैनेजर से) टो आप नेई के सकटा कि वो सोल्जर किस जगा बेटा ठा ? और उसका चारो टरफ कोन लोग बेटा ठा ?

मैनेजर—मै तो यह भी नही कह सकता कि वह सिनेमा देखने आया था या नही !

सिमसन—वो बेशक आया ठा, ये हम के सकटा, इसमें आपका नो नेई चल सकटा, नो केने से आपका वचट वी नेई हो सकता।

मैनेजर—वचत का सवाल नही है, कर्नल साहव, सवाल तो यह है कि.

सिमसन—(बीच ही में ज़ोर से) हम इस मामला पर बेहस नेई करना चाटा, हम ये जानना चाटा कि वो कहाँ बेटा ठा ? और उसका चारो टरफ कोन लोग ठा ?

मैनेजर—मै इसके सिवाय और कुछ नही कह सकता कि सोल्जर ज्यादातर आठ आने की सीटो पर बैठते है। वह

आया होगा तो इसी क्लास में वैठा होगा।

सिमसन—सोल्जर्स के सिवा डूसरा लोग वी इस क्लास में वेटा ठा?

मैनेजर—वहुत लोग।

सिमसन—ओ! टो उसको किसीका कोई इन्फैक्शन लगा।

मैनेजर—इन्फैक्शन, कर्नल साहव?

सिमसन—वेशक इन्फैक्शन। इन्फैक्शन सांस से लग सकटा। हवा एक का वॉडी को छूकर डोसरा का वॉडी छुए, उससे लग सकटा।

[कुछ देर सव चुप रहते है।]

सिमसन—(कुछ सोचते हुए) कल वोट भीर ठा? आप झूठ नेई वोलेगा, क्यूंकि किटना आडमी ठा, इसका पटा टिकिट का विकरी से लग जाइगा।

मैनेजर—मै झूठ हरगिज नही वोलूंगा, कर्नल साहव, कल काफी भीड थी।

सिमसन—टो वो भीर में सफोकेट हो गिया।

मैनेजर—पर पखे चल रहे थे, कर्नल साहव।

सिमसन—(पखों की तरफ देखकर) सव खा चलटा ठा?

मैनेजर—जी हां।

सिमसन—ज़ोर से?

मैनेजर—जी हाँ, पूरी स्पीड से।

सिमसन—ओ! टो वो सरडी खा गिया।

मैनेजर—इस गरमी की मौसम में विजली के पखो से इतनी सरदी तो किसी को नही लग सकती, कर्नल साहब, कि वह सिनेमा से लौटते ही मर जाय।

सिमसन—ये आप ले मैन क्या समजटा। इन बाटो को हम डाक्टर लोग जानटा, आप नेई जानटा कि बिजली का पखा कबी कबी केटना नोकसान पोचाटा।

[कुछ देर सब लोग चुप रहते हैं।]

सिमसन—(कुछ सोचते हुए) कल का पिक्चर केसा ठा?

मैनेजर—अच्छा था।

सिमसन—सेनसेशनल?

मैनेजर—हाँ, काफी सेनसेशनल था।

सिमसन—टो हार्ट पर उसका वेशक असर हो सकटा, उससे मर सकटा।

मैनेजर—इतना सेनसेशनल नही था, कर्नल साहब, कि एक सोल्जर के हार्ट पर इतना असर हो कि वह सिनेमा से लौटते ही मर जाय।

सिमसन—(कुछ सोचते हुए) अगर पिक्चर डिप्रेसिंग ठा टो उससे बी हार्ट बेशक सिक हो सकटा।

मैनेजर—(चिढ़कर) मैं क्या कहूँ।

सिमसन—(कुछ सोचते हुए) देखिये, मिस्टर मैनेजर, आप फौरन पिक्चर का ट्रायल दीजिए।

तारासिंह—यह बिलकुल ठीक है, सर।

हरदत्त—हाँ, देखें उससे हम लोगो के दिल पर भी कैसा असर पडता है।

मैनेजर—बहुत अच्छा, मै अभी ट्रायल देता हूँ।

सिमसन—बेशक, आखिर वो मरा क्यो ?

[दृश्य बदलता है।]

पांचवॉ दृश्य

स्थान—कन्टूनमेन्ट कचहरी का एक कमरा

समय—प्रात काल

[कमरा पहले दृश्य वाला कमरा ही है। राइटिंग टेबिल की ऑफिस चेअर पर हरदत्त बैठा हुआ है। उसके सामने दस्तख़त के लिये कई काग़ज रखे है। उसकी बग़ल मे ऑफिस का हेड क्लार्क खडा है। क्लार्क की अवस्था क़रीब ५० वर्ष की है। पोशाक अग्रेजी ढग की है।]

हरदत्त—(टेबिल पर रखे हुए एक काग़ज को देखते हुए) तो इस आर्डर के मुताबिक मुझे भी चौबीस घन्टे के भीतर अपना मकान ख़ाली करना पडेगा ?

हेड क्लार्क—जी हाँ, सारा कन्टूनमेन्ट खाली होगा, तो आप ही अपने मकान में कैसे रहेंगे ?

हरदत्त—चौबीस घन्टे के अन्दर लोगो को म्य बीवी बच्चो के कही रहने का इन्तजाम करना है। (बादल की गरज सुनाई पडती है) यह लीजिये, विना मौसम पानी बरसने वाला है। शायद ओले भी गिरें।

हेड क्लार्क—इससे क्या, सरकार ?

हरदत्त—और सारे कन्टूनमेन्ट को टैक्स पेयर्स के रुपये से डिसइन्फैक्ट किया जायगा, बिना यह जाने कि किस बीमारी के लिये डिसइन्फैक्ट किया जा रहा है। (एक कागज़ पर दस्तख़त करता है, जिसे हेडक्लार्क उठाता है।)

हेड क्लार्क—कमसरियट के ठेकेदार साहब की गिरफ्तारी क्या यह जानकर की गई है कि उन्होने फलाँ चीज़ बुरी सप्लाई की ?

हरदत्त—(दूसरे कागज़ पर दस्तख़त करते हुए, जिसे हेड क्लार्क उठाता है) और यह दूसरा आर्डर है मेहतरो को कि पैखाना गाडा न जाय, कचरा जलाया न जाय, क्योकि उस सब की भी जाँच होगी।

हेड क्लार्क—जी हाँ।

हरदत्त—(तीसरे कागज़ पर दस्तख़त करते हुए, जिसे हेड क्लार्क उठाता है) और यह तीसरा आर्डर है बाज़ार की सारी मिठाई, और सागभाजी की ज़प्ती का, क्योकि

उसकी भी जाँच होगी।

हेड क्लार्क—जी, सरकार।

हरदत्त—(लबी साँस लेकर) तो यह कन्टूनमेंट है, हेड क्लार्क साहब!

हेड क्लार्क—जी हाँ, और यहाँ एक गोरे की जान की क़ीमत

[तारासिंह का शीघ्रता से प्रवेश।]

तारासिंह—(हरदत्त की टेबिल के निकट आते हुए) वे तीनो आर्डर अभी इश्यू तो नहीं हुए, वाइस प्रेसीडेन्ट साहब?

हरदत्त—जी नही, पर मैंने अभी दस्तखत कर दिये हैं, और वे इश्यू हो ही रहे हैं।

तारासिंह—(कुरसी पर बैठते हुए) पर अब उनकी जरूरत नहीं है।

हरदत्त—(आश्चर्य से) यह क्यो, क्या वह गोरा जी उठा?

तारासिंह—जी नही, लेकिन मालूम हो गया कि वह मरा क्यो!

हरदत्त—(आश्चर्य से) अच्छा!

तारासिंह—(जेब से एक चिट्ठी निकालकर हरदत्त को देते हुए) कर्नल सिमसन ने आपके नाम यह चिट्ठी दी है। आपको उसे पढकर ताज्जुब होगा कि वह मरा क्यो!

हरदत्त—(चिट्ठी लेते हुए) मै तो इतनी अंग्रेजी जानता नही, आप ही बताइए, वह मरा क्यो ?

तारासिंह—(कुरसी पर टिकते हुए अत्यन्त गभीरता से) जनाब, वह मरा है अपनी मेम साहिबा की एक खास बीमारी के एक खास इन्फैक्शन से ?

हरदत्त—(आश्चर्य से चिल्लाकर) अपनी मेम साहिबा की एक खास बीमारी के एक खास इन्फैक्शन से ?

हेड क्लार्क—(आश्चर्य से चिल्लाकर) अपनी मेम साहिबा की एक खास बीमारी के एक खास इन्फैक्शन से ?

तारासिंह—जी हाँ, मालूम हो गया कि वह मरा क्यो ?

यवनिका-पतन

समाप्त

अधिकार-लिप्सा

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र

राजा अयोध्यासिंह—एक जमींदार

कुमार काशीसिंह—अयोध्यासिंह का लडका

दीवान प्रयागसिंह—अयोध्यासिंह का दीवान

डाक्टर घोष—अयोध्यासिंह का फेमिली डाक्टर

राजवैद्य गगाधर राव आयुर्वेदाचार्य—अयोध्यासिंह का वैद्य

हकीम इब्राहीम हकीमुलमुल्क—अयोध्यासिंह का हकीम

पडित करुणाशकर ज्योतिषाचार्य—अयोध्यासिंह का ज्योतिषी

पडित कामरूप भट्टाचार्य—अयोध्यासिंह का तान्त्रिक

सर्दार निहालसिंह—म्युनिस्पैलटी का प्रेसीडेन्ट

सेठ गिरधारीलाल—नगर का व्यापारी

स्थान—एक नगर

अधिकार-लिप्सा

उपक्रम

स्थान—राजा अयोध्यासिंह के मकान का कमरा

समय—सन्ध्या

[कमरे के तीन तरफ की दीवालें नीलेथूये के रंग से हल्की नीली रंगी हुई हैं। दीवालों में कई दरवाजे और खिड़कियाँ हैं, जिनके चौखट और पल्ले पुराने ढंग के लकड़ी के बने हुए हैं। इनमें से कुछ बन्द हैं और कुछ खुले। खुले दरवाजे और खिड़कियों से बाहर के फल के दरख्तों के बगीचे का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। कई दरख्तों में आम फले हुए हैं। बगीचे को डूबते हुए सूर्य की किरणें रंग रही हैं। दीवालों पर शेर, चीते, बारहसिंहे, हिरण, रणभैंसे आदि जंगली जानवरों के चमड़े सजा कर लगाये गये हैं। कई चमड़ों में जानवरों के सिर भी हैं। इन चमड़ों के बीच बीच में बन्दूकें, तलवारें, भाले इत्यादि हथियार सजा कर टाँगे गये हैं। कमरे की छत से पुराने ढंग के मोमबत्ती के झाड़ और हण्डियाँ झूल रहे हैं। बीचोंबीच एक हाथ-पंखा टँगा हुआ है जो बाहर से धीरे धीरे खींचा जा रहा है। कमरे की जमीन

पर मिरज़ापुरी क़ालीन बिछा है। क़ालीन पर पुराने ढग की कुर्सियाँ, टेबिल इत्यादि सजी हैं। एक कुर्सी पर राजा अयोध्यासिह बैठा हुआ है। अयोध्यासिह की उम्र क़रीब ६५ वर्ष की है। वह ऊँचा पूरा, मोटा, गेहुएँ रग का आदमी है। चेहरे पर अभी भी सुर्ख़ी है। सिर और मूछों के छोटे छोटे बाल सफ़ेद हो गये हैं। वह एक सफ़ेद कुरता और धोती पहने हुए है। सिर नगा है। उसके पास ही एक चाँदी का हुक़्क़ा रखा हुआ है, जिसकी सुनहरी लबी सटक अयोध्या-सिह के हाथ में है। अयोध्यासिह हुक़्क़ा पी रहा है। उसकी कुरसी के पास ही एक दूसरी कुरसी पर दीवान प्रयागसिह बैठा हुआ है। उसकी उम्र भी अयोध्यासिह के बराबर ही जान पड़ती है। शरीर में वह ऊँचा है, पर दुबला। रग में साँवला है। सिर, बड़ी बडी मूछें और खसखसी दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गये हैं। वह काला अँगरखा और सफ़ेद पैजामा पहने हुए है। सिर पर कोसे का साफा बाँधे है।]

अयोध्यासिह—(हुक़्क़े का धूआँ छोडते हुए) जीते हुए भी मैं मरे से बदतर हूँ।

प्रयागसिह—यह आप क्या कह रहे है, सरकार!

अयोध्यासिह—बिलकुल ठीक कह रहा हूँ, दीवान जी, मैं सब समझता हूँ। मै बूढा हो गया, मुझे आराम चाहिए, (हुक्का गुडगुडा कर) ये सब बातें मुझे फुसलाने के लिये, कही जाती है। असल में इन बहानो को लेकर मुझे क़ैद में

रखा गया है, मेरे अख्त्यारात छीने गये है।

प्रयागसिंह—लेकिन, हुजूर, इस उम्र से आपको काम की झझटो से अलग कर आराम देना यह कुमार साहब का फर्ज़ है।

अयोध्यासिंह—उम्र! उम्र से आपका क्या मतलब है, दीवान जी? डाक्टर घोष कहते थे कि अंग्रेज़ी मे कहावत है कि आदमी उतनी ही उम्र का माना जाना चाहिये जितना वह अपने को समझता हो और औरत उतनी ही उम्र की समझी जानी चाहिये जितनी की वह दिखती हो। (जोर से हुक्का गुडगुड़ा कर) मुझे इस पैसठवें साल में भी वैसा ही लगता है जैसा जब मै तीस पैतीस साल का था उस वक्त लगता था। अगस्त मुनि का सा मेरा हाजमा है और कुभकर्ण की सी नीद। आज भी मै शेर का शिकार कर सकता हूँ। देहात के दौरो में बीस मील पैदल चल सकता हूँ। लेकिन घर से बाहर निकलने पाऊँ तब तो। (हुक्के का धूआँ छोडते हुए) दीवानजी, सारा मामला अख्त्यारात का है, अख्त्यारात का। कुमार साहब खुद मुख़्त्यार होना चाहते थे। उन्होने मेरी उम्र, और इस उम्र में मुझे आराम मिलना चाहिये, यह बहाना ढूँढ लिया। मैं क़ैद में रखा गया हूँ, क़ैद में। अब कौन मुझे पूछता है? हफ्तो कुमार साहब तक मेरे पास नही आते। कौन काम मुझसे पूछ कर होता है? आप तक को पेन्शन दे दी गई।

प्रयागसिंह—सरकार, इन बातो की तरफ़ देखें ही नही। अपनी तबियत सँभालें। आराम से रहें। भजन करें।

अयोध्यासिंह—देखूं ही नही! आँखें रहते देखूं कैसे नही, दीवान साहब? देखना तो तब बन्द हो सकता है जब या तो आँखें फूट जायें या जान निकल जाय। तबियत सँभालूं! तबियत को क्या हुआ है? आराम मुझे पडे पडे पत्ते गिनने मे नही मिलता और भजन करते है निकम्मे लोग।

प्रयागसिंह—फिर क्या किया जाय, हुजूर?

अयोध्यासिंह—(**धूआं छोडते हुए, कुछ ठहर कर**) दीवान जी, डाक्टर घोष कहते थे कि मेरा दिमाग़, दिल, फेफडे सब जवानो से अच्छे हैं। राजवैद्य गगाधर राव कहते थे कि मेरी नब्ज़ ऐसी चलती है, जैसी घोडे की। हकीम इब्राहीम कहते थे कि अस्सी साल की उम्र तक मुझे किसी कुश्ते की ज़रूरत नही। (**हुक़्क़ा ज़ोर से गुडगुडा कर**) ज्योतिषाचार्य करुणाशकर जी कहते थे कि मेरे ग्रह ऐसे हैं कि कलयुग में जो एक सौ बीस साल की उम्र कही है, वह मैं पूरी पाऊँगा। और तान्त्रिक कामरूप भट्टाचार्य कहते थे कि वे अपने तन्त्र शास्त्र से मुझे उससे भी आगे बीस साल तक और ज़िन्दा रख सकते है।

प्रयागसिंह—इन सब बातो से ज्यादा और खुशी की क्या बात हो सकती है।

अयोध्यासिंह—दो चार साल जीना होता तो दूसरी बात

थी, जब जितने साल बीते है उससे ज्यादा बिताना है तो इस तरह निकम्मी जिन्दगी कैसे बिताऊँ? दीवान जी, घर वालो और बाहर वालो, सबसे, मुझे इस तरह निकम्मे बनाने का बदला लेने की तरकीब मैंने सोच ली है। ऐसा नुसखा है कि सारा घर हिल जायगा और तमाम शहर में तहलका मच जायगा। (हुक्का गुडगुडाते हुए) कुमार साहब के सब गुलछर्रे खत्म हो ही जायँगे और कुमार साहब को घूमना पडेगा मेरे चारो तरफ। शहर के जो लोग कुमार की स्वाहा स्वाहा करने के लिये उसके बैठकखाने में उसके दरबारी बने बैठे रहते है, उन्हें मेरी कदमबोसी के लिये इस कमरे में हाजिर रहना पडेगा। (धूआँ छोडते हुए) आपकी भी फिर वही पूछताछ शुरू होगी जो मेरे जमाने में थी।

प्रयागसिंह—(प्रसन्न होकर) इसकी कोई तरकीब है, हुजूर?

अयोध्यासिंह—हाँ हाँ, देखिये, मैं कल ही तो आपको बताता हूँ।

प्रयागसिंह—ऐसा?

अयोध्यासिंह—कल सवेरे ही उस नुस्खे की करामात देखना।

[खडे होकर इधर उधर टहलता है। प्रयागसिंह उसके पीछे पीछे घूमता है।]

यवनिका-पतन

मुख्य दृश्य

स्थान--राजा अयोध्यासिह के मकान का कमरा

समय--प्रात काल

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम में था। फर्क इतना ही है कि कमरे के दाहनी तरफ एक पलग बिछा है जिसपर गले तक एक सफेद चादर ओढ़े अयोध्यासिह लेटा है। स्वच्छ वस्त्रो में एक नौकर अयोध्यासिह के पैर दाब रहा है। दो कुर्सियों पर काशीसिह और प्रयागसिह बैठे है। काशीसिह की उम्र क़रीब ४० साल की है। वह ऊँचा पूरा, सुडौल शरीर का व्यक्ति है। रग गेहुआँ है, छोटी छोटी मूंछें है। कपडे अग्रेजी ढग के शिकारी है। सिर खुला हुआ है।]

काशीसिह--मै तो इधर एक हफ्ते से उनको देख न सका था, पर कल शाम तक तिबयत बिलकुल ठीक थी ?

प्रयागसिह--जी हाँ, बिलकुल ठीक। मै ठीक तबियत छोडकर घर गया था।

काशीसिह--और आज इतनी खराब हो गई ?

प्रयागसिह--क्या कहा जाय।

अयोध्यासिह--(कराहते हुए) बेटा, डाक्टर साहब आये ?

काशीसिह--(उठकर पलग के नजदीक जाकर) आते ही होगे, पिता जी, मोटर भेजे काफी देर हो गई।

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) जल्दी जल्दी बुला, बेटा। कहीं ऐसा न हो कि जान निकलने पर डाक्टर आवें।

काशीसिंह—(घबड़ाकर) आप क्या कहते हैं, पिता जी, पर खैर दूसरी मोटर भेजता हूँ। (जाने लगता है।)

अयोध्यासिंह—वैद्य जी, हकीम जी, ज्योतिषी जी और तान्त्रिक जी को भी बुलाया है न ?

काशीसिंह—(जाते जाते रुककर) हाँ, पिता जी, सबके यहाँ सवारियाँ गई हैं। (जाता है।)

अयोध्यासिंह—(प्रयागसिंह से) देखा कुमार साहब को, सब गुलछर्रे खत्म हो गये न ? सवेरे शिकार को जा रहे थे। एक साल, पूरे एक साल, इस कमरे से बाहर न निकलने दूँगा।

[काशीसिंह का डाक्टर घोष के साथ प्रवेश। डाक्टर घोष क़रीब पैंतीस साल का ठिंगना मोटा और साँवला मनुष्य है। अंग्रेजी पोशाक पहने है। जल्दी जल्दी पलंग के नजदीक जाता है। काशीसिंह और प्रयागसिंह भी उसके पीछे पीछे जाते हैं।]

घोष—(पलंग के नजदीक जाकर) गुड मॉर्निंग, राजा साहब, आप बीमार हो गिया ?

[तीनों कुर्सियों पर बैठते हैं।]

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) ओह ! ओह !

घोष—(तेठासकोप निकालते हुए) कोई खास ठो तकलीफ है, राजा साहब ?

अयोध्यासिंह—कुछ पूछिये मत, डाक्टर साहब। सिर फटा जाता है। कलेजा खिंचा जाता है। पेट में भाले चल रहे हैं। बदन का हर जोड टूटा जाता है। (करवट बदलकर बडी जोर से कराहता है।)

घोष—(तेठासकोप कान में लगाते हुए) आप थोडा सीधा ठो हो जाइगा ?

[अयोध्यासिंह सीधा हो जाता है। नौकर पैर दाबना छोडकर एक तरफ खडा हो जाता है। डाक्टर चादर उठा कर कुरता ऊँचा करके तेठासकोप से छाती देखता है। राजवैद्य गगाधर राव का प्रवेश। गगाधर राव की उम्र क़रीब ४५ वर्ष की है। वह साधारण क़द और शरीर का मनुष्य है। सफेद अँगरखा और धोती पहने है। सिर पर मराठी पगड़ी लगाये है। उसे देखकर काशीसिंह उसके नजदीक आता है। दोनो एक दूसरे को हाथ जोडते हैं।]

काशीसिंह—पिता जी की तबियत एकदम बहुत बिगड गई, महाराज।

गगाधर राव—(हाथ हिलाते हुए) यह अस्वस्थता अवश्यमेव विलक्षण सवाद आहे। द्वय दिवस पूर्व हमारी भेंट हुई रही, उस काल के बीच स्वस्थ रहे, सर्वथा स्वस्थ।

काशीसिंह—कल रात तक तबियत ठीक थी, वैद्यराज

जी, आज सवेरे से ही बिगडी है, लेकिन बहुत बिगड गई, महाराज ।

[दोनो पलग के नजदीक की कुर्सियों पर बैठ जाते हैं ।]

घोष—अब आप बैक ठो हमारा तरफ करिये ।

[अयोध्यासिंह कराहते हुए करवट लेता है। घोष स्टेथासकोप से पीठ देखता है। हकीम इब्राहीम का प्रवेश। यह करीब ५५ वर्ष का लबा पूरा, मोटा मनुष्य है। रग साँवला है। छोटी मूँछें और लबी दाढी है। बाल काले हैं, पर उनकी जडें सफेद, जिससे मालूम होता है कि दाढी और मूँछो पर खिजाब किया गया है। रेशमी छींट की शेरवानी और सफेद पैजामा पहने है। सिर पर तुर्की टोपी है। हकीम इब्राहीम को देखकर काशीसिंह उसके नजदीक आता है। दोनों एक दूसरे को एक हाथ से वन्दगी करते हैं।]

इब्राहीम—राजा साहब की तबियत नासाज़ हो गई, कुमार साहब ?

काशीसिंह—हाँ, हकीम साहब, और बहुत ज्यादा।

इब्राहीम—उनकी तो इतनी अच्छी तन्दुरुस्ती है कि उनकी अलालत एक अजीबो गरीब खबर है।

काशीसिंह—कल रात तक वे बिलकुल अच्छे थे।

[तीनों पलग के नजदीक की कुर्सियो पर बैठते हैं।]

घोष—(स्टेथासकोप को कान से निकालते हुए) कोई खास ठो बात तो नेई है। (गगाधर राव और इब्राहीम की

तरफ घूम कर) गुड मॉर्निंग, कविराज, गुडमॉर्निंग, हकीम।

[गंगाधर राव हाथ जोडता है और इब्राहीम एक हाथ से वन्दगी करता है।]

गंगाधर—हृद्गति चंचल आहे, डाक्टर?

घोष—कुच, कुच, पर ज्यादा ठो नेई।

[घोष कुरसी पर बैठ कर थरमामीटर निकालता है। अयोध्यासिंह गंगाधर राव और इब्राहीम का अभिवादन करता है।]

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) ओह! ओह! मै तो मर रहा हूँ, वैद्यराज जी, हकीम साहब।

[घोष थरमामीटर अयोध्यासिंह के बग़ल में लगाता है।]

गंगाधर राव—अशुभ न ब्रूयात्। राजा साहब, आप अत्यन्त द्रुत गति से पुन स्वास्थ्य लाभ करहिंगे।

इब्राहीम—शब तक तन्दुरुस्त हो जायँगे, आज ही शब तक, राजा साहब।

[घोष थरमामीटर निकाल कर देखता है। गंगाधर राव उठकर तीनो उँगलियो से दोनो हाथ की नब्ज देखता है। फिर इब्राहीम सिर्फ एक तर्जनी उँगली को भुजा की तरफ सीधी लबी रखकर दोनो हाथ की नब्ज देखता है। अयोध्यासिंह कराहता है।]

घोष—नो टेम्प्रेचर, राजा साहब।

अयोध्यासिंह—टेम्प्रेचर न होगा, पर मरा तो जाता हूँ।

घोष—ओ! सब ठो ठीक हो जाइगा, सब ठो ठीक।

गंगाधर राव—अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिला शक।

अयोध्यासिंह—ओह! पेट में तो भाले चल रहे हैं, भाले।

[तीनों पेट दाबकर देखते हैं। अयोध्यासिंह कराह कराह कर पलंग पर हिलता है। घोष, गंगाधर राव और इब्राहीम पलंग के नजदीक की कुर्सियों पर से उठकर उससे दूर की बाईं तरफ की कुर्सियों पर बैठते हैं। काशीसिंह और प्रयाग-सिंह उनके निकट की दूसरी दो कुर्सियों पर बैठते हैं। अयोध्यासिंह बार बार करवटें बदलते हुए कराहता है। नौकर फिर से उसके पैरों को दबाना शुरू करता है।]

घोष—(गंभीरता से) इट्स ए सीरियस केस!

काशीसिंह—(घबड़ाहट से) सीरियस केस!

गंगाधर राव—(सिर हिलाकर) अवश्यमेव।

प्रयागसिंह—(चिन्ताकुल) कोई डर है?

इब्राहीम—बिला शक, खौफ है।

काशीसिंह—क्या बीमारी है, डाक्टर साहब?

घोष—ये केना ठो अबी डिफीकल्ट है, इसका लिये तो खून, पाखाना, पेशाब का जाँच कराना होगा, लेकिन पेशेन्ट का कन्डीशन ठो खराब है।

गगाधर राव—नाडी वेगवती चीण्णा!

इब्राहीम—हाँ, नब्ज की हालत बिलाशक नाजुक है।

काशीसिंह—फिर क्या किया जाय?

घोष—ट्रीटमेंट ठो शुरू करना होगा, एकदम। आपको ते करना है, ऐलोपैथिक, कविराजी, हकीमी, कौन सा ठो ट्रीटमेंट कराना है?

काशीसिंह—(कुछ सोचते हुए) जब कन्डीशन इतना सीरियस है, तब तीनो ही दवा एकदम शुरू करना ठीक होगा। (कुछ ठहर कर) मेरी राय तो यह है कि डाक्टर साहब इन्जकशन लगायें, वैद्यराज जी पेट मे खाने की दवा दें और हकीम जी मालिश वगैरह का इन्तजाम करें।

घोष—हो सकता।

गगाधर राव—अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिलाशक।

काशीसिंह—(घोष से) खून, पैखाना और पेशाब की जांच आप कब करायेंगे?

घोष—इसका लिये हम तीनो का एक्सपर्ट डाक्टर्स को अबी भेज देगा।

काशीसिंह—इलाज को छोडकर बाकी इन्तजाम क्या क्या किये जायँ?

घोष—बाकी इन्तजाम?

काशीसिंह—जी हाँ, जैसे कमरे में कोई खास बात

की जाय क्या ? खाने को दिया जाय या नही, और दिया जाय तो क्या दिया जाय, वग़ैरह, वग़ैरह ?

घोष—(कमरे को चारों तरफ देखकर) कमरा ठीक है, लेकिन गरमी का मोसिम है। खश की टट्टी से फायदा होगा। क्यो कविराज, क्यो हकीम ?

गगाधर—अवश्यमेव। खस अत्यन्त लाभप्रद आहे।

इब्राहीम—विलाशक फायदेमन्द, बहुत फायदेमन्द।

काशीसिंह—टट्टी अच्छी होगी या परदे ?

घोष—परदा वुड वी वैटर।

काशीसिंह—उनकी वुनावट घनी हो या विरली ?

घोष—वह केसा वी हो सकता।

काशीसिंह—फिर भी इतना सीरियस केस है, जैसा आप कहेंगे, वन जायगा।

घोष—थोडा विरला होने से डॅपनेस कम होगा।

काशीसिंह—एक खस की लाइन से दूसरी लाइन के वीच में कितनी जगह छोडनी ठीक होगी ?

घोष—(कुछ सोचते हुए) थ्री-फोर्थ इच। क्यो कविराज, क्यो हकीम ?

गगाधर राव—ठीक आहे, ठीक आहे।

इब्राहीम—विलकुल ठीक।

काशीसिंह—और परदो को कितनी कितनी देर में सीचना चाहिये ?

घोष—(**कुछ सोचते हुए**) चार चार मिनिट में। ये ठो बोत जरूरी है। कोई टट्टी भी सूख गिया तो कमरा का टेम्प्रेचर ठो बिगड जावेगा।

काशीसिंह—सीचने के पानी में वरफ मिलाना ठीक होगा ?

घोष—बोत अच्छा, बोत अच्छा। क्यो कविराज, क्यो हकीम ?

गगाधर राव—अवश्यमेव। अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिलाशक।

काशीसिंह—पलग परदो से कितने फुट और इच दूर रहना चाहिए ?

घोष—(**गंभीरता से सोचते हुए**) पाँच फुट चार इन्च ठो ठीक होगा। क्यो कविराज, क्यो हकीम ?

गगाधर राव—ठीक आहे, ठीक आहे।

इब्राहीम—बिलकुल ठीक।

काशीसिंह—(**कुछ सोचते हुए**) और पखा ज़ोर से खीचा जाना चाहिए, या धीरे धीरे ?

घोष—न बोत ठो जोर से न बोत ठो धीरे।

काशीसिंह—(**कुछ सोचते हुए**) एक मिनट में कितने रिवोल्यूशन होना चाहिए ?

घोष—(**कुछ सोचकर**) कोई डेढ डजन ठो। क्यो कविराज, क्यो हकीम ?

गगाधर राव—ठीक आहे ।

इब्राहीम—और क्या ?

काशीसिह—(कुछ सोचते हुए) कमरे में और कोई इन्तज़ाम ?

घोष—(विचारते हुए) यहाँ पर परफेक्ट पीस ठो रेना चाइये। कोई गुल गपाडा नेई ।

गगाधर राव—हो, ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ।

इब्राहीम—एकदम अमन ।

काशीसिह—(कुछ सोचते हुए) अच्छा, खाने को दिया जाय या नही ?

घोष—क्यो कविराज, क्यो हकीम, हम तो समझता दे सकता ।

गगाधर राव—अवश्यमेव ।

इब्राहीम—बिलाशक ।

काशीसिह—क्या दिया जाय ?

घोष—(कुछ सोचते हुए) आप भात दे सकता, दाल दे सकता, रोटी बी दे सकता, परवल का वेजीटेबिल दे सकता । क्यो कविराज, क्यो हकीम ?

गगाधर राव—अवश्यमेव ।

इब्राहीम—बिलाशक ।

काशीसिह—कितने तोला भात, कितने माशे दाल, कितने वज़न के आटे की रोटी और कितने परवल ?

घोष—ये हकीम जी बतायगा।

इब्राहीम—(सोचते हुए) कोई दो तोले भात, नौ माशे दाल और डेढ तोले आटे की रोटी। परवल दो। क्यो डाक्टर, क्यो वैद्य जी ?

घोष—ठीक।

गगाधर राव—ठीक आहे।

काशीसिंह—परवल में बीजें रहना चाहिये या निकाल दिये जायें ?

इब्राहीम—रह सकते हैं।

काशीसिंह—कितने बीजें तक दिये जा सकते हैं ?

इब्राहीम—(गभीरता से सोचकर) एक दर्जन। क्यो डाक्टर, क्यो वैद्य जी ?

घोष—ठीक।

गगाधर राव—ठीक आहे।

काशीसिंह—और रोटी पर घी लगाया जाय या नही ?

इब्राहीम—(विचार पूर्वक) मक्खन लगाइए।

काशीसिंह—उसके सामने की तरफ या पुश्त पर ?

इब्राहीम—(अत्यन्त गभीरता से सोचते हुए) पुश्त पर ठीक होगा। क्यो डाक्टर, क्यो वैद्य जी ?

घोष—ठीक।

गगाधर राव—ठीक आहे।

काशीसिंह—और पीने के लिये पानी ?

इब्राहीम—यह वैद्य जी बतायेंगे।

गगाधर राव—ग्रीष्में सचीयते वायु अत क्षीर नीर दीजिए।

काशीसिंह—याने ?

गगाधर राव—विशुद्ध कूपजल एक मृत्तिका के पात्र मध्य अग्नि पर धरिए। जब अर्द्ध भस्म हो जाय तब शेष अर्द्ध को रजत पात्र में शनै शनै शीतल कर सुवर्ण के चम्मच से तृषा के काल बीच दीजिये। क्यो डाक्टर, क्यो हकीम जी ?

घोष—ठीक।

इब्राहीम—बिलाशक ठीक।

काशीसिंह—और दूध दिया जा सकता है या नही ?

गगाधर राव—अवश्यमेव। नूतन जनित गौ के धारोष्ण पय को पारद पात्र में पिलाइए। अत्यन्त लाभजनित आहे। क्यो डाक्टर, क्यो हकीम जी ?

घोष—ठीक।

इब्राहीम—बिलाशक ठीक।

[सब लोग कुछ देर चुप रहते हैं। अयोध्यासिंह कराहता रहता है।]

घोष—अच्छा, तो हम जाकर अपना असिसटैन्ट भेजता। उसके साथ इजक्शन का दवा ठो। आधा आधा घन्टे में इजक्शन देना होगा।

काशीसिंह—हर आधे घन्टे में इजक्शन ?

घोष—सॉटनली, आप देखता नेई कन्डीशन कितना सीरियस !

काशीसिंह—और खून, पैखाना, पेशाव की जाँच करने वाले एक्सपर्ट्स को आप कब भेजेंगे ?

घोष—अबी, अबी।

गंगाधर राव—हम औषधि प्रेषित करते हैं। प्रत्येक पन्द्रह क्षण पश्चात् एक मात्रा मधु के संग सुवर्ण पात्र बीच मिश्रित कर जिव्हा पर चटा दी जाये।

काशीसिंह—हर पन्द्रह मिनिट पर ?

गंगाधर राव—अवश्यमेव, अवश्यमेव। रोग भीषण आहे।

इब्राहीम—और मैं मालिश के लिये दो रोग़न भेजता हूँ। एक की मालिश दिमाग पर होगी और दूसरे की दिल पर। कुमार साहब, मालिश होनी चाहिए लगातार शाम तक, और इसलिये बहुत मुलायम हाथो से होनी चाहिए, जिससे कोई कल्लाहट वगैरह न हो।

काशीसिंह—आप मालिश करने के लिये किसी को भेज सकेंगे ?

इब्राहीम—हाँ, मेरे पास मालिश करने वाली नर्सें हैं। एक साथ दो को मालिश करनी होगी। एक को दिमाग़ पर और दूसरी को दिल पर। फिर एक एक तो शाम तक कर न सकेगी। एक एक घन्टे में उन्हें बदलना होगा।

काशीसिंह—अच्छी वात है, आप भेज दें।

[तीनों खडे होते हैं। काशीसिंह और प्रयागसिंह भी खडे होते हैं।]

प्रयागसिंह—फिर आप लोग कव तशरीफ लायेंगे ?

घोष—शाम को।

गगाधर राव—अवश्यमेव।

इब्राहीम—विलाशक।

काशीसिंह—पर पहले जरूरत हुई तो पहले भी आना होगा।

घोष—जव आप चाहेगा फौरन आ जायगा।

गगाधर राव—अवश्यमेव, अवश्यमेव।

इब्राहीम—विलाशक, विलाशक।

[तीनो का प्रस्थान। काशीसिंह और प्रयागसिंह अयोध्यासिंह के पलग के पास आते हैं, जो अव तक उसी तरह करवट वदलता हुआ कांख रहा है।]

काशीसिंह—अव कैसी तवियत है, पिता जी ?

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) ओ! मर रहा हूँ, बेटा, मर रहा हूँ! (कुछ रुककर) डाक्टर, वैद्य और हकीम ने क्या कहा ?

काशीसिंह—कुछ नही, सवने कहा आप वहुत जल्दी अच्छे हो जायँगे।

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) और ज्योतिषी जी तथा

तान्त्रिक जी अब तक नही आये ?

काशीसिंह—आते ही होगे। मैंने उनसे कहला दिया था कि आपकी तबियत ठीक नही है, इसलिये आपके ग्रह देखकर, और अगर कुछ शान्ति कराना हो तो उस पर विचार करके, आवें, इसीलिए शायद देर हो गई हो, मैं अभी देखता हूँ। (**प्रस्थान।**)

अयोध्यासिंह—देखा, दीवान जी, एक ही नुस्खे में कुमार साहब कैसे ठीक हो गये।

प्रयागसिंह—लेकिन, हुजूर, इलाज, बडा सख्त शुरू होने वाला है। बिना बीमारी के इतना सख्त इलाज कैसे बर्दाश्त होगा ?

अयोध्यासिंह—इसकी तुम फिक्र न करो, रोज़ इलाज बदलाऊँगा, इतना ही नही, आब हवा बदलने जाऊँगा और मेरी दुम बनकर जायँगे कुमार साहब। मेरे जीते जी मुझसे अख्त्यारात लेकर मुझे कैदी बनाकर शाहशाही करना चाहते थे, उसीका नतीजा भोगेंगे।

[काशीसिंह का करुणाशंकर और कामरूप भट्टाचार्य के साथ प्रवेश। करुणाशकर क़रीब ६० साल का साधारण ऊँचाई का दुबला पतला, गौर वर्ण का व्यक्ति है। धोती पहने है और उपरना ओढे है। सिर खुला है। दाढ़ी मूछें और सिर पर बाल नहीं है, पर बहुत बडी श्वेत रग की चोटी है, जो बँधी हुई है। मस्तक पर त्रिपुण्ड है। कामरूप लगभग

४० वर्ष का ठिगना मोटा और काला व्यक्ति है। आँखें लाल है। वस्त्र करुणाशकर के सदृश है। सिर, मूछें, दाढी के बाल काले है। प्रयागसिह खडे होकर उन्हें प्रणाम कर उनका स्वागत करता है। नजदीक आने पर अयोध्यासिह दोनों को हाथ जोडकर प्रणाम करता है। वे दोनो हाथ उठाकर आशीर्वाद देते है।]

करुणाशकर—आयुष्मान। आयुष्मान।

कामरूप—जुग जुग जिइए।

अयोध्यासिह—(कराहते हुए) आप लोगो को शायद मालूम नही है कि मैं मर रहा हूँ, नही तो इस तरह का आशीर्वाद नहीं देते।

करुणाशकर—सूँ कहो छो, राजा साब ? दो चार दिवस मा ही आरोग्यता थसे।

अयोध्यासिह—आपने ग्रह देखे ?

करुणाशकर—हाँ, देख ने आयो छू, श्रीमान, या मारे ही तो थोडो विलब थयो।

अयोध्यासिह—(जोर से कराहते हुए) कैसे है ?

करुणाशकर—भलाछे, भलाछे। कोई चिन्ता नी बात नई, थोडो उपाय अवश्य करावो पडशे। अभी कुमार साब सूँ सारी हकीकत कहूँ छूँ।

अयोध्यासिह—और आप भी कुछ कराइए, तान्त्रिक जी।

कामरूप—हाँ, मै भी विचार करके आया हूँ। कुमार

साहब से सब कह देता हूँ। आप कोई चिन्ता न करें।

[करुणाशंकर, कामरूप, काशीसिंह और प्रयागसिंह पलंग से दूर पर बाँई तरफ की कुर्सियों पर बैठते हैं।]

काशीसिंह—कैसे ग्रह हैं, महाराज ?

करुणाशंकर—अत्यन्त निकृष्ट, कुमार साहब। राजा साब ने शनि मारकेश छे। शनि नी दशा छे। शनि में शनि नो ही अन्तर छे। प्रत्यन्तर में चन्द्र छै, वो भी बुरो। वर्ष ना ग्रह भी बुरा, मास ना भी बुरा, और गोचर ना भी बुरा।

काशीसिंह—(घबड़ाकर) तब ?

करुणाशंकर—सूँ चिन्ता छे। उपाय करनो पड़शे। उपाय सूँ सब निकल जाशे।

काशीसिंह—उपाय पर आपने विचार किया ?

करुणाशंकर—हाँ, श्रीमान्, रुद्राभिशेष ने साथे सवा लक्ष महामृत्युंजय नो जाप, शतचण्डी, लोह और चाँदी नो तुलादान संग एक सौ आठ गोदान।

काशीसिंह—तो अभी से सब इन्तज़ाम किया जाय, जिससे कल ही सब हो जाय, पंडित जी।

करुणाशंकर—कल ही सब।

काशीसिंह—(कामरूप से) और आप क्या करेंगे ?

कामरूप—मैंने भी सब सोच लिया है। एक उलूक का वध कर उसकी आँख को अश्वत्थ वृक्ष की शाखा में बाँधकर

उसका पैशाची पूजा करना होगा। फिर उसी वृक्ष के नीचे रणगिद्ध के मास से हवन करना होगा। तव व्याधि मिटेगी।

काशीसिह—उसका इन्तज़ाम भी कल हो जाना चाहिये।

कामरूप—अवश्य हो जायगा।

काशीसिह—चलिए, मैं सब वातो के लिये अलग अलग आदमियो को मुकर्रर कर दूँ, जिससे कल तक सारा इन्तज़ाम होने में आप लोगो को कोई दिक्कत न हो।

[तीनों का प्रस्थान। स्वच्छ वरदी में एक चपरासी का प्रवेश।]

चपरासी—हुजूर की तवियत पूछने के लिये म्युनिस्पैल्टी के प्रेसीडेन्ट और नगर सेठ साहव तशरीफ लाये है।

अयोध्यासिह—(मुस्कराकर) देखा, दीवान जी, देखा, घर में और वाहर, दोनो ही जगह नुसखा कैसा काम कर रहा है। जाइए, दोनो को ले आइए।

[प्रयागसिह का प्रस्थान। अयोध्यासिह शान्ति से लेटा रहता है। प्रयागसिह का सर्दार निहालसिह और सेठ गिरधारीलाल के साथ प्रवेश। निहालसिह की अवस्था करीव ५० वर्ष की है। वह ऊँचा, पूरा, मोटा ताजा सिख है। रग गोरा है। दाढ़ी मूछो के वाल आधे सफेद हो गये है। कपडे अग्रेजी ढग के है। सिर पर सफेद साफा है।

गिरधारीलाल की उम्र लगभग ४५ वर्ष की है। वह ठिंगना और मोटा आदमी है। वर्ण में साँवला है। सिर व मूछो के बाल कुछ कुछ सफेद हो चले हैं। मस्तक पर मोटा रामानन्दी तिलक लगाये हैं। सिर पर मारवाडी पगडी है तथा शरीर पर सफेद अँगरखा और धोती। गले में जरी का दुपट्टा डाले है। इन्हें देखते ही अयोध्यासिंह फिर कराहकर करवट बदलने लगता है।]

निहालसिंह—(अयोध्यासिंह के पलग के निकट जाकर) अरे, राजा साहब, बीमारी तो आप दे नेडे नई आय थी। बहादराँ दे नेडे बीमारी! इस तरा बीमारी तो नामर्दां

गिरधारीलाल—(अयोध्यासिंह के पलग के निकट जाकर बीच ही में) यो काँई हुयो, राजा शाब? आपरी तो बेमारी कदेई शुणी कोनी। कढेशूँ आ बीमारी हो गई! अबार तब्यत किशीक छै?

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) आह! सर्दार साहब! आह! सेठ साहब!

[निहालसिंह, गिरधारीलाल और प्रयागसिंह अयोध्यासिंह के पलग के पास की कुर्सियो पर बैठते हैं।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—राजा अयोध्यासिह के मकान का कमरा

समय—दोपहर

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम और मुख्य दृश्य में था। फर्क इतना ही है कि पलग उठा दिया गया है। कुर्सियो पर काशीसिह और प्रयागसिह बैठे है। दोनो सिर्फ कुरता और धोती पहने हुए है। सिर पर दोनो के सफेद साफा बँधा हुआ है। काशीसिह की मूछें मुडी हुई है।]

काशीसिह—दीवान जी, इतनी जल्दी यह पहाड मेरे सिर पर टूटेगा इसका मुझे सपने में भी खयाल न था।

प्रयागसिह—क्या कहूँ, सरकार।

काशीसिह—मै तो इधर कुछ दिनो से मिल न सका था, पर आपने कहा न कि परसो शाम तक वे बिलकुल अच्छे थे।

प्रयागसिह—परसो शाम तक क्या, हुजूर, कल सुबह इलाज शुरू होने तक वे बिलकुल अच्छे थे।

काशीसिह—(आश्चर्य से) इलाज शुरू होने तक बिलकुल अच्छे थे!

प्रयागसिह—जी हाँ, और उन्हें मारा इस इलाज ने।

काशीसिह—इलाज ने मारा! तुम भी क्या उन्हीं के

मानिंद पागल हो गये हो। इलाज शुरू होने के थोडी ही देर बाद उन्होंने चिल्लाना शुरू किया था कि मैं बिलकुल अच्छा हूँ, बिलकुल अच्छा हूँ, यह इलाज बन्द करो, नही तो मैं मर जाऊँगा और उनके मरने के बाद तुमने वही कहना शुरू किया।

प्रयागसिंह—सरकार, वे ठीक कहते थे और मैं भी ठीक कहता हूँ। इलाज ने उन्हें मार डाला।

काशीसिंह—इतने अच्छे डाक्टर, वैद्य और हकीम के इलाज ने उन्हें मार डाला! वे तो बीमारी के सबब इलाज होते होते पागल हो गये थे, उनकी बात मानकर उनका इलाज कैसे बन्द किया जाता, पर तुम तो बिना बीमारी के ही पागल हो रहे हो।

प्रयागसिंह—(आश्चर्य से) मैं पागल हो रहा हूँ?

काशीसिंह—बेशक पागल हो रहे हो, नही तो तुम कभी ऐसी बात मुंह से निकाल सकते थे कि इलाज ने उन्हें मार डाला।

प्रयागसिंह—हुजूर, मै फिर कहता हूँ, इलाज ने उन्हें मारा, इलाज ने उन्हें मारा।

काशीसिंह—(क्रोध से) तब तुम्हें पागलखाने जाने की तैयारी करनी चाहिये। मै अभी डाक्टर घोष को बुलाकर तुम्हारी जाँच करा तुम्हें पागलखाने भेजने की तैयारी करता हूँ। (प्रस्थान।)

प्रयागसिंह—(पीछे पीछे जाते हुए चिल्लाकर) हुज़ूर हुज़ूर डाक्टर घोष। डाक्टर घोष तो

यवनिका-पतन

समाप्त

ईद और होली

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र

राम—एक बच्चा (उम्र ४ वर्ष)

हमीदा—एक बच्ची (उम्र ४ वर्ष)

रतना—राम की माँ (उम्र ४० वर्ष)

ख़ुदाबख़्श—हमीदा का बाप (उम्र ४५ वर्ष)

स्थान—एक नगर

ईद और होली

पहला दृश्य

स्थान—एक गली

समय—सन्ध्या

[सकरी सी गली का एक हिस्सा दिखाई देता है, जिसके दोनों तरफ एक मजले और दो मजले छोटे छोटे मकानो के बाहरी भाग दृष्टिगोचर होते हैं। गली के एक ओर सबसे नजदीक खुदाबख्श के एक मजले मकान के सामने का कुछ हिस्सा दीख पड़ता है। मकान में जाने आने का एक छोटा सा दरवाजा है। गली के दूसरी तरफ सबसे नजदीक रतना के दो मजले मकान के सामने का कुछ भाग दिखाई देता है। इस मकान में जाने आने का एक बडा सा दरवाजा है। खुदाबख्श और रतना के मकान एक दूसरे के ठीक सामने हैं और बीच में गली है। हमीदा खुदाबख्श के मकान के भीतर से निकल कर गली में आती है। हमीदा क़रीब चार वर्ष की छोटी सी बालिका है। रग गेहुआँ है और देखने में साधारणतया सुन्दर है। छोटे छोटे फैले हुए बाल है। एक गुलाबी रग का रेशमी पाजामा और हरे रग का रेशमी कुरता पहने है।

कानो में चाँदी की बालियाँ हैं। हमीदा के हाथों में पत्ते का दोना है और उसमें मैदे की बनी हुई सिवइयाँ हैं।]

हमीदा—(रतना के मकान के नजदीक जाकर जोर से) श्राम ! श्रो श्राम !

[रतना के मकान से राम निकलता है। उसकी उम्र भी हमीदा के बराबर ही है, पर कद में वह हमीदा से कुछ ऊँचा और शरीर में भी कुछ मोटा है। रंग गेहुआँ है और देखने में बुरा नहीं है। एक सफेद जाँघिया पहने है और उसके ऊपर वैसा ही कुरता।]

राम—(हमीदा को देखकर) श्रो, हम्मू।

हमीदा—हाँ, श्राम। श्राद ईद, ईद। (सिवइयाँ दिखाते हुए) जे।

राम—जे त्या है, हम्मू ?

हमीदा—ईद ती छिमइयाँ।

राम—ईद ती छिमइयाँ ?

हमीदा—हाँ, श्राम, ईद ती छिमइयाँ। मीथी, मीथी।

[दोनो रतना के मकान के नजदीक गली के एक किनारे पर बैठ जाते हैं।]

हमीदा—हम तुम दोनो थाँय।

राम—दोनो थाँय ?

हमीदा—(सिवइयाँ राम के मुँह की तरफ ले जाते हुए) हाँ, श्राम, दोनो थाँय।

[हमीदा राम को अपने हाथ से सिवइयाँ खिलाती है, फिर खुद खाती है। रतना अपने मकान के बाहर निकलती है। वह करीब ४० साल की गेहुएँ रग की साधारण ऊँचाई और शरीर की स्त्री है। वेष भूषा से विधवा जान पड़ती है।]

रतना—(जोर से) राम! ओ राम!

राम—(उसी तरह बैठे हुए सिवइयाँ खाते खाते) हाँ, माँ।

रतना—(राम के नजदीक आते और राम तथा हमीदा को क्रोध से देखते हुए) फिर उस मलेच्छा के साथ खा रहा है। भिष्ट कहीं का।

राम—अले, माँ, छिमइयाँ है, छिमइयाँ, मीथी, मीथी। ईद ती है, ईद ती, माँ।

[रतना नजदीक पहुँचकर राम का हाथ पकड़ती है। हमीदा बैठी बैठी खाती रहती है। खुदाबख्श अपने मकान के बाहर निकलता है। उसकी उम्र करीब ४५ वर्ष की है। रग साँवला है। वह ऊँचा पूरा, मोटा ताजा व्यक्ति है। ईद के कारण धुला हुआ सफेद पाजामा और चिकन का कुरता तथा उस पर हरे रग की रेशमी सदरी पहने है। सिर पर हरे रग का ही बड़ा-सा रेशमी साफा बाँधे है।]

रतना—(खुदाबख्श को न देख हमीदा की तरफ क्रोध से घूरते हुए गरज कर) हरामजादी, सौ बार कहा मेरे लड़के के साथ न खेला कर। अपना छुआ, अपना जूठा, खिलाती है, मलेच्छा कहीं की।

[हमीदा पर रतना की घुडकी का कोई असर नहीं पडता और उसका खाना जारी रहता है।]

खुदाबख्श—(उसी तरफ नजदीक आते हुए) बस बहुत हुआ, बहुत हुआ, खबरदार, अगर जबान चूकी तो।

रतना—(खुदाबख्श की तरफ देखते हुए) बाह्मन का धरम भिष्ट कराता है और कहता है खबरदार, जबान चूकी तो। उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

खुदाबख्श—(हमीदा को गोद में उठाते हुए) मै औरत के मुंह नही लगना चाहता। काफिर कही की।

रतना—औरत भी तेरे मुंह नही लगना चाहती। (राम को गोद में उठाते हुए) अपनी शाहजादी को अपने वस में रख।

खुदाबख्श—क्यो तेरा लडका भरष्ट होता है?

रतना—मेरा लडका तेरे घर नही गया था। तेरी लडकी आई थी।

खुदाबख्श—(हमीदा को गोद में उठाये अपने घर की तरफ जाते हुए) अब कभी पेशाव करने भी न आयगी।

रतना—(राम को गोद में उठाये अपने घर के अन्दर जाते हुए) वही अच्छा है, धरम तो वचा रहेगा।

खुदाबख्श—(घर में जाते जाते घृणा से) काफिर और मजहब।

रतना—(भीतर से) मलेच्छ। मलेच्छ।

[दोनो अपने अपने बच्चों के साथ अपने अपने घरों के अन्दर चले जाते हैं। नेपथ्य में 'मारो मारो' कोलाहल होता है। खुदाबख्श बाहर आता है। गली में कुछ मुसलमान लाठियाँ लिये दौडते हुए आते हैं।]

खुदाबख्श—क्या हुआ, बिरादरान।

एक आगन्तुक—झगडा।

खुदाबख्श—हिन्दू मुसलमानो में ?

दूसरा आगन्तुक—हाँ, हाँ, और किसमें होगा ?

[आगन्तुक दौडते हुए दूसरी तरफ चले जाते हैं। खुदाबख्श जल्दी से घर के अन्दर जाता है और एक लाठी लेकर आता है तथा उसी तरफ चला जाता है जिस तरफ दूसरे मुसलमान गये थे। नेपथ्य में कोलाहल बढ़ता है। हमीदा अपने घर से निकलती है और रतना के मकान के भीतर जाती है। नेपथ्य में कोलाहल होता रहता है। खुदाबख्श एक हाथ में तेल से भींगे हुए चियडे और दूसरे हाथ में एक मशाल लिये हुए आता है। रतना के मकान के इधर उधर वे चियड़े रख मकान में आग लगाने का प्रयत्न करता है।]

खुदाबख्श—(क्रोध से दाँत पीसते हुए) मलेच्छ ! मलेच्छ ! हम मलेच्छ ! ले गालियो का नतीजा, ले। तेरा राम, तेरा मकान, तेरा सब कुछ खाक में मिला दूं तब तो

मेरा नाम खुदाबख्श। जा, दोजख में जा, मय खानदान और दौलत के जा, काफिर कहीं की।

[नेपथ्य का कोलाहल और बढ़ता है।]

यवनिका-पतन

दूसरा दृश्य

स्थान—रतना के मकान की छत

समय—रात्रि

[लंबी छत है। पीछे की तरफ मकान की दीवाल है और सामने की ओर ईंट चूने की रेलिंग। रेलिंग के नीचे भी दीवाल है। दाहिनी और बाईं तरफ से आग की लपटें और धुंआं उठ रहा है। बीच बीच में दाहिनी और बांईं तरफ से आग के कुछ कण छत पर आते हैं। छत पर राम और हमीदा खड़े हुए बात कर रहे हैं। नेपथ्य में बीच बीच में कोलाहल सुनाई देता है।]

हमीदा—ईद ते वादे वदते हैं, आम।

राम—(आग की लपटों की ओर इशारा कर) औल ईद ते छाथ होली बी दल रही है, हम्मू।

हमीदा—हाँ, औल होली ता दाना बी हो लहा है, आम।

राम—ईद ते बादे वद लहे हे, होली ता दाना हो लहा है।

हमीदा—मैंने तो तुघे ईद ती छिमइयाँ थिलाई थी, आम। तू मुधे होली ती मिथाई नई थिलायदा?

राम—होली दल दाने पर मेरे घल में मिथाई बनेदी, हम्मू।

[आग की लपटें धीरे धीरे नजदीक आने लगती हैं।]

राम—अले होली तो पाछ पाछ आती जाती है।

हमीदा—कैछी अच्छी, लाल लाल, पीली पीली।

[आग के कण और नजदीक आने लगते हैं।]

हमीदा—(कणो को पकडने का प्रयत्न करते हुए) जुदनू, आम, जुदनू।

राम—नही, छोना, हम्मू, छोना।

[नेपथ्य में जोर से 'हम्मू! हम्मू!' शब्द होता है।]

हमीदा—अब्बा पुताल लहे है, आम, अब्बा।

[नेपथ्य में जोर से 'राम! राम!' शब्द होता है।]

राम—माँ वुला लही है, हम्मू, माँ।

[नेपथ्य में फिर जोर से 'हम्मू! हम्मू!' शब्द होता है।]

हमीदा—(जोर से) हाँ, अब्बा!

नेपथ्य से—अरी कहाँ है, हम्मू! कहाँ?

हमीदा—(मुस्कराकर राम से) श्राम, अव्वा मुघे धूंध लहे है।

नेपथ्य से—(जोर से) राम! राम!

राम—(जोर से) हाँ, माँ!

नेपथ्य से—(जोर से) अरे कहाँ है, राम, कहाँ?

राम—(मुस्कराकर हमीदा से) हम्मू, माँ मुवे धूंध लही है।

नेपथ्य से—(जोर से घबड़ाहट के स्वर से) हम्मू! हम्मू! कहाँ है, वोल तो?

हमीदा—(ताली वजाकर नाचते हुए जोर से) श्राम ती छत पल, अव्वा, श्राम ती छत पल।

नेपथ्य से—राम! राम! कहाँ है, छत पर है?

राम—(हमीदा के साथ ताली वजाकर नाचते हुए) हाँ, माँ, छत पल ही तो हूँ।

नेपथ्य से—या खुदा!

नेपथ्य से—हे भगवान!

[राम श्रौर हमीदा उसी तरह ताली वजाकर नाचते रहते हैं। श्राग की लपटें श्रौर नजदीक श्राती हैं। सामने की दीवाल पर दीवाल की फारनिस पकडकर कठिनाई से खुदावख्श चढ़ता हुश्रा दीख पडता है। धीरे धीरे खुदावख्श छत पर पहुँचता है।]

हमीदा—(खुदावख्श को देखकर हर्ष से चिल्लाकर

उसकी तरफ आते हुए) ओ! अब्बा! अब्बा!

खुदाबख्श—(क्रोध से) कमबख्त, तू यहाँ क्यो आई?

हमीदा—(मुस्कराते हुए) येलने तो, अब्बा, आम ते छात येलने तो।

खुदाबख्श—(अपने साफे को उतार रेलिंग से बाँधते हुए घृणा से) मरने को, वेशऊर।

[खुदाबख्श साफे को रेलिंग से बाँध हमीदा को गोद में उठाता है।]

हमीदा—औल आम तो इछती अम्मा ले दायदी?

राम—मैं अपने पैलो छे छीदी छे उतल आता हूँ।

[राम छत की दाहिनी तरफ जाने लगता है, जिधर से आग की लपटें आ रही हैं।]

खुदाबख्श—हाँ, जा, अपने पैरो से सीढी से उतर कर आ जा।

[राम उसी तरफ बढता है।]

खुदाबख्श—(उसी तरफ देखते हुए जोर से) ठहर! राम! ठहर!

[राम जो आग की लपटो के बहुत ही नजदीक पहुँच गया है, रुक जाता है। खुदाबख्श दौडकर उस तरफ जाता और उसे दूसरी गोद में उठा रेलिंग में बँधे हुए अपने साफे के नजदीक आकर हमीदा और राम को अपनी दोनों भुजाओ से अपने दोनो तरफ के पसवाडो में दाब हाथो से साफे को

पकड़ नीचे उतरने का प्रयत्न करता है। दोनो तरफ से आग की लपटें ख़ुदाबख़्श के नजदीक पहुँच जाती है।]

यवनिका-पतन

तीसरा दृश्य

स्थान—गली

समय—प्रात काल

[दृश्य वैसा ही है जैसा पहले दृश्य में था। अन्तर इतना ही है कि रतना के मकान का बहुत सा हिस्सा जल गया है। आग अब बुझ गई है। रतना के मकान के नजदीक ही गली के एक किनारे पर राम और हमीदा बैठे हुए है। दोनो के बीच में मिठाई का एक दोना रखा है और दोनों उस दोने से मिठाई खा रहे हैं। ख़ुदाबख़्श और रतना का प्रवेश।]

ख़ुदाबख़्श—(दोनो बच्चो को मिठाई खाते देख मुस्करा कर रतना से) बहन, राम फिर भरष्ट हो रहा है।

रतना—(मुस्कराते हुए) नही, भाई, सच्चा धरम सीख रहा है।

ख़ुदाबख़्श—शर्त यही है कि बडे होने पर भी इसी मजहब को माने।

[दोनों कुछ देर चुप रहकर एकटक बच्चो की तरफ

देखते हैं। बच्चों की पीठ उनकी तरफ रहने के कारण बच्चे उन्हें नहीं देख पाते। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

रतना—भाई, तुमने राम की जान बचा कर जो जस मुझपर किया है उसे मैं

खुदाबख्श—(बीच ही में) मैंने ? नहीं, बहन, मैंने तो राम की जान लेने के लिये ऐसी कोई बात नहीं जो उठा रखी हो। उस परवरदिगार ने उसकी जान बचाई। (रतना की तरफ देखते हुए) बहन, जब मैं छत पर उसे छोड, और हमीदा को लेकर, आने का इरादा कर रहा था, बल्कि राम को आग से खाक होते हुए जीने से उतरकर आने की सलाह देकर हमीदा को ले उतरने का इरादा कर रहा था, उस वक्त उस वक्त बहन (चुप हो जाता है।)

रतना—(खुदाबख्श की तरफ देखते हुए) हाँ, उस वखत, भाई ?

खुदाबख्श—उस वक्त . उस वक्त. मैं ऐसा . मैं ऐसा कर ही न सका। जैसे किसी ने मुझे ऐसा न करने के लिये मजबूर कर दिया। . बहन. बहन यह खुदा का पैगाम था, खुदा का पैग़ाम।

[खुदाबख्श चुप हो जाता है। रतना उसकी तरफ़ देखती रहती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

खुदाबख्श—(कुछ ठहर कर) खुदा ने राम को मेरे

हाथ से बचवा कर तुम्हारे मकान जलाने के मेरे गुनाह को मुआफ कर दिया।

रतना—मलेच्छ ने काफिर का मकान जलाया था, भाई खुदाबख्श ने बहन रतना का नहीं।

खुदाबख्श—इन बच्चो ने, बहन, इन बच्चो ने हमें मलेच्छ और काफिर से भाई और बहन बना दिया।

रतना—बच्चे कदाचित मैली आतमाओ को पवित्तर करने की भगवान की देन हैं।

[राम और हमीदा, जो अब मिठाई खा चुके हैं, उठते और खुदाबख्श और रतना की तरफ घूमते हैं।]

राम—(रतना को देख कर उसी तरफ दौडते हुए) माँ! माँ!

हमीदा—(खुदाबख्श को देखकर उसी ओर दौडते हुए) अब्बा! अब्बा!

[राम को खुदाबख्श और हमीदा को रतना गोद में उठाते हैं।]

रतना—क्यो बेटा, हम्मू को मिठाई खिलाई?

राम—हाँ, माँ, इछने तल मुघे ईद ती छिमइयाँ थिलाईं थी, आद मैंने इछे होली ती मिथाई थिलाई है।

[खुदाबख्श और रतना हँस पडते हैं।]

यवनिका-पतन

समाप्त

मानव-मन

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र

कृष्णवल्लभ—एक व्यापारी

पद्मा—कृष्णवल्लभ की पत्नी

भारती—पद्मा की सखी

स्थान—एक नगर

मानव-मन

उपक्रम

स्थान—कृष्णवल्लभ के मकान का बरामदा

समय—प्रात काल

[बरामदा आधुनिक ढग का है और उसी तरह सजा भी है। पीछे की दीवाल दिखती है और दो तरफ़ खभों पर डाटें। दीवाल गुलाबी रग से रगी है। उसपर श्रीनाथ जी, यमुना जी और श्रीकृष्ण की अनेक लीलाओ के चित्र टँगे हैं। डाटो में से बगीचे का कुछ हिस्सा दिखाई देता है जो उगते हुए सूर्य के प्रकाश से रग रहा है। बरामदे के सीलिंग से बिजली की बत्तियाँ झूल रही है और जमीन पर, जो सगमरमर से पटी है, अनेक सोफे, कुर्सियाँ और टेबिलें सजी है। एक कुर्सी पर पद्मा बैठी हुई है और अपने सामने की टेबिल पर रखी हुई एक खुली चिट्ठी ध्यान से पढ़ रही है। पद्मा करीब २१, २२ साल की साधारण कद और सुडौल शरीर की सुन्दर स्त्री है। रग गोरा है। रेशमी साडी, ब्लाउस और रत्नजटित आभूषण पहने है। मस्तक पर लाल टिकली है। और उसीके नीचे दोनों भवों के बीच

में श्रीनाथ जी का पीला चरणामृत लगा हुआ है। भारती का प्रवेश। उसकी अवस्था करीब ४० वर्ष की है। वह लम्बे क़द की दुबली पतली साधारण तथा सुन्दर स्त्री है। रंग गेहुआँ है। सूती साड़ी और शलूका पहने है। वेष-भूषा से विधवा जान पड़ती है।]

भारती—(पद्मा के निकट आते हुए) बड़े ध्यान से क्या पढ़ रही हो, बहन?

पद्मा—(चौंककर) ओ! भारती बहन, (खड़े होकर) आओ, बैठो, बहन।

[भारती और पद्मा दोनों कुर्सियों पर बैठ जाती हैं।]

भारती—क्या पढ़ रही थीं?

पद्मा—उनकी चिट्ठी आई है।

भारती—तभी इतनी ध्यानावस्थित थीं कि मेरी बोली सुनकर भी चौंक पड़ीं।

पद्मा—उनका पत्र मुझे ध्यानावस्थित करने को काफ़ी है, यह मैं मानती हूँ, पर ध्यान मग्न होने का एक और भी सबब था।

भारती—क्या?

पद्मा—उस पत्र के समाचार।

भारती—क्यों, उनके मित्र की तबीयत कैसी है?

पद्मा—वैसी ही है, क्षय ऐसी बीमारी नहीं, जो जल्दी अच्छी हो जाय, या बिगड़ जाय।

भारती—फिर वहाँ से और क्या समाचार आ सकते है ?

पद्मा—सुन लो, पत्र ही सुना देती हूँ। (पत्र उठाकर पढते हुए) "तुम्हें यहाँ का एक हाल पढकर आश्चर्य हो सकता है, पर इस ज़माने में इस तरह की चीज़ें कोई ताज्जुब की बात नही है

भारती—किस तरह की चीज़े ?

पद्मा—वही तो पढती हूँ, सुनो। (पत्र पढते हुए) "इस दफा भाभी जी का विचित्र किस्सा है। वृजमोहन की तवियत वैसी ही होते हुए भी, उनके पलग पर पडे रहने पर भी, इधर उधर हिलने डुलने की ताकत न होने पर भी, भाभी जी का पुराना प्रोग्राम फिर लौट आया है। नित्य प्रात काल एक घटा टव और शावर वाथ में लगता है । फिर वाल सँवारने, पाउडर लगाने, लिपस्टिक और नेल पेन्ट को काम मे लेने में काफी वक्त लग जाता है। रोज़ नई साडी और ब्लाउस पहना जाता है । हर दिन शाम का समय क्लव में जाता है और अगर किसी दिन कोई गार्डन पार्टी या डिनर या डान्स का न्योता आ गया तव तो रात को भी लौटने का कोई निश्चित वक्त नही रहता। वृजमोहन को सम्हालते है डाक्टर और जहाँ तक भाभी का सवध है वहाँ तक एक दफा वृजमोहन की तवीयत पूछ लेने

से उनके कर्तव्य की समाप्ति हो जाती है।" (पत्र टेबिल पर रखकर भारती को तरफ़ देखते हुए) कहो, वहन, पत्र के समाचार ध्यानावस्थित कर देने के लायक हैं या नहीं ?

भारती—(गंभीरता से) तुम्हें इन समाचारों से अचम्भा हुआ है ?

पद्मा—अचम्भा ! वड़े से बड़ा अचम्भा जो दुनिया में हो सकता है।

भारती—वृजमोहन जी कितने दिन से बीमार हैं ?

पद्मा—कोई दो साल हो गये होंगे।

भारती—और उनकी पत्नी का और उनका वीमारी के पहले कैसा सम्वन्ध था ?

पद्मा—अच्छे से अच्छा। दोनों कॉलेज के प्रेमी थे और शादी प्रेम के परिणाम स्वरूप हुई थी। तभी तो भाभी जी का यह व्यवहार और भी आश्चर्य पैदा करता है।

[भारती चुपचाप कुछ सोचने लगती है। पद्मा उसकी ओर देखती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

भारती—कृष्णवल्लभ जी पहले पहल वृजमोहन जी को देखने गये हैं ?

पद्मा—नहीं, एक दफ़ा उनकी वीमारी के शुरू में गये थे।

भारती—उस समय भाभी जी का क्या हाल था ?

पद्मा—इसके ठीक विपरीत। उस वक्त वृजमोहन जी की बीमारी उनके दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न थी। उनकी दिनचर्या वृजमोहन जी के नजदीक बैठे बैठे चौबीसो घटे गुजारना था। डाक्टरो और नर्सों के रहते हुए वे ही उन्हे दवा देती थी, वे ही उनका टेम्प्रेचर लेती थी। वे ही अपने हाथो उनका सारा काम करती थी। तभी तो   तभी तो अब भाभी जी के व्यवहार से ताज्जुब होता है, । (कुछ ठहर कर) तुम्हे इसमे अचम्भा नही होता, बहन ?

भारती—(गम्भीरता से) नही।

पद्मा—नही ?

भारती—नही, बहन, बरदाश्त करने की भी हद्द होती है।

पद्मा—बरदाश्त की हद्द होती है ?

भारती—जरूर। सहन-शक्ति सीमा-रहित नही है।

पद्मा—ऐसे मामलो में भी ?

भारती—हरेक मामले में।

पद्मा—क्या कहती हो, बहन, क्या कहती हो ? पति बीमार हो, खाट पर पड़ा हो, उठने बैठने, हिलने डुलने की भी ताकत न हो और पत्नी इस तरह की वेष-भूषा करे, इस तरह के गुलछर्रे उड़ाये ! कहाँ गया भाभी जी का उनके प्रति प्रेम ? कहाँ गई भाभी जी की उनकी वह सेवा जो बीमारी के शुरू में थी ?

भारती—तुम्हारी भाभी ज़ी दो वर्षों तक उस तरह अपनी ज़िन्दगी नहीं बिता सकती थीं जिस तरह उन्होंने वृजमोहन जी की बीमारी के शुरू में बिताना आरम्भ किया था।

पद्मा—तब तो शायद वे यह भी चाहती होंगी कि वृज-मोहन जी का....वृजमोहन जी का जीवन ही......जीवन ही समाप्त हो जाय?

भारती—सम्भव है।

पद्मा—(उत्तेजना से) वह स्त्री नहीं, सुना बहन, सच्ची स्त्री नहीं। पति की बीमारी में, बीमार पति की सेवा में, दो वर्ष नहीं अगर सारा जीवन भी बीत जाय तो स्त्री को रो धोकर नहीं, पर शान्ति से उसे बिता देना चाहिये।

भारती—यह कहना जितना सरल है, करना उतना ही कठिन है।

पद्मा—नई रोशनी की औरतों के लिये होगा, जिन्हें न धर्म पर विश्वास है और न भगवान पर भरोसा, जिनके लिये विवाह धार्मिक संस्कार नहीं पर एक इक़रारनामा है; जिनके एक जीवन में ही एक नहीं अनेक शादियाँ हो सकती हैं, एक नहीं अनेक पति मिल सकते हैं।

भारती—मैं समझती हूँ सभी के लिये।

पद्मा—(ताने से) क्या अपने अनुभव से कहती हो?

भारती—(गम्भीरता से) सोच सकती हो। (कुछ

ठहर कर) वहन, मै नई रोशनी की नही हूँ। विवाह को इकरारनामा न मान कर सच्चा धार्मिक सस्कार मानती हूँ। पति को अपना सर्वस्व मानती थी। जब उन्हें लकवा हुआ तब मै भी खाना, पीना, नीद, आराम सब कुछ छोड़कर उनकी सेवा में दत्तचित्त हुई। उनकी वीमारी ही मेरी दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न हो गई। वह मानसिक दशा वहुत दिन तक रही भी। वे तीन वर्ष तक वीमार रहे, पर आखिर आखिर मे मै भी ऊव उठी थी।

पद्मा—और तुम आखिर आखिर में यह भी चाहने लगी थी कि उनका जीवन   उनका जीवन समाप्त हो जाय?

भारती—(कुछ सोचते हुए) कह नही सकती, जब उनकी तकलीफ वहुत वढी तव कई बार यह वात मन में उठती थी कि उन्हे इतनी तकलीफ न सहना पडे तो ही अच्छा है, सम्भव है यह वात यथार्थ मे उनके लिये न उठकर अपने ही छुटकारे के लिये उठती हो। वहन, तुम्हारी भाभी जी भी वृजमोहन जी की वीमारी के शुरू में यह कभी न चाहती होगी कि उनका जीवन समाप्त हो जाय, उन्होने उनके अच्छे करने में कोई वात उठा न रखी होगी, परन्तु जव उन्हें यह दीख पडने लगा होगा कि उनका अच्छा होना अव असम्भव है तव   तव

पद्मा—(क्रोध से) वहन, वहन, वह कुलटा होगी, वह

व्यभिचारिणी होगी। किसी भी हालत में, किसी भी परिस्थिति में, कोई हिन्दू स्त्री, कोई सच्ची हिन्दू पत्नी, अपने पति, अपने आराध्यदेव के सम्बन्ध में ऐसी बात जाग्रत अवस्था में तो क्या स्वप्न में भी नहीं सोच सकती, चाहे उसका सारा जीवन नष्ट हो जाय, सारी ज़िन्दगी बर्बाद हो जाय।

भारती—बहन, तुम जो कहती हो वह आदर्श है। अपने सारे सुखों की तिलाञ्जलि देकर कोई स्त्री अगर अपने को अपने पति में इस प्रकार विलीन कर सके, कोई प्रेमी यदि अपने निजत्व को अपने प्रेमी को इस प्रकार समर्पण में दे सके तो वह मानवी नहीं देवी है, वह मनुष्य नहीं देवता है; लेकिन, बहन, यह मानव-मन...मानव-मन ...मानव-मन...।

[दोनों गम्भीरता से एक दूसरी की तरफ़ देखती हैं।]

यवनिका-पतन

मुख्य दृश्य

स्थान—कृष्णवल्लभ के मकान में उसके सोने का कमरा

समय—दोपहर

[कमरे के तीनों तरफ़ की दीवालें दिखती हैं जो आसमानी रंग से रंगी हुई हैं। पीछे की दीवाल में कई दरवाजे

और खिडकियाँ है, जिनमें से उसके बाहर की बालकनी का कुछ भाग और बगीचे के दरख्तो का ऊपरी हिस्सा तथा आकाश दिखाई देता है, जिससे जान पडता है कि कमरा दुमजिले पर है। दाहिनी तरफ की दीवाल में दो दरवाजे और एक खिडकी है। इनमें से एक दरवाजा खुला हुआ है। इससे स्नानागार का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। बाईं ओर की दीवाल में भी दो दरवाजे और एक खिडकी है। इनमें से भी एक ही दरवाजा खुला है, जिससे नीचे जाने के जीने का कुछ भाग दिखता है। दीवाल पर श्रीनाथ जी, यमुना जी, और श्रीकृष्ण की लीलाओ के कई चित्र लगे है। कमरे की छत से बिजली की बत्तियाँ और एक सीलिंग फैन झूल रहे हैं। जमीन पर कालीन बिछा है, जिसके बीचो बीच चाँदी के पायों का एक पलग बिछा है। पलग के पास ही एक टेबिल रखी है। जिस पर दवा की शीशियाँ, थरमामीटर, एक टाइमपीस घडी, और नोट बुक इत्यादि रखी हैं। पलग के आसपास कुछ कुर्सियाँ और कुछ टेबिलें और रखी है। पलग पर कृष्णवल्लभ रुग्ण अवस्था में लेटा है। उसकी उम्र क़रीब ३० वर्ष की है। वह साधारण ऊँचाई और गोरे रग का व्यक्ति है, पर बीमारी के कारण अत्यन्त कृश हो गया है। मुख पर पीलापन और आँखो के चारो तरफ कालिमा आ गई है। सिर के बाल अग्रेजी ढग से कटे है और दाढ़ी मूँछ मुडी हुई है। वह गले तक एक ऊनी शाल

ओढ़े हुए है। उसीके नजदीक की एक कुर्सी पर पद्मा बैठी हुई है। पद्मा की वेष-भूषा एकदम सादी हो गई है। मस्तक की टिकली और उसके नीचे का चरणामृत उसी तरह लगा है जैसा उपक्रम में था। उसके मुख पर शोक और चिन्ता का साम्राज्य छाया हुआ है।]

कृष्णवल्लभ—(खाँसकर) दो वर्ष हो गये न, प्रिये? दो वर्ष पहले की इसी महीने की इसी तारीख को पहले पहल बुखार आया था।

पद्मा—हाँ, प्राणनाथ, दो वर्ष हो गये।

कृष्णवल्लभ—बृजमोहन दो वर्ष से कुछ ही ज़्यादा तो बीमार रहा?

पद्मा—आप न जाने क्या क्या सोचा करते हैं।

कृष्णवल्लभ—(फिर खाँसते हुए) क्यों, प्यारी, यह कैसे न सोचूँ? जो क्षय उसे था वही मुझे है, और वहाँ से लौटने के थोड़े दिन बाद ही हो भी गया।

पद्मा—इससे क्या होता है, क्या इस बीमारी के रोगी अच्छे नहीं होते?

कृष्णवल्लभ—बृजमोहन तो नहीं हुआ और मैं भी नहीं हो रहा हूँ।

पद्मा—आप हो जायँगे।

कृष्णवल्लभ—अभी भी तुम्हें आशा है? प्रिये, आशा की जगह न होते हुए भी कई दफ़ा मनुष्य आशा को मन

में ठूंसने का बलात्कार करता है। इस तरह की आशा अपने आपको धोखा देने की कोशिश करना है। यह झूठी आशा है, अस्वाभाविक आशा है।

पद्मा—(ज़ोर से) क्या कहते हैं, नाथ, क्या कहते हैं, मुझे आशा नही विश्वास, पक्का विश्वास है, कि आप अच्छे हो जायेंगे।

कृष्णवल्लभ—(पद्मा की तरफ करवट लेकर खांसते हुए) और तो अच्छे होने के कोई आसार नही है, हां तुम्हारी तपस्या मुझे अच्छा कर दे तो दूसरी बात है।

[पद्मा कोई उत्तर नहीं देती। उसकी आंखो में आंसू भर आते हैं।]

कृष्णवल्लभ—प्यारी, तुम मानवी नही देवी हो। इन दो सालो में तुमने मेरे लिये क्या नही किया, न पेट भर खाया, न नीद भर सोईं, पूजा, पाठ, जप, दर्शन तक छोड दिये। चौवीसो घटे मेरे पलग के पास। कहाँ कहाँ ले जाकर मेरी आब-हवा बदलवाई। दो वर्ष के इस जीवन मे किसी प्रकार का भी, कोई भी, सुख किसे कहते है वह तुम नही जानती।

पद्मा—(आंखो में आंसू भर कर) आपके अच्छे होते ही मेरे सारे सुख दूने होकर लौट आयेगे।

कृष्णवल्लभ—(इकटक पद्मा की ओर देखते हुए) और, प्रिये, और, प्रिये, अगर मैं अच्छा न हुआ तो ?

पद्मा—यह कल्पना करने की भी बात नही है।

[कृष्णवल्लभ और पद्मा कुछ देर चुप रहते हैं। निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—(अपने दुबले हाथ ऊनी चादर से बाहर निकालकर पद्मा का हाथ अपने हाथ में लेते हुए) प्राण-प्यारी, यह जानते हुए भी कि दुनिया में सबसे निश्चित बात मरना है, कोई मरना नही चाहता। मैं भी मृत्यु का आह्वान नही कर रहा हूँ। मैं जीना चाहता हूँ। तुम्हारे साथ वे सब सुख भोगने का इच्छुक हूँ जो दो वर्ष पहले प्राप्त थे। (खाँसने के कारण चुप हो जाता है। कुछ ठहर कर) सावन की उठती हुई घटाएँ और उनमें चमकती हुई बिजली, उन घटाओ का गर्जन और मन्द मन्द बरसती हुई फुहार, उसमें पपीहे की पीहू और मोर का केका तथा उस वायु-मण्डल में तुम्हारे साथ झूलते हुए झूले की मुझे अब जितनी याद आती है उतनी स्वस्थ दशा में कभी नही आती थी। (खाँसी के कारण फिर चुप हो जाता है। कुछ ठहर कर) बसन्त में खिले हुए फूलो की रग बिरगी क्यारियाँ, उनके दर्शन और उनकी सुगन्ध, मन्थर गति से चलती हुई मलयानिल और कोकिल की कुहू और उस वातावरण में हम दोनो की अठखेलियाँ, तथा गुलाल और अबीर की उड़ान का अब जितना स्मरण आता है उतना जब मैं अच्छा था तब मुझे न आता था। (खाँसते खाँसते

फिर रुक जाता है। कुछ ठहर कर) प्राणेश्वरी, मैं वे सारे सुख, सारे आनन्द फिर भोगना चाहता हूँ, लेकिन लेकिन प्रिये, (चुप हो जाता है)

पद्मा—(आंखें पोंछते हुए) लेकिन कुछ नहीं, हृदयेश्वर, आपके अच्छे होते ही हम वे सुख फिर भोगेंगे।

[कृष्णवल्लभ कोई उत्तर नहीं देता। थकावट के कारण पद्मा का हाथ छोड़कर आंखें बन्द कर लेता है।]

पद्मा—(खड़े होकर) क्यों, थकावट मालूम होती है?

कृष्णवल्लभ—यों ही थोड़ी सी।

पद्मा—मैंने कई दफा कहा आप ज्यादा न बोला करें।

कृष्णवल्लभ—तुमसे बोलकर, पुराने सुखों की याद कर, जो थोडा सा आनन्द मिल जाता है, उसे भी खो दूं?

[पद्मा कोई जवाब नहीं देती। कृष्णवल्लभ भी कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, एक बात जानती हो?

पद्मा—क्या, नाथ?

कृष्णवल्लभ—मेरे मन में जब जब यह उठता है कि मैं अच्छा न होऊँगा तब तब मेरे सामने एक चित्र खिंच जाता है।

पद्मा—आपके मन में ऐसी बात ही नहीं उठनी चाहिये।

कृष्णवल्लभ—उसे न मैं रोक सकता हूं और न तुम। (खांसता है। कुछ रुककर) मैं तुमसे एक प्रार्थना करता हूँ।

पद्मा—प्रार्थना ? प्राणेश्वर, आप हमेशा आज्ञा दे सकते हैं।

कृष्णवल्लभ—पर तुम मानती कहाँ हो ?

पद्मा—मैं आपकी आज्ञा नहीं मानती ?

कृष्णवल्लभ—और सब बातों में मानती हो, पर एक मामले में नहीं।

पद्मा—किस में ?

कृष्णवल्लभ—मेरे हृदय में जो कुछ उठता है उसे नहीं सुनती। हमेशा मेरी बात पूरी होने के पहले मुझे रोक देती हो। नतीजा यह निकलता है कि कह सुन कर मन की निकाल लेने से जो शान्ति मिलती है उससे भी मैं वञ्चित रह जाता हूँ।

पद्मा—तो आपकी वाहियात बातें भी सुना करूँ, उन बातों के बीच में भी आपको न रोकूँ ?

कृष्णवल्लभ—प्रिये, तुम अनुमान नहीं कर सकती, बीमार की कल्पनाओं का, तुम अनुभव नहीं कर सकती उस शान्ति का जो उसे उन कल्पनाओं को अपने सबसे बड़े प्रेमी, अपने सर्वस्व के सामने व्यक्त करने में मिलती है।

पद्मा—(लम्बी साँस लेकर) अच्छी बात है हृदय पर पत्थर रखकर जो कुछ आप कहेंगे अब सब कुछ सुन लिया करूँगी।

कृष्णवल्लभ—(कुछ ठहर कर) मैं तुम से कह रहा था

कि जब जब मेरे मन में यह उठता है कि मैं अच्छा न होऊँगा तब तब मेरे सामने एक चित्र खिंच जाता है। जानती हो किसका ?

पद्मा—बृजमोहन जी का होगा।

कृष्णवल्लभ—नही।

पद्मा—तब ?

कृष्णवल्लभ—भाभी का।

पद्मा—(उत्तेजित होकर) उस कुलटा का, उस पापिनी का, जिसने उनकी बीमारी में भी अपने गुलछर्रे नही छोड़े, जिसने उनके मरते ही दूसरी शादी करने में देर न की ?

कृष्णवल्लभ—प्रिये, भाभी न कुलटा थी और न पापिनी।

पद्मा—उससे बडी कुलटा और उससे बडी पापिनी न मैंने देखी और न सुनी है।

कृष्णवल्लभ—पहले मैं भी ऐसा समझता था पर अब नही समझता।

पद्मा—तो अब आप उसे बडी साध्वी, बडी धर्मात्मा समझते है ?

कृष्णवल्लभ—कुलटा और पापिनी तो नही समझता। (खांसता है। कुछ रुककर) एक बात और कहूँ ?

पद्मा—सब कुछ सुनने का तो मैंने वचन दे ही दिया है।

कृष्णवल्लभ—अगर तुम वैसी होती तो मुझे आज अपनी बीमारी का इतना दुख न होता।

पद्मा—(आँखो में आँसू भर कर) नाथ, आप यह क्या कह रहे है ? क्या कह रहे है ?

[कृष्णवल्लभ कोई उत्तर न देकर खाँसने लगता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, कभी कभी मुझे अपने से ज्यादा तुम्हारी चिन्ता हो जाती है। जब जब मेरे मन में उठता है कि मै अच्छा न होऊँगा, तब तब मेरे जीने की इच्छा तो और प्रबल हो ही जाती है, तुम्हारे साथ भोगे हुए सुख भी याद आने लगते है, और उन्हें फिर से भोगने के लिये भी मै अधीर हो उठता हूँ, तुम्हें छोडकर जाना पडेगा शायद इसलिये जाने का मुझे इतना दुःख होता है, पर इन सब बातो के सिवा जिस चीज़ से मै सबसे ज्यादा तलमला उठता हूँ, वह है तुम्हारी इस वक्त की अवस्था, मेरे बाद तुम्हारा क्या होगा, इसकी कल्पना। काश तुम भी भाभी के समान हो जाती तो मै इस फ़िक्र से तो

[कृष्णवल्लभ को खाँसी का जोर से एटैक होता है। खाँसते खाँसते वह बैठ जाता है। पद्मा घबडाकर उसकी पीठ सुहलाती है। कुछ देर में उसकी खाँसी रुकती है और वह एकदम थककर लेट जाता है तथा आँखें बन्द कर लेता है। जीने से चढ़कर स्वच्छ वस्त्रो में एक मुनीम का प्रवेश।]

मुनीम—श्रीनाथ द्वारे के समाधानी वहाँ के छप्पन भोग

का निमत्रण और श्रीनाथ जी का वीडा लेकर पधारे है। यही सेवा में आना चाहते है।

कृष्णवल्लभ—(धीरे धीरे) मेरे वडे भाग्य। ऐसे वक्त श्रीनाथ जी का वीडा। उन्हें फौरन ले आइये, मुनीम जी।

मुनीम—जैसी आज्ञा। (प्रस्थान)

कृष्णवल्लभ—(धीरे धीरे) श्रीनाथ द्वारे में छप्पन भोग है और मेरी वदकिस्मती तो देखो, मुझे ही दर्शन न होगे इतना ही नही, तुम भी न जा सकोगी।

[मुनीम के साथ समाधानी का प्रवेश। समाधानी करीव ५० वर्ष का ठिगना और मोटा आदमी है। शरीर पर लम्बी वगलवन्डी पहने है। सिर पर उदयपुरी पाग बांधे है और गले में दुपट्टा डाले है। उसके हाथो में एक लिफाफा और वल्लभकुली वीडा है। कृष्णवल्लभ उठने का प्रयत्न करता है। पद्मा उसे सहारा देकर उठाती और पीछे तकिया लगाकर वैठाती है। वह समाधानी के हाथ जोडता है और खडे होकर पद्मा भी।]

समाधानी—(नजदीक आते हुए) आयुष्मान, श्रीमान। सौभाग्य अचल होय, श्रीमती।

[नजदीक पहुँचकर समाधानी अपने हाथ का लिफाफा और वीडा कृष्णवल्लभ के हाथो में देता है। कृष्णवल्लभ उन्हें सिर व आंखो से लगाकर हृदय से लगाता है और फिर टेविल पर रख देता है। सव लोग कुर्सियो पर वैठते है।]

समाधानी—श्रीमान की अस्वस्था के समाचार सूं महाराज श्री कूं अत्यन्त खेद भयो। मो कूं या हेतु पठयो है कि श्रीमान कूं आशीर्वाद सहित छप्पन भोग को निमत्रण देऊँ और निवेदन करूँ कि श्रीनाथ जी आगे सुधि करत है।

कृष्णवल्लभ—महाराज श्री के अनुग्रह के लिये कृतज्ञता के मेरे पास शब्द नही है, समाधानी जी। मुझ से तो उस घर के अनगिनती वैष्णव है और इतने पर भी महाराज श्री की मेरे पर यह कृपा! (खाँसता है। कुछ रुककर) समाधानी जी, महाराज श्री की इस अनुकम्पा से मुझे रोमाच हो रहा है।

समाधानी—आपके से अगणित वैष्णव! क्या कहे है, श्रीमान? आपसे तो आप ही है।

कृष्णवल्लभ—(आंखो में आँसू भरकर) कैसी मेरी वद-किस्मती कि जिस छप्पन भोग के दर्शन की अभिलाषा वर्षों से थी उसके मौके पर मेरा यह हाल है।

समाधानी—श्रीनाथ जी आपको शीघ्र स्वस्थ करिहै। श्रीमान न पधार सकें तो श्रीमती जी।

कृष्णवल्लभ—(पद्मा की तरफ देखकर) ये हाँ, ये ज़रूर जा सकती है। और अगर ये जायें तो मुझे तो उससे जितनी खुशी होगी उतनी किसी दूसरी चीज़ से हो नही सकती। (कुछ खाँसकर) छप्पन भोग का क्या कार्य-क्रम है, समाधानी जी?

समाधानी—पहले वर्ष भर के उत्सवन के मनोरथ होयँगे और अन्त में प्रभु छप्पन भोग आरोगेंगे। (पद्मा से) श्रीमती जी, आप अवश्य पधारें। महाराज श्री ने आज्ञा करी है कि श्रीमान न पधार सकें तो आपके पधारवे सूं महाराज श्री कूं परम हर्ष होयगो। आप पधारकर श्रीमान के स्वस्थ होयवे की प्रभु के सन्निधान में प्रार्थना करें। श्रीनाथ जी श्रीमान कूं शीघ्र ही स्वास्थ्य प्रदान करहिंगे।

[पद्मा कोई जवाब नहीं देती। कृष्णवल्लभ पद्मा की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—(मुनीम से) मुनीम जी, समाधानी जी थके मांदे आये हैं। आपको अतिथि-आलय में अच्छी तरह ठहराइए। महाराज की आज्ञा पर हम लोग विचार करेंगे। (खांसता है)

मुनीम—जैसी आज्ञा।

[मुनीम और समाधानी उठते हैं।]

कृष्णवल्लभ—आज शाम को फिर दर्शन देने की कृपा कीजियेगा।

समाधानी—जैसी आज्ञा, श्रीमान।

[कृष्णवल्लभ और पद्मा हाथ जोड़ते हैं। समाधानी हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है। मुनीम और समाधानी का प्रस्थान। कृष्णवल्लभ खांसता है और लेटने लगता है। पद्मा उठकर टिकने के तकिये हटा उसे सहारा देकर

लेटाती और फिर कुर्सी पर बैठती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये !

पद्मा—प्राणनाथ !

कृष्णवल्लभ—तुम्हारी जाने की इच्छा है ?

पद्मा—आपको इस हालत में छोडकर ?

कृष्णवल्लभ—बहुत दिन का काम तो है नही।

पद्मा—लेकिन मै तो एक मिनिट के लिये भी आपको नही छोड सकती।

कृष्णवल्लभ—प्राणप्यारी, अर्धकुम्भ पर जब हम हरिद्वार न जा सके थे तब हमने कुम्भ पर जाने का निश्चय किया था। कुम्भ के मौक़े पर ही मै बीमार पडा। (खाँसता है। कुछ ठहर कर) तुम्हें बहुत समझाया तुम नही गईं। अब श्रीनाथ जी के छप्पन भोग का उत्सव है। हर दफा ऐसे मौके नही आते।

पद्मा—लेकिन, प्राणनाथ, मै आपको कैसे छोड सकती हूँ ?

कृष्णवल्लभ—डाक्टर दोनो वक्त आते है, तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में नर्स का इन्तज़ाम हो जायगा। श्रीनाथ जी का छप्पन भोग है, प्राणप्यारी, महाराज श्री ने कृपा कर समाधानी के हाथ निमन्त्रण भेजा है, श्रीनाथ जी ने सुधि ली है, महाराज श्री ने आज्ञा दी है।

[पद्मा कोई उत्तर नहीं देती। कृष्णवल्लभ खाँसता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—पन्द्रह बीस दिन से ज्यादा नही लगेंगे, प्रिये।

[पद्मा फिर भी कोई उत्तर नहीं देती। कृष्णवल्लभ पद्मा की तरफ देखता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, मेरी एक प्रार्थना मानोगी?

पद्मा—फिर वही बात, नाथ? प्रार्थना? आप आज्ञा दें।

कृष्णवल्लभ—(खाँसकर) तो मैं आज्ञा देता हूँ, प्राण-प्यारी, तुम जाओ, श्रीनाथ द्वारे जरूर जाओ, जरूर।

[पद्मा कोई जवाब नहीं देती। उसकी आँखो में आँसू भर आते हैं।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, श्रीनाथ जी के सन्निधान में मेरे स्वस्थ होने के लिये, अपने सौभाग्य के लिये, प्रार्थना प्रार्थना करना, प्राणप्यारी। (आँसू भर आते हैं।)

[पद्मा रो पडती है। कृष्णवल्लभ को फिर जोर से खाँसी का एटैक होता है।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—कृष्णवल्लभ के मकान का बरामदा

समय—सन्ध्या

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम में था। उदय होते हुए सूर्य के स्थान पर डूबते हुए सूर्य की किरणें बाहर के उद्यान को रंग रही हैं। एक तरफ पद्मा के दो सूट केस, होल्ड ऑल, टिफिन कैरियर, सुराही इत्यादि सामान बँधा हुआ रखा है। पद्मा अपने सामान को देख रही है। उसने फिर से रेशमी साड़ी, ब्लाउज़, रत्न जटित आभूषण धारण कर लिये हैं। उसका मुख प्रसन्न तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन उसपर उस तरह का शोक और चिन्ता का साम्राज्य नहीं है, जैसा मुख्य दृश्य में था। भविष्य के सुख की एक प्रकार की उत्कण्ठा उसके मुख पर दीख रही है। भारती का प्रवेश। वह वैसी ही दिखती है जैसे उपक्रम में थी।]

पद्मा—(भारती के आने की आहट पाकर उस तरफ देख तथा भारती को आते हुए देखकर उसी तरफ बढ़ते हुए) ओ, भारती बहन, आओ, बैठो, बहन।

[भारती और पद्मा दोनो कुर्सियो पर बैठ जाती है।]

भारती—श्रीनाथ द्वारे जा रही हो, बहन?

पद्मा—(दाहिनी तरफ से बगीचे की ओर देखते हुए) हाँ, वहाँ छप्पन भोग का उत्सव है, वे मुझे भेज रहे हैं।

भारती—वे तुम्हें भजकर बिलकुल ठीक काम कर रहे हैं और तुम जाकर भी सर्वथा उचित बात कर रही हो।

पद्मा—(भारती की तरफ देखकर) ऐसा ?

भारती—बिलकुल। छप्पन भोग के अवसर पर तो वल्लभकुल सम्प्रदाय में वर्ष भर के सभी उत्सवो के मनोरथ होते है न ?

पद्मा—हाँ।

भारती—तुम्हें और कृष्णवल्लभ जी को वर्षा और वसत बहुत प्रिय थे। श्रीनाथ द्वारे में सावन का हिण्डोलोत्सव, वसन्त का फूलडोल, और भी अनेक उत्सवो के दर्शन, नित्य-प्रति होने वाले रास और गायन आदि से दृश्येन्द्रिय और श्रवणेन्द्रिय को तृप्ति मिलेगी। महाप्रसाद से जिह्वा को शान्ति प्राप्त होगी। अधिकाश इन्द्रियाँ सन्तुष्ट हो जांयगी। हर तरह से मन बहलेगा। इहलोक और परलोक दोनो सुधरेंगे।

पद्मा—(भर्राये हुए स्वर में) बहन बहन

भारती—बहन, बरदाश्त करने की भी हद होती है। सहन-शक्ति सीमा-रहित नही है। बीमार के साथ बिना किसी बीमारी के कोई बहुत दिन तक बीमार से भी बदतर हालत में नही रह सकता। मृत के साथ जीवित अपने को मृत नही समझ सकता। आदर्श

की बात दूसरी है। बहन, मानव मानव-मन
यह मानव-मन

यवनिका-पतन

समाप्त

मैत्री

पात्र, स्थान

पात्र

निर्म्मलचन्द्र

विनयमोहन

शान्तिप्रकाश

स्थान—एक नगर

मैत्री

उपक्रम

स्थान—निर्म्मलचन्द्र के मकान का वैठकखाना

समय—प्रात काल

[बैठकखाने के तीन तरफ की दीवालें दिखती हैं, जो सफेद कलई से पुती है। पीछे की दीवाल में तीन खिडकियाँ है, जो खुली हुई है। इनसे बाहर के छोटे से बगीचे का कुछ हिस्सा दिखाई देता है, जो डूबते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों से रग रहा है। दोनो ओर की दीवालो के सिरे पर एक एक दरवाजा है। बाँई तरफ की दीवाल का दरवाजा एक दूसरे कमरे में खुला है, जिससे उसका कुछ भाग दिखाई देता है। इस कमरे में एक पलग तथा कुछ कुर्सियाँ, कपडे टाँगने की खूँटियों का स्टैन्ड आदि रखे है, जिससे यह कमरा सोने का कमरा जान पडता है। दाहनी तरफ की दीवाल का दरवाजा बाहर के बगीचे में खुला है जिससे बगीचे का कुछ हिस्सा दीख पडता है। बैठकखाना की जमीन पर दरी बिछी हुई है। उसके ऊपर पीछे की दीवाल से सटा हुआ एक तख़्त रखा है, जिस पर गद्दा बिछा है और उस पर

तकिये लगे है। बीच में एक गोल टेबिल है, जो टेबिल क्लाथ से ढकी है। इस टेबिल के चारो ओर बेत से बुनी हुई कुछ कुर्सियाँ रखी है। ठकखाने की सीलिंग से बिजली की दो बत्तियाँ झूल रही है। मकान और मकान की सजावट देखने से ज्ञान पडता है कि मकान किसी मध्यम श्रेणी के व्यक्ति का है। तखत पर निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन बैठे हुए है। दोनो की अवस्था करीब २४, २५ वर्ष की है। रग दोनो का गेहुआँ है। दोनो साधारण ऊँचाई और शरीर के व्यक्ति है। दोनो के बाल अग्रेजी ढग से कटे है। निर्म्मलचन्द्र के छोटी छोटी मूँछें है और विनयमोहन है क्लीनशेव्ड। दोनो सफेद कुरता और धोती पहने हुए है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय !

विनयमोहन—निर्म्मल !

निर्म्मलचन्द्र—क्यो, विनय, अब तक की अपनी जिन्दगी के लिये तो हम दोनो अग्रेजी के इस सेन्टेन्स का उपयोग कर सकते है न—'आवर लाइफ इज ए रैग्युलर फीस्ट।'

विनयमोहन—बेशक। और, निर्म्मल, इसका सबब ?

निर्म्मलचन्द्र—हमारा साथ।

विनयमोहन—और उसमें निर्म्मल की निर्म्मलता।

निर्म्मलचन्द्र—विनय की विनय नही ?

विनयमोहन—निर्म्मलता बिना विनय नही रह सकती।

निर्म्मलचन्द्र—विनय बिना निर्म्मलता नही।

विनयमोहन—(मुस्कराकर) निर्म्मल और विनय एक दूसरे के विना रह ही नही सकते ।

[दोनो हँस पडते हैं ।]

निर्म्मलचन्द्र—क्यो, विनय, ऐमी मैत्री कही देखी ?

विनयमोहन—देखी क्या, सुनी भी नही ।

निर्म्मलचन्द्र—सुनी क्या, कही के लिटरेचर तक में नही पढी ।

विनयमोहन—हम लोगो ने अपनी मैत्री की तारीफ कितनी दफा की होगी ?

निर्म्मलचन्द्र—हमें इससे जितना आनन्द मिलता है उतना किसी दूसरी वात से मिलता ही नही ।

विनयमोहन—गनीमत यही है कि किसी दूसरे के सामने हम यह नही करते ।

निर्म्मलचन्द्र—दूसरे कर देते है, इसलिये हमें इसकी जरूरत ही नही पडती ।

[दोनो फिर हँस पडते है ।]

विनयमोहन—तुम्हें यह चौवीसवाँ साल है न ?

निर्म्मलचन्द्र—जो तुम्हें है वही मुझे ।

विनयमोहन—और हमारे साथ को हो गये वीस वर्ष ।

निर्म्मलचन्द्र—चौवीस हो गये यह भी कह सकते हो ।

विनयमोहन—यो तो फिर सैकडो, हजारो, लाखो और करोडो कहने पडेंगे ।

निर्म्मलचन्द्र—हाँ, क्योकि अगणित जन्मो के साथ विना ऐसी मैत्री कब हो सकती है।

विनयमोहन—जो कुछ हो, जब से होश है, तभी से सग है।

निर्म्मलचन्द्र—और वह ऐसा वैसा नही, चौबीसो घन्टो का।

विनयमोहन—निर्म्मल, हमारी बालक्रीडा, हमारे स्कूल और कालेज के दिन, आज तक का सारा जीवन हमारी निधि है।

निर्म्मलचन्द्र—मैने कहा न 'आवर लाइफ इज़ ए रेग्युलर फीस्ट।'

विनयमोहन—और, निर्म्मल, जिन बातो की मुझमें कमी है, वे तुम में है और जिनकी तुम मे कमी है वे मुझ में है।

निर्म्मलचन्द्र—सच तो यह है कि हम दोनो मिलकर एक होता है।

विनयमोहन—अब तक हमारे जीवन का सुख, हमारी सफलता सब कुछ हमारे साथ, हमारी मैत्री के कारण है।

निर्म्मलचन्द्र—और हमारा भविष्य भी इसी पर निर्भर है।

विनयमोहन—हाँ, दुनिया के सघर्ष में तो अब हमारा प्रवेश होगा।

निर्म्मलचन्द्र—उस संघर्ष में अपने और अपने देश के उत्कर्ष के लिये यही मैत्री, यही साथ, हमारा ध्रुव नक्षत्र होगा।

[दोनों कुछ देर को चुप हो जाते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—एक बात जानते हो, विनय ?

विनयमोहन—क्या, निर्म्मल ?

निर्म्मलचन्द्र—चीन के महापुरुष कन्फ्यूशियस का एक उपदेश आज तक मेरे सामने रहा है और भविष्य में भी रहेगा।

विनयमोहन—कौनसा ?

निर्म्मलचन्द्र—'दिन में तीन बार अपने आपको जांच कर देखो कि तुमने अपने सच्चे मित्र के लिये सचाई और ईमानदारी से सब कुछ किया है या नही।'

विनयमोहन—और जानते हो मेरे सामने क्या रहा है और रहेगा ?

निर्म्मलचन्द्र—क्या ?

विनयमोहन—किसी देश की एक प्रावर्ब।

निर्म्मलचन्द्र—कौनसी ?

विनयमोहन—'जिस प्रकार अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिये ईंधन की जरूरत रहती है उसी तरह मैत्री रूपी अग्नि को जीवित रखने के लिये मित्र के प्रति त्याग रूपी आहुति की।'

निर्म्मलचन्द्र--(विनयमोहन की तरफ एक टक देखते हुए गद गद स्वर से) विनय!

विनयमोहन--(उसी प्रकार एक टक निर्म्मलचन्द्र की ओर देखते हुए) निर्म्मल!

यवनिका-पतन

मुख्य दृश्य

स्थान--निर्म्मलचन्द्र के मकान का बैठकखाना

समय--सन्ध्या

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम में था। कमरे का सब सामान करीब करीब वैसा ही है। दीवालो पर कांग्रेस नेताओ के चित्र लग गये है। निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन तख़्त पर बैठे हुए है। अब दोनो खादी के कुरते और धोती पहने हुए है। दोनो की अवस्था कुछ बढ़ गई है, जो उनकी बढ़ी हुई मूँछो से मालूम होती है। दोनो के मुख पर अशान्ति दृष्टिगोचर होती है। निर्म्मलचन्द्र खिड़की से बाहर बगीचे की तरफ देख रहा है और विनयमोहन दाहनी ओर की दीवाल के दरवाजे से बाहर की तरफ। कुछ देर निस्तब्धता रहती है। कुछ देर बाद विनयमोहन खडे होकर दाहनी तरफ के दरवाजे की ओर जाता है। निर्म्मलचन्द्र विनयमोहन की

तरफ देखता है। विनयमोहन कुछ देर उस दरवाजे पर खडे खडे वाहर की तरफ देखता है फिर लौटकर अपने स्थान पर बैठ जाता है। निर्म्मलचन्द्र उसके लौटते ही उसकी तरफ से दृष्टि हटा कर फिर खिडकी से वाहर की ओर देखने लगता है।]

निर्म्मलचन्द्र—(वाहर की तरफ देखते हुए) क्यो, विनय, प्रतीक्षा का टाइम निकालने में इतनी मुश्किल पड रही है?

विनयमोहन—(दाहनी तरफ के दरवाजे की तरफ ही देखते हुए) नही, ऐसी तो कोई वात नही है।

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—(निर्म्मलचन्द्र की ओर दृष्टि घुमाकर) हम लोगो की वातचीत तो कभी खत्म ही न होती थी, आज हो गई क्या?

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ देखकर) हमारी वात कभी खत्म हो सकती है?

विनयमोहन—फिर चुप क्यों हो?

निर्म्मलचन्द्र—(फिर खिडकी से वगीचे की तरफ देखते हुए) और तुम तो वहुत वोल रहे हो?

[विनयमोहन कोई उत्तर न देकर फिर दाहनी तरफ की दीवाल के दरवाजे से वाहर की ओर देखने लगता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय, एक बात पूछूं ?

विनयमोहन—(निर्म्मलचन्द्र की तरफ देखते हुए) यह पूछने की जरूरत है ?

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की ओर दृष्टि घुमा) तुम इतने अधीर क्यो हो ?

विनयमोहन—मै अधीर हूँ ?

निर्म्मलचन्द्र—क्या मैं तुम्हें इतने वर्षों के बाद इतना भी नही पहचान पाया हूँ ?

विनयमोहन—और तुम वैसे ही हो, जैसे हमेशा रहते थे?

निर्म्मलचन्द्र—नही, मै भी वैसा नही हूँ, पर तुमसा अधीर भी नही।

विनयमोहन—तो हम दोनो ही जैसे थे वैसे नही है, यह तो निश्चित हो गया।

निर्म्मलचन्द्र—सच बात को मजूर करना ही चाहिये।

विनयमोहन—और इसका सबब ?

निर्म्मलचन्द्र—म्युनिस्पैलटी की प्रेसीडेन्टी का चुनाव, क्यो ?

[दोनो फिर चुप हो जाते है। कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—मानते हो न ?

विनयमोहन—तुमने कहा न, सच बात को मजूर करना ही चाहिए।

निर्म्मलचन्द्र—धन्यवाद।

विनयमोहन—मुझे धन्यवाद।

निर्म्मलचन्द्र—(कुछ मुस्कराकर) अच्छा, भाई, वापस लेता हूँ।

विनयमोहन—(मुस्कराकर) धन्यवाद।

निर्म्मलचन्द्र—(मुस्कराकर) बदला लेते हो! (कुछ रुक कर) खैर। (फिर कुछ रुककर) क्यो, विनय, तुम यह जानते हो कि या तो मै प्रेसीडेन्ट चुना जाऊँगा या तुम, फिर भी तुम इतने अधीर क्यो हो?

विनयमोहन—और तुम भी यह बात जानते हो, फिर तुम भी वैसे ही क्यो नही हो जैसे हमेशा रहते थे?

निर्म्मलचन्द्र—मैं? मै (कुछ रुककर विचार करते हुए) मै शायद इसलिये वैसा नही हूँ कि अगर मैं चुन गया और तुम न चुने गये तो तो तुम्हें तुम्हें किसी तरह की किसी तरह की ठेस ठेस तो नही पहुँचेगी।

विनयमोहन—तुम्हारे चुने जाने पर मुझे ठेस पहुँचेगी। निर्म्मल, तुम मेरे साथ अन्याय, घोर अन्याय, कर रहे हो।

निर्म्मलचन्द्र—हो सकता है। अच्छा अब तुम बताओ कि तुम इतने अधीर क्यो हो?

विनयमोहन—मैं? (कुछ विचार करते हुए) मैं भी शायद इसीलिये इतना अधीर हूँ कि कही मैं चुन लिया गया और

तुम न चुने गये तो तुम्हारे हृदय पर तो कोई चोट न लगेगी ?

निर्म्मलचन्द्र—तो तुम भी मेरे साथ उसी तरह का अन्याय कर रहे थे जैसा मै तुम्हारे साथ।

विनयमोहन—तो हम दोनो ने एक दूसरे के साथ अन्याय किया ?

निर्म्मलचन्द्र—घोर अन्याय !

विनयमोहन—इस पाप का प्रायश्चित्त ?

निर्म्मलचन्द्र—प्रायश्चित्त ? (कुछ विचारकर) यही प्रायश्चित्त है कि जो न चुना जाय वह यह सोचे कि जो चुना गया है, वह नही, पर यथार्थ में जो नही चुना गया है, वह चुना गया है।

विनयमोहन—(गद गद स्वर से) निर्म्मल, तुमने सच्चा प्रायश्चित्त बताया।

निर्म्मलचन्द्र—विनय, तुम में और मुझ में अभी भी कोई अन्तर रह गया है ?

विनयमोहन—कदापि नही।

निर्म्मलचन्द्र—हम दोनों एक प्राण दो देह है।

विनयमोहन—अवश्य।

निर्म्मलचन्द्र—ऐसी मैत्री कही देखी ?

विनयमोहन—देखी क्या सुनी भी नही।

निर्म्मलचन्द्र—सुनी क्या, कही के लिटरेचर तक में नही पढ़ी।

विनयमोहन—'आवर लाइफ इज़ ए रेग्युलर फीस्ट।'

निर्म्मलचन्द्र—आफ कोर्स, 'आवर लाइफ इज़ ए रेग्यु-लर फीस्ट।'

विनयमोहन—(एकटक निर्म्मलचन्द्र की ओर देखते हुए गद गद स्वर से) निर्म्मल!

निर्म्मलचन्द्र—(उसी तरह विनयमोहन की तरफ देखते हुए) विनय!

[शान्तिप्रकाश का दाहनी तरफ के दरवाजे से प्रवेश। शान्तिप्रकाश करीब ४० वर्ष का साँवले रग का कुछ ठिगना और मोटा आदमी है। वह खादी की काले रग की शेरवानी और खादी का सफेद चूडीदार पाजामा पहने है। सिर पर गान्धी टोपी और पैरो में फीतेदार शू हैं। उसे देखकर निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन दोनो खडे हो जाते हैं। दोनों के मुखो पर फिर से अशान्ति दिखाई देने लगती है। दोनों, दोनो हाथो से शान्तिप्रकाश का अभिवादन करते है। शान्तिप्रकाश भी हाथ जोडता है। और तीनों तख़त पर बैठते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—कहिये, पार्टी ने क्या निर्णय किया?

शान्तिप्रकाश—(मुस्कराते हुए) आप दोनो तो चले आये।

विनयमोहन—हाँ, हम लोगो का पर्सनल सवाल था। इसलिये हमने न ठहरना ही मुनासिब समझा।

शान्तिप्रकाश—ठीक ही था। (कुछ रुककर) आपको पार्टी का निर्णय सुनकर शायद ताज्जुब होगा।

निर्म्मलचन्द्र }
विनयमोहन } —(एक साथ ही अधीरता से)—कैसा ?

शान्तिप्रकाश—(मुस्कराकर) पार्टी ने निश्चय किया है कि चूँकि आप दोनो की सेवायें एक सी हैं, इसलिये पार्टी आप दोनो को समान दृष्टि से देखती है, और दोनो में से प्रेसीडेन्ट कौन हो, इसका निर्णय आप दोनो पर ही छोडती है।

निर्म्मलचन्द्र }
विनयमोहन } —(एक साथ ही) यह कैसे हो सकता है ?

शान्तिप्रकाश—क्यो, आप दोनो आपस में तय कर लें और एक नाम पार्टी के पास भेज दें। मैं तो समझता हूँ, बडी सरलता से निर्णय हो जायगा। आप दोनों को इसके निपटारा करने मे क्या दिक्कत हो सकती है ?

[निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन कुछ न कहकर एक दूसरे की तरफ देखते है और शान्तिप्रकाश कभी निर्म्मलचन्द्र की ओर तथा कभी विनयमोहन की तरफ। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

शान्तिप्रकाश—कल प्रात काल नौ बजे फिर पार्टी की मीटिंग है, आपका निर्णय पार्टी के पास उस वक्त तक पहुँच जाना चाहिए।

निर्म्मलचन्द्र—(कुछ विचारते हुए) लेकिन शान्तिप्रकाश जी (चुप हो जाता है।)

विनयमोहन—(कुछ विचारते हुए) हाँ, शान्तिप्रकाश जी (चुप हो जाता है।)

शान्तिप्रकाश—(खडे होते हुए) मुझे इस वक्त इजाजत दीजिए, जिससे आप दोनो को एकान्त में इस निर्णय करने के लिये समय मिल सके।

[निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन खडे हो जाते हैं। शान्तिप्रकाश दोनो का अभिवादन कर जाने लगता है। दोनो विना एक शब्द भी कहे उसे दरवाजे तक पहुँचाते और अभिवादन के साथ उसे रुख़सत कर धीरे धीरे वापस आ तख़्त पर बैठते है। दोनो में से एक, एक खिडकी से और दूसरा दूसरी खिडकी से बगीचे की तरफ देखने लगता है। कोई कुछ नहीं बोलता, परन्तु दोनो के मुखो से जान पडता है कि उनके हृदयो में तूफान का समुद्र लहरा रहा है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय!

[विनयमोहन चौंकसा पडता है मानो उसे किसी अपरिचित व्यक्ति ने सोते से जगाया हो।]

विनयमोहन—(भर्राये हुए स्वर में) हाँ, निर्म्मल।

निर्म्मलचन्द्र—अरे तुम तो चौंक पडे?

विनयमोहन—(उसी प्रकार के स्वर में) नही तो।

[दोनो फिर चुप हो जाते हैं। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—निर्म्मल !

[इस बार निर्म्मलचन्द्र चौंक पडता है, मानो उसे किसी ने डरा दिया हो।]

निर्म्मलचन्द्र—(भर्राये हुए स्वर में) हाँ, विनय।

विनयमोहन—इस बार तुम चौंक पडे, निर्म्मल।

निर्म्मलचन्द्र—(उसी स्वर में) ऐसा ?

विनयमोहन—अवश्य।

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ देखकर) देखो।

विनयमोहन—(थोडासा चौंकते हुए, निर्म्मलचन्द्र की ओर देख) कहो।

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त दबे हुए स्वर से) प्रेसीडेन्ट होना तुम मजूर करो।

विनयमोहन—मैं ? क्यो ? तुम क्यो नही ?

निर्म्मलचन्द्र—और मैं क्यो, तुम क्यो नही ?

[दोनो फिर चुप रह जाते हैं और खिडकियो से बाहर की तरफ देखने लगते हैं। फिर कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—(निर्म्मलचन्द्र की ओर देखकर) एक बात पूछूँ, निर्म्मल ?

निर्म्मलचन्द्र—यह पूछने की आवश्यकता है ?

विनयमोहन—यह पद तुमने मुझे इतने दबे हुए स्वर से क्यों ऑफर किया ?

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ़ दृष्टि घुमाकर अपने स्वाभाविक स्वर में बोलने का प्रयत्न करते हुए) दबे हुए स्वर से ?

विनयमोहन—क्या मैं इतनी सालो के बाद तुम्हारा स्वर भी नहीं पहचानता ?

[निर्म्मलचन्द्र कोई उत्तर नहीं देता। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—निर्म्मल, तुम्हे मेरा अधैर्य खला था। जब मैंने तुमसे कहा कि तुम भी वैसे नहीं हो जैसे थे, और उसका कारण पूछा, तब तुमने कहा कि तुम शायद इसलिये वैसे नही हो कि अगर तुम चुन लिये गये और मै न चुना गया तो मेरे मन पर ठेस न पहुँचे। क्या मैं पूछूँ कि मुझे प्रेसीडेन्टी ऑफ़र करते हुए तुम्हें इतना दुख क्यो हो रहा है ?

निर्म्मलचन्द्र—तुम्हें प्रेसीडेन्टी ऑफ़र करते हुए मुझे दुख हो रहा है ?

विनयमोहन—(कठोर स्वर से) तुम इस बात से इन्कार नही कर सकते।

निर्मलचन्द्र—(कुछ ठहर कर घृणा भरे स्वर से) तो क्या मैं भी पूछूं कि पार्टी ने किसे प्रेसीडेन्ट चुना, और तुम्हें

चुना या नही, यह जानने के लिये तुम इतने अधीर क्यो थे ?

विनयमोहन—(दृढ़ता से) मै क्यो अधीर था और क्यों नही, इसका फैसला हो चुका है, लेकिन तुम्हारे प्रस्ताव में क्यो दुख था, इसका निर्णय होना बाकी है।

[निर्म्मलचन्द्र कोई उत्तर नहीं देता और खिडकी से बाहर की तरफ देखने लगता है। विनयमोहन निर्म्मलचन्द्र की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ देखते हुए) मेरे ऑफर में क्यो दुख था, यह जानना चाहते हो ?

विनयमोहन—अवश्य।

निर्म्मलचन्द्र—(दृढ़ता से) इसलिये कि मेरे प्रेसीडेन्ट होने से तुम्हें दुख होता, इसलिये कि तुम प्रेसीडेन्ट होने के लिये प्राण दे रहे हो।

विनयमोहन—(क्रोध से) इसलिये नही, इसलिये कि मैं अगर प्रेसीडेन्ट हो गया तो तुम न हो पाओगे।

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त क्रोध से) विनय !

विनयमोहन—(और भी अधिक क्रोध से) निर्म्मल !

[दोनो एक साथ लम्बी सांस लेकर खिडकियों से बाहर देखने लगते है। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—(बाहर की तरफ ही देखते हुए) एक बात जानते हो ?

विनयमोहन—क्या ?

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त घृणा से) तुम में इतने दोष हैं कि तुमसे प्रेसीडेन्टी एक दिन न चलेगी।

विनयमोहन—(और भी अधिक घृणा से) और तुम्हारे दोषो की तो गिनती ही नही है। तुमसे तो वह एक क्षण नही चल सकती।

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त क्रोध से चिल्लाकर) बस, विनय, बहुत हुआ।

विनयमोहन—(और भी ज्यादा क्रोध से गरजकर) मैंने भी बहुत बर्दाश्त कर ली।

[दोनो फिर चुप हो जाते है। और लम्बी साँसें लेने लगते है।]

विनयमोहन—(एकाएक खडे होकर) अपने रूफ के अन्डर आपने मेरा काफी अपमान किया है। मैं अब आपसे इजाज़त चाहता हूँ।

[निर्म्मलचन्द्र कोई उत्तर नहीं देता और विनयमोहन जल्दी जल्दी दाहनी तरफ के दरवाजे से चला जाता है।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—निर्म्मलचन्द्र के मकान का बैठकखाना

समय—प्रात काल

[दृश्य वैसा ही है जैसा मुख्य दृश्य में था। निर्म्मलचन्द्र अकेला तख़त पर बैठा हुआ ग़ौर से एक चिट्ठी पढ़ रहा है। विनयमोहन का एक चिट्ठी हाथ में लिये हुए प्रवेश।]

विनयमोहन—निर्म्मल, मै तुमसे क्षमा माँगने आया हूँ।

निर्म्मलचन्द्र—(खड़े होकर) और मै तुमसे माफी माँगने आ रहा था, विनय।

[दोनों तख़त पर बैठ जाते हैं।]

विनयमोहन—(अपने हाथ की चिट्ठी निर्म्मलचन्द्र को देते हुए) इस चिट्ठी को पढ़ोगे?

निर्म्मलचन्द्र—(अपने हाथ की चिट्ठी विनयमोहन को देते हुए) और तुम इस चिट्ठी को देखोगे?

[विनयमोहन निर्म्मलचन्द्र की चिट्ठी ले लेता है और निर्म्मलचन्द्र विनयमोहन की। दोनों चिट्ठियो को पढ़ते हैं चिट्ठियों को पढ़ने के बाद एक साथ।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय!

विनयमोहन—निर्म्मल!

निर्म्मलचन्द्र—विनय, भगवान को साक्षी देकर कहता हूँ कि मैं प्रेसीडेन्ट नही होना चाहता, और जैसा मैंने पार्टी को अपनी चिट्ठी में लिखा है, मै हृदय से चाहता हूँ कि यह पद तुम्हें मिले।

विनयमोहन—और, निर्म्मल, मैं भी भगवान को साक्षी देकर कहता हूँ कि मै भी प्रेसीडेन्ट नही होना चाहता, और

जैसा मैने पार्टी को अपने पत्र मे लिखा है, मै अन्त करण से चाहता हूँ कि यह पद तुम सुशोभित करो ।

निर्म्मलचन्द्र—ऐसा कभी नही हो सकता ।

विनयमोहन—तो जो तुम चाहते हो वह भी कभी नही हो सकता ।

निर्म्मलचन्द्र—मेरा कहना नही मानोगे ?

विनयमोहन—और तुम मेरा कहना न मानोगे ?

निर्म्मलचन्द्र—जिद्द न करो ।

विनयमोहन—तुम भी हठ न करो ।

निर्म्मलचन्द्र—विनय !

विनयमोहन—निर्म्मल !

[दोनों चुप होकर एक दूसरे को देखते हैं ।]

निर्म्मलचन्द्र
विनयमोहन —(एक साथ) तब ?

[कुछ देर फिर दोनों चुप रहते हैं ।]

निर्म्मलचन्द्र
विनयमोहन —(एक साथ) तुम्हें मजूर करना ही होगा ।

[कुछ देर फिर दोनों चुप रहते है ।]

निर्म्मलचन्द्र—देखो, विनय, मै अपने सम्बन्ध को इस प्रेसीडेन्टशिप से कही बडी चीज समझता हूँ ।

विनयमोहन—और मैं यह प्रेसीडेन्टशिप तो दूर रही, भारतीय साम्राज्य की प्रेसीडेन्टी, और भारतीय साम्राज्य

की प्रेसीडेन्टी भी दूर रही, अगर सारे ससार का फैडरेशन वने और उसकी प्रेसीडेन्टी मिले तो, उससे भी अपनी मैत्री को वडी चीज़ समझता हूँ ।

निर्म्मलचन्द्र—क्षणिक आवेश की वात दूसरी है, मैं इसे जानता हूँ, विनय ।

विनयमोहन—जो तुमने कहा मै उसे दुहराता हूँ, निर्म्मल ।

निर्म्मलचन्द्र—इसीलिये जो कुछ कल हुआ उसे देखते हुए मै इस पद को कभी मजूर नही कर सकता ।

विनयमोहन—तुमने मेरे मुख के शब्द छीन लिये। और मैं कर सकता हूँ ?

[दोनों चुप रहते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय !

विनयमोहन—निर्म्मल !

[फिर दोनो चुप हो जाते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय, एक प्राण होते हुए भी हमारी हमारी दो देह अवश्य हैं ।

विनयमोहन—इसीलिये हम प्रेम का आनन्द भोग सकते हैं ।

निर्म्मलचन्द्र—और लोलुपता का दु ख भी ।

विनयमोहन—जो पद हमें लोलुपता के नज़दीक ले जा सकता है. . . .

निर्म्मलचन्द्र—जो हम में एक दूसरे से स्पर्द्धा, और स्पर्द्धा ही नही, ईर्षा की उत्पत्ति कर सकता है।

विनयमोहन—जो हमसे एक दूसरे के सामने झूठ बुलवा सकता है .

निर्म्मलचन्द्र—जो हमें एक दूसरे के लिये क्रोध पैदा करा सकता है

विनयमोहन—जो हम से एक दूसरे के लिये अपशब्द बुलवा सकता है

निर्म्मलचन्द्र—जो हमें एक दूसरे के दोष दिखाकर एक दूसरे के लिये यह कहला सकता है कि .

विनयमोहन—कि तुमसे प्रेसीडेन्टी एक दिन न चलेगी

निर्म्मलचन्द्र—एक क्षण न चलेगी

विनयमोहन—निर्म्मल, हमने एक दूसरे का उसके गुणो की अपेक्षा उसके दोषो के सबब अधिक प्यार किया है

निर्म्मलचन्द्र—और और वे ही दोष, जिस पर लोलुपता के कारण हमें एक दूसरे के प्रति घृणा की ओर अग्रसर कर सकते हैं, उस पद को

विनयमोहन
निर्म्मलचन्द्र } —(एक साथ) हम दोनो मजूर नही कर सकते।

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं।]

विनयमोहन—लिखो पार्टी को, दूसरी चिट्ठी।

निर्म्मलचन्द्र—सयुक्त, फौरन।

विनयमोहन—हम दोनो साधारण नागरिक रह कर भी अपना, समाज, देश और विश्व का उत्कर्ष कर सकते हैं।

निर्म्मलचन्द्र—और अपने प्रेम के द्वारा विश्व से प्रेम करना सीख उसकी सेवा कर सकते हैं।

विनयमोहन—(गद गद स्वर से निर्म्मलचन्द्र की ओर एक-टक देखते हुए) निर्म्मल!

निर्म्मलचन्द्र—(उसी तरह विनयमोहन को देखते हुए उसी स्वर से) विनय!

यवनिका-पतन

समाप्त